अनुराग सागर

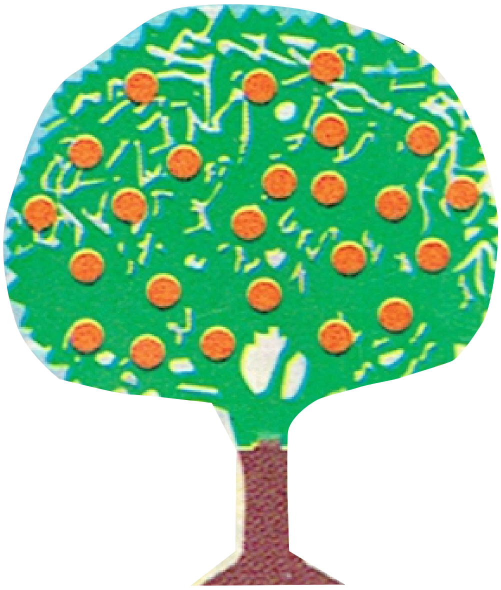

(आत्मन कोष)

सत्यपुरूष एक वृक्ष हैं, निरंझन उन के डाल।
तीन देव शाखें भई, पात फूल संसार।।

'वे नाम' सुरती धारा

Copies All Right reserved

'वे नाम' सुरती धाराः– आश्रम
15–गार्डन एवेन्यू तालाब तिल्लो, जम्मू
जम्मू व कश्मीर, भारत – 180002

अनुराग सागर

जो वस्तु 'वे नाम' सतगुरू परमहंस साहिब पास प्यारो।
साहिब सतपुरूष सूं पाई महान रे।
सतपुरूष की सुरति सूं आई प्यारो।
सुरति सूं पकड़ी जान रे।
साहिब जी सार सब्द, सुरत सब्द दो जान महान रे।।

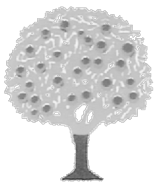

(आत्मन कोष)

'वे नाम' सुरती धारा

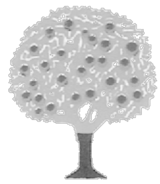

(आत्मन कोष)

वे नाम पास दो वस्तुऐं, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम।।

पँच सदी पहले साहिब कबीर ने, पाई सार दात सतपुरूष सूं।
सन् 2012 निजधाम से होकर, 'वे नाम' पाई दौ बार दात सतपुरूष सूं।।

सार सब्द और सुरत सब्द की दात, सतपुरूष सूं।
ब्रह्मण्ड में ऐसी कृपा संत पे देखी ना सुनी, सतपुरूष सूं।।

मिलो सेवादार, सत्तगुरू परमहँस 'वे नाम' सूं।
जिन पाई दौ बार दात, सत्तपुरूष साहिबन सूं।
जानो सहज मार्ग भृँगा मत्त, 'वे नाम' सेवादार सूं।
सत्त सत्त और सत्त बताऊँ, कुछ ना पाऊँ ना मांगूं आप सूं।।

साहिब सत्तपुरूष जी ने आज तक किसी भी प्रलयः काल में किसी भी संत सत्तगुरू परमहँस जी को दौ बार 'सार सब्द–सुरत दात' कभी भी प्रदान नहीं की, दौ बार सत्त सुरति दात साहिब सत्तपुरूष जी से सुरति द्वारा ग्रहण करने वाले एक मात्र संत सत्तगुरू ''वे नाम परमहँस जी'' वर्तमान काल में इस धरा पर विद्यमान हैं।

सतगुरू सतनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत ग्रंथों की सूची

क्र:	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022

अग़ामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1. अनुराग़ साग़र
2. साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें
3. साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम'

विषय सूची

क्रः	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	निज की खोज	1
2	सतपुरूष जी का पता	21
3	आत्मां नित्य है	23
4	सार–सब्द, सुरत–सब्द सतपुरूष कहाये	34
5	निर्गुण भक्ति (पंच मुद्राऐं)	36
6	सहज सतमार्ग के सतगुरू जी के गुण	40
7	छेः तन (तुरियातीत महिमां)	41
8	निज कर्मन दण्ड	42
9	जाग्रत सयंमी	47
10	ब्रह्मण्ड की यात्राओं का भेद	54
11	हित्त, अनहित पशु पक्षी भी जानत रे	57
12	शब्द की महिमां	64
13	सुरती खेल	68
14	'मै' (मन मान)	98
15	कौरा पत्र	109
16	पंच तत्व, रंग व स्वाद	149
17	मृत्यु के बाद का सफ़र	160
18	हंस लोक	199

''अनुराग़ साग़र''

'वे नाम सुरति धारा' सुरति संदेश रूपांतरण शब्दों में

प्यारी हंस आत्मांओ,

अति हर्ष का विषय है कि हम सभी हंसों (आत्मांओं) के प्यारे परमपिता ''साहिब सत्तपुरूष जी'' जिन के हम सुरति अंश हैं के आर्शीवाद और कृपा से मुझे आप सभी से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। अनंत काल युगों–युगों से पूर्व जब सृष्टि् रचने का भाव उनके सुरति पुण्झ में उपझा होगा, और फिर इसे कैसे अमल में लाया गया होगा, ऐसे अनगिनत भाव हम सभी के अंदर भी पनपते रहते हैं, सदियों से ये जिज्ञासा हमारे अंदर एक कौतूहल पैदा करती रही है कि ये सृष्टि् कैसे रची गई, क्युं रची गई और कौन इसके रचियता हैं अर्थात इस सृष्टि् सहित ब्रह्मण्ड रचना का मूल स्त्रोत्र क्या है ? जब कुछ भी नहीं था तो क्या था आदि आदि ? इस सब का भेद अगर कोई समूचे संसार को दे पाया है तो वह केवल और केवल एकमात्र संपूर्ण संत परमहंस 'साहिब कबीर जी' ही हुऐ हैं जिन्हें ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सर्वप्रथम अपनी सुरति ऊर्जा से ओत–प्रोत 'सत्त दात' देकर इस धरती पर जगत जीवों के कल्याण अर्थात एक औंकार कालपुरूष की कैद से मुक्त करके पूर्ण मोक्ष दिलाने और अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये इस त्रिलोकि संसार जगत में भेजा था।

उनके ईलावा इस समूचे जगत में जब से सृष्टि् बनी है इस दास ('वे नाम') के अतिरिक्त और कोई भी ऐसा नहीं है जिसे स्वयं ''साहिब सतपुरूष जी'' ने सुरति द्वारा सीधे 'सार नाम दात' दी हो और वो भी दौ–दौ बार । और यही भेद समूचे जगत के समक्ष प्रकट करने के लिये दास ''साहिब सतपुरूष जी'' के आदेश अनुसार 22 मार्च, 2012 से निरंतर साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान कर रहा है। एक बात सर्वदा ज्ञात रहे, सहज सत्त मार्ग के अनेकों संत सतगुरू इस धरा पर हुऐ जिन्होंने अपने प्रारम्भिक भक्ति काल में निरंकार भगवन की महिमां का गुणगान किया। परन्तु कुछ काल उपरांत सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरूओं से दीक्षा दात ग्रहण करने के उपरांत मोक्ष प्राप्त किया। इन महान संतों सतगुरूओं में प्रमुख साहिब रविदास जी, बाबा नानक जी, साहिब दादू दयाल जी, दरिया साहिब जी, साहिब तुलसीदास हाथरस जी, साहिब ब्रह्मानंद जी, साहिब पल्टु जी तथा इनके ईलावा भी अन्य कंई संतों ने सहज मार्ग पथ पर चल कर मोक्ष को प्राप्त किया। परन्तु एक बार मोक्ष प्राप्त कर लेने के उपरांत इनमें से कोई भी संत सतगुरू ''साहिब सतपुरूष जी'' की महिमां का गुणगान करने के लिये पुनः इस धरा पर नहीं भेजे गये। 'संत कबीर साहिब जी' के बाद छेः सदियों के उपरांत दास को ''सतपुरूष साहिब जी'' ने उनकी महिमां गुणगान व प्रायः लुप्त हो चुकी सत्त सत्ता की पुनः स्थापना के लिये इस धरा पर भेजा। सहज भक्ति मार्ग के पथ पर चल कर कैसे जीवात्मां इस मृत्युलोक संसार से मुक्त होकर अपने निजघर सतलोक वापिस जाये व त्रिलोकिनाथ कालपुरूष के मन रूपी मोह माया जाल

से छुटकारा पाये, इस पर अपने सुरति अमृत प्रवचनों के द्वारा 'वे नाम सुरती धारा' का प्रवाह बहे जा रहा है जो अभी भी निरंतर जारी है।

और इस प्रयास में अभी तक दास की सुरति द्वारा साहिब सतपुरूष महिमां और उनकी प्रीत से ओत–प्रोत कंई भजनों, काव्यों और अनगिनत दोहों से भरे ग्रंथ रचे जा चुके हैं और साथ ही साथ इन सब की महिमां यू–टयूब चैनल 'वे नाम सुरति धारा' व अन्य माध्यामों द्वारा भी गाई जा रही है जहां पर हज़ारों–हज़ारों प्रवचनों व गायन की श्रृंखला केवल और केवल 'सहज भक्ति मार्ग' पर चल कर 'सत्त का भेद' व सत्ता जो इस संसार में कहीं लुप्त सा ही हो गया था उसे फिर से दास द्वारा ''साहिब सतपुरूष जी'' स्थापित कर रहे हैं क्योंकि सत्त की सत्ता को कौन मिटा सकता है ! इस उपलक्ष्य में दास द्वारा जो दोहों के रूप में साहिब वाणी गाई और रची जा रही है उसका बड़ा सुन्दर वर्णन सभी ग्रंथों में 'वे नाम सुरति धारा' के प्रवाह में समूचे जगत को प्राप्त हो रहा है। ये दास खुद कुछ भी नहीं लिख रहा, जो कुछ भी लिखा व रचा जा रहा है वह ''मेरे साहिब सतपुरूष जी'' ही की कृपा से हो रहा है उन्हीं का तदरूप बन कर दास इस संसार को जगाने की चेष्टा मात्र कर रहा है, इसलिये मेरी वाणी मेरी ना होकर केवल और केवल हमारे प्यारे परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' की ही सुरति धारा है जो दोहों और प्रवचनों के रूप में मुझ 'दास' द्वारा जगत जीवों की ओर प्रवाहित हो रही है व कलमबद्ध हो रही है। यूं तो सुरति भेद सुरति द्वारा ही ग्रहण किये जा सकते हैं परन्तु जगत जीवों के कल्याण के लिये 'दास' ''साहिब सतपुरूष जी'' के सत्त सुरति अमृतमयी प्रवाह को शब्दों में रूपांतरण करके सभी जीवों के समकक्ष अर्पण कर रहा है ताकि उनकी चेतन सुरति से सभी जीव चेतना प्राप्त करके मोक्ष अर्थात अपने मूल सतलोक में जा समायें और इस आवागमण के चक्कर से सदा के लिये मुक्त हो जायें।

'सुरति और सार दात' के संदेश से भरपूर ये दोहों और भजनों से भरे ग्रंथ उसी भेद को उजागर कर रहे हैं जिस भेद को पाकर जिज्ञासुजन इस दुर्लभ मानस जीवन के एकमात्र लक्ष्य 'पूर्ण मोक्ष' को प्राप्त कर सकता है, और किस विधि से ये सब संभव हो पाता है आईये इस महान ग्रंथ **''अनुराग़ साग़र''** को आत्मसात करके इसके भावार्थ को समझें और प्रतिदिन इन दोहों के अंदर छिपे रहस्यों को समझ कर अपने जीवन में उतार कर इस दुर्लभ जीवन को सार्थक करें और निराकार काल भगवन से छूटकर अपने परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' के धाम हंसा निजघर अमरपुर सतलोक वापिस लौट चलें और अपने निज मूल **'सत्त'** में समा जायें।

सभी हंसात्माओं के मोक्ष हेतु प्रयासरत,

'वे नाम' परमहंस

–0–

अनुराग साग़र

प्रस्तावना

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि् रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही। इतनी ढेर सारी मान्यतांए, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों, शास्त्रों, उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्यमान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मांनंद जी, संत मीरांबाई जी और बाबा नानक जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मोक्ष दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक्ति अर्थात मोक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू परमहँसों की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहँस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब ''श्री वे नाम परमहँस जी'' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू परमहँस जी के चरणों में समर्पित किया है।

✍

संत 'वे नाम परमहँस जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू परमहँस जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मोक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

—0—

अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है। मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है ।आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

—0—

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

'' ना मैं कर्त्ता – ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया – सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं – साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें – उनकी मोज है
जो भी होता – सब अच्छा होत है
साहिब ही करन – करावनहार
हम तो केवल दासा – उनके सेवादार
वो ही तारनहार – करावे भव से पार
वे नाम भी तो – उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार – उन्हीं से कर लो प्यार''

—0—

'वे नाम' नाम दास का, सतपुरूष साहिबन का दास।
''वे नाम'' सब्द साहिबन दात, बांट रहा है 'वे नाम' दास।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात सूं चलो साहिबन द्वार।।

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

—0—

अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन परमहँस कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

चोथे राम (सतपुरूष जी)

1 प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना।।

2 सार नाम सूं बड़, तारे लाखों जीव।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले भव सागर तीर।
सतगुरू पास दात है आती, तारे तीन लोक सूं जीव।
आवागमन चक्र छूटे, पल में पावे पीव।।

3 सार नाम (सब्द) स्वाति बूंद सूं, जानों अति महान।
सीप स्वाति बूंद को, मोती करती।
सार नाम सूं सतपुरूष, करें आप समान।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम।।

4 साहिब (चौथे राम) व्यापक, हर वस्तु समाना।
बिन प्रेम, ना मिले प्रमाणा।
जब ही प्रेम, सुरति में जागे।
हर स्थान हर जीव में, इक वह ही लागे।।

—0—

संदेश

हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाषी।
यह है काल जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा।
सार सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरूष प्यारा।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरू का प्यारा।
तूं तो निजधाम सतलोक, बेग़मपुर का वासी था।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला।
काल जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चिस का पिंझरा, जहां पर पड़ा वश काल।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा।
मिल परमहंस सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेग़म पुर प्यारा।
ग्याहरवें द्वार अष्ट्म चक्र से, जब हों प्राण निकासा।
सतगुरू संग परमपुरूष के लोक, पल में जा समाता।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता।
हंस बन हंसों के संग संग, परमानंद पा जाता।
हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक

सतगुरू ''वे हूँ परमहँस जी''

'सुरति प्रवाह'

हे जीवात्म साथियो,

हम सब सतलोक से आये सतपुरूष जी के निज अंश हंसा हैं अर्थात सतपुरूष जी (परमपुरूष, साहिब जी) 'सत्त', सतलोक 'सत्त' और हम सब हंसा भी उन्हीं के अंश होने से हम सभी भी 'सत्त' का ही रूप हैं। चाहे कुछ काल के लिए ही सही परन्तु हम सब मोहनी माया में लिप्त हो कर निज रूप (हंसा अर्थात सत्त रूप) को भूलाऐ बैठे हैं। अंततः हम सब 'सत्त' से ही उपझे 'सत्त' रूप हैं और 'सत्त' में ही जा समाऐंगे। जग में विरोध किसका और कैसे कर सकते हैं, हम सब तो 'एक' (साहिब सतपुरूष जी, परमपुरूष जी, साहिब जी, परमपिता, निरलम्भ राम जी) से ही आये अर्थात मूलतः 'सत्त' से बिछड़े हम सब 'सत्त' ही हैं। माया में फंसा 'सत्त' रूप को भूला जीवात्मां साथी अगर कमज़ोर अवस्था (अहम व क्रौध वशिभूत) में है अर्थात माया ही में उलझा है उसका भी विरोध कैसा ? वो तो हम सब के स्नेह व प्रेम का पात्र है, घृणा का पात्र कैसे हो सकता है। घृणा और कटाक्ष से किसी को उद्विग्न तो किया जा सकता है परन्तु उसका रूपांतरण कदापि नहीं हो सकता। स्नेह और प्रेम से तो किसी का भी रूपांतरण किया जा सकता है। जगत के सभी प्राणी 'सत्त' रूप होने से स्नेह के पात्र हैं फिर चाहे वे किसी भी अवस्था के क्युं ना हों।

मूलतः सभी जीवात्म 'सत्त' रूप ही हैं। 'सत्त' सुरति प्रवाह के इस संग्रह में वर्णित भाव श्रृंखला **''वे हू परमहँस जी''** द्वारा सुरति से सभी जीवात्मांओं को उनके निज रूप अर्थात 'सत्त' रूप को जानने हेतु ही प्रस्तुत की गई है। यह संग्रह इस ब्रहांण्ड के सभी जीवात्मांओं के सहयोग से, सभी के उत्थान के लिए, सभी के सामूहिक प्रयासों द्वारा सभी जीवात्मांओ के लिए ही लिखा गया है। इसके रचने का श्रेय किसी एक को ना जा के सभी जीवात्मांओं को जाता है। अर्थात ये रचना 'सत्त' (साहिब सतपुरूष जी की महिमां) से ओत–प्रोत, केवल 'सत्त' (हंसात्माओं) के लिए, 'सत्त' (माया लिप्त जीवात्मां) रूप को जानने हेतु 'सत्त' (परमहंस सुरति प्रवाह) द्वारा ही रची गई।

यह सारी त्रिलोकि अंड–मंड–ब्रह्मण्ड, शरीर, मन, भौतिक व भीतरी संसार निरंकार की ही माया है। चाहे कितना भी जीव माया के इस क्रूर परन्तु मोहनी जाल में उलझा हुआ क्युं ना हो, फिर भी चन्द बड़भागी बिरले जन इस माया

जाल से मुक्त होने की चाह में **सहज सत्तमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरण में आ ही जाते हैं।** अब जीवात्म स्वयं मन–माया की लार ना तजे तो इस में भगवान निरंकार (आद्यशक्ति, देवी–देव व सभी ईष्ट्) का क्या दोष ? जैसे जीव भांति–भांति के भौज ग्रहण करता है तथा उस भौज से उत्पन्न ऊर्जा–अंश सारे शरीर को बलिष्ठ और क्रियाशील बनाते हैं, तथा अधिकांश शेष बचे व्यर्थ पदार्थों और द्रव्यों को शरीर त्याग कर देता है। ठीक वैसे ही **माया के विशालकाय रूप** में जीवात्मां भ्रमित ना हो के सत्त रूपी ऊर्जा की ओर चलने लगे तो यह सभी प्रकार की मन–माया को तजने के लिए सहज सत्त मार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरण में जीव पहुंच ही जाता है।

बिन सतगुरू कोई कुछ नांहि, सब कुछ कर्ता आप।
साधक के समर्पण से, केवल बनती बात।।

सहज मार्ग के प्रथम पूर्ण सतगुरू संत शिरोमणि कबीर साहिब जी की महिमां को संपूर्ण जगत समझ ही ना पाया। कबीर साहिब जी के अनमोल दोहों के अमृत–कौष से जो दोहे माया से ओत प्रोत थे उनको तो जगत ने भरपूर गुणगुनाया परन्तु सतलोक ज्ञान–सागर से भरे अमृतमयी दोहों को जगत समझ और जान ही ना पाया, तभी तो वह निज रूप तथा साहिब कबीर जी की महिमां को भी जान नहीं पाया।

शब्द ही सर्गुण शब्द ही निर्गुण, शब्द ही वेद ब्ख़ाना।
जो जन ईस भेद को जाने, उसका सतगुरू ठिकाना।।

सतगुरू महिमां जो जाने प्यारो, सच्चा साधक सोये।
जो जाने सो खो जाये प्यारो, सतगुरू पार लगाये।।

साहिब सतगुरू **''वे नाम परमहँस जी''** अपने सतगुरू जी की महिमां का गुणगान करते हुए यूं लिखते हैं :–

सतगुरू की महिमां क्या लिखूं, सब कर्ता वह आप।

वह ही सतपुरूष रूप पधारो, सब कुछ उनके हाथ।।

सतगुरू मिला तो सब मिला, खुले मोक्ष द्वार।
उनकी पूर्ण कृपा सूं, पायो साहिबन दीदार।।

साहिब सतगुरू **''वे हूँ परमहँस जी''** अनुसार ''मैं' तो सब का दास हूं मेरा नित्त काम संगत के लिए झाडू–पौचे करना, पानी भरना, संगत की धरियां बिछाना, उनकी चदद्रें धौना व उनकी आवभगत करना तथा सारी संगत की सेवा सबूरी करना है, मैं तो सतगुरू हूं ही नहीं, ये मानता हूं और सब की सेवा करना ही मेरा परम धर्म है, मैं ऐशों आराम करने के लिए इस धरा पर नहीं आया हूं, यहां तक की छोटी से छोटी चीज़ जैसे कि मैं तो फटे हुए पौचे भी सुई से सिल कर बारम्बार प्रयोग में लाता हूं तथा मेरे द्वारा प्रयोग में लाये हुऐ वे पौचे भी स्वच्छ व निर्मल रूप में दिखेंगे। मैं तो सब का दास ही हूं क्युंकि जगत के हर प्राणी में **''साहिब सतपुरूष जी''** का अंश सुरति रूप में विद्यमान है।

''वे हूँ परमहँस जी'' की वाणी अनुसार :–

संगत की सेवा ही मेरे साहिब सतपुरूष जी की सेवा है। साहिब सतपुरूष जी की सेवा के लिए मैनें अपना तन, मन व धन सभी कुछ त्यागा है तभी तो सतपुरूष जी दीन दयाल हुऐ और मुझ दास पर उन्होंने अति कृपा की कि मुझे अपने दास रूप में स्वीकारा। मेरे परमगुरू जी ने भी मुझ पे अति कृपा की है जिन्होंने अपनी शरण में मुझे केवल स्थान ही नहीं दिया अपितु अति कृपा करके सार–सब्द की अनमोल दात भी प्रदान की। उन्हीं के स्नेह व कृपा से बहुत अल्प अवधि में ही पूर्ण साहिब सतपुरूष जी को उन्हीं के रूप में पाया।

बलिहारी जाऊँ गुरू अपने, जिन रंग दिया अमर सुरति रंग।
मन माया तरंग मिटि, चढयो साहिबन सतगुरू सुरति रंग।।

साहिब जी आगे कहते हैं :– मैं सुबह शाम नित्त अपने सतगुरू सुरति में ही रहता हूं तथा साहिब सतपुरूष जी के दर्स सतगुरू रूप में पाता हूं। **''वे हूँ परमहँस जी''** हर पल परमगुरू जी का कौटि–कौटि धन्यवाद करते हुऐ कहते हैं कि ''दास'' आज जिस अवस्था में है वह सब मेरे सतगुरू के स्नेह और प्रेम से ही संभव हो पाया है।

सतगुरू बड़े साहिब से, मन में मत सोच विचार।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

साहिब सतगुरू दोनों खड़े, का कौ निवाऊँ शीष।
सतगुरू कृपा सूं साहिबन प्रकटे, ताके चरण धरूं मैं शीष।।

हे जगत जीव आत्माओं, बिन सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरणी जाये कोई भी जीव मोक्ष पथ की ओर अग्रसित हो ही नहीं सकता। हे जगत जीवो – सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरण में आओ, 'सत्त' रूपी पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की कृपा से निज 'सत्त' रूप को जानो और 'सत्त' (हँस) हो जाओ और पूर्ण 'सत्त' (सतपुरूष, परमपुरूष, सतलोक, निजधाम, बेग़मपुर) में जा समाओ। बिन पूर्ण 'सत्त' हुऐ मन–माया रूपी आवागमण नहीं मिटता।

नोट :–

हे जगत की जिज्ञासु जीवात्मांओ, सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की वाणी अनुसार ये उपरोक्त भाव आप सभी जीवात्मांओं के लिए और आप सभी जीवात्मांओं के द्वारा ही आपके सामूहिक प्रयासों से ही कलमबद्ध किये गये हैं अर्थात उपरोक्त कलमबद्ध भाव व विचार आप सभी जिज्ञासुओं के ही हैं और आप के लिए ही कलमबद्ध किये गये हैं और इसी श्रृंखला में आप का कोई निजी विचार अथ्वा कोई भी त्रुटि संज्ञान में आये तो आप अपने सुझावों से हम्हें अनुग्रहित करें।

—0—

भजन

समर्पण प्रेम सूं मोक्ष

प्रेम में खोना 'मै' को तुम अपनी, खोज को सुरति बना डालो।
खोजते खोजते मन मान को तज देना, सुरति को सतगुरू सब्द से चेतन बना देना।

1 परिणाम पल में मिलता है, खोज में पूरा खो ही जाना है।
सित्तम देखो खोज का खोजि में, मन को भूल ही जाना है।
प्रेम में खोना ....

2 'मै' के मिटते ही प्यारो, चेतन सुरति मन भाव हरती है।
मन मान की दीवार सुरति संग, सतगुरू चेतन सुरति का जोड़ हरती है।
प्रेम में खोना ....

3 संगीत वीणा बाहर मत जानो, बाहर होता तो तुम सुन पाते।
सच्चा संगीत चेतन सुरती सूं सुरति में, बिन ध्यान सुन नहीं पाते।
प्रेम में खोना ....

4 वीणा बांसुरी संगीत तुम ही में, निज को पहचान नहीं पाते।
बाहर का संगीत दौ कौढ़ी का, जो मन उत्तेजित कर विकार में डालता है।
प्रेम में खोना ....

5 ईक्कत्तर प्रकार का संगीत तुझमें ही, जे तुम निज की पहचान कर पाते।
पूर्ण सतगुरू चेतन सुरति प्रत्तीक्षा करती, तेरा सर भूल से भी झुक नहीं पाता।
प्रेम में खोना ....

6 पहचानो निज आत्म सुरति को, जो धारा तुझ में बहती है।
''वे नाम'' सब्द दात तुम पा लो, सतगुरू अमृत धारा चेतन कर जाती है।
प्रेम में खोना ....

7 सतगुरू दात पाने से, जीवन नैया पार हो जाती है।
प्रीत जगाती जो धारा है, निज भूलों की पहचान मिलती है।
प्रेम में खोना ....

8 स्वांसा उल्टि जो तुम कर लो, साहिबन संग मिलता है।
जो दुख चेष्ठा अंदर जाने से, आंसुओं की धारा बन बहते हैं।
प्रेम में खोना ....

9 प्यास में धैर्य ना खोना, आंसुओं की धारा लाती है।
प्यास जब सताती है, आंसुओं में वह ही बहती है।
प्रेम में खोना ....

10 प्यास खोज बड़ाती है, स्वांसा उल्टि करनी है।
अर्द और उर्द में जब स्वांसा, सुरति धार बनती है।
प्रेम में खोना ....

11 ईंगला पिंगला सुश्मिना सम होती है, स्वांसा सुरति अर्द से उर्द में चलती है।
आज्ञा चक्र में सुरति निरति हंसा बनती है, वही तो स्वांसा ज्योति बनती है।
प्रेम में खोना ....

12 प्यारे धैर्य ना खोना, अधैर्य में मांगें जगती हैं।
अशांत मन बाधा बनता है, अकर्मण चेतन सुरति सूं शांत करना है।
प्रेम में खोना ....

13 आंसुओं से गहरी पुकार कहां प्यारो, आंसू प्रार्थना में पुकार भरते हैं।
आंसुओं की धारा प्रेम बनती है, साहिबन चेतन सुरति धारा धार बनती है।
प्रेम में खोना ....

14 आंसुओं से गहरी पुकार कहां प्यारो, आंसू प्रार्थना में पुकार भरते हैं।
आंसुओं की धारा पुकार बनती है,पल पल चेतन सुरति संग साथ रहती है।
प्रेम में खोना ....

प्रेम में खोना 'मै' को तुम अपनी, खोज को सुरति बना डालो।
खोजते खोजते मन मान को तज देना, सुरति को सतगुरू सब्द से चेतन बना देना।

—0—

सतगुरू ''वे नाम परमहंस साहिब जी''
के श्री चरणों में सभी साधकों का शत शत प्रणाम !!!

ग्रंथ सारणी

नोट :– साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ 'साहिब जी के सफरनामें', 'अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर', गीता अमृत सार, 'वे नाम सुरति धारा' व अनुराग़ साग़र प्रमुख हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं और इसके साथ–साथ पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत मार्ग की भक्ति महिमां से भरपूर ग्रंथ 'अमर साग़र', 'परमहंस सुरति महिमां' और सुरति अमृत से ओत प्रोत 'साहिब सतगुरू परमहंस जी' द्वारा रचित भजनों की तीन पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी भाषा में भी एक अदभुत ग्रंथ ''मोक्ष का भेद **(Secret of Permanent Liberation)**'' पूर्वतः ही प्रकाशित कीये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य और भी ग्रंथों की रचना अग़ामी काल में शीघ्र ही की जानी हैं।

कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये तथा उनसे ''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित इन नवीन ग्रंथों को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

अनुराग साग़र

1 निज की खोज

1 तुम कोन हो प्यारे, आये कहां से और जाना कहां रे।
इतना सा भेद पा लिया तो, सब भेद पाया जाना रे।
साहिब जी : सुरति सूं सब भेद पाया जानो रे।।

2 बिन सतगुरू कृपा के प्यारो, प्रशणों में कोन कहां से आया रे।
निजघर वहां कहां प्यारो, जहां सच्चे पिता का वासा रे।
साहिब जी : सतगुरू बतावें सच्चे पिता का वासा रे।।

3 नाम हमारा 'वे नाम' मुक्तामणि, सत्यपुरूष आप ही भाखी।
सार सुरत सब्द दात प्यारो, हंसा हर पल सुरति में राखी।
साहिब जी : हंसा हर पल सुरति में राखी।।

4 ''वे नाम'' सब्द सो नाम हमारा, जो पावे सो उतरे पारा।
धन्य भाग ता हंसा के कहिये, सुरति धरे उतरे उस पारा।
साहिब जी : 'वे नाम' जानो नाम हमारा।।

5 ''वे नाम'' नाम सत्यपुरूष ने दीना, दुख दर्द हर एक सीस पर लीना।
सत्यपुरूष सतगुरू का प्यारो, 'वे नाम' में वासा है लीना।
साहिब जी : 'वे नाम' में वासा है लीना।।

क सौ चादर सुर नर मुणि ओढ़ि, ओढ़ के मैली कर दीनी चदरिया रे।
दास कबीर जत्न से ओढ़ि, जस की तस कर दीनी चदरिया रे।
साहिब जी : 'वे नाम' ने और उजली कर दिनी चदरिया रे

6 दास कबीर ने ओढ़ी चदरिया, जस की तस दर लीनी रे।
'वे हूं' ने ओढ़ी चदरिया, और उजली कर दीनी रे।
साहिब जी : उजली चदरिया मोक्ष पद दीन्ही रे।।

7 ’वे नाम’ सतगुरू पास (प्यारो) मैं, सार सुरत सब्द की दात।
सतपुरूष सुरति सूं आई, सुरति से पकड़ी दात।
साहिब जी : ’’वे नाम’’ सब्द में साहिबन वास।।

8 संत सतगुरू ’वे नाम’ जी, दासों के दास ले जान।
सहज मार्ग भृंग मता, सतगुरू कृपा सूं कर पहचान।
साहिब जी : कुछ मांगने से पाना मत जान।।

9 कोई ईक प्यारा संत सुजान, सतपुरूष सूं दात पाई जान।
’वे नाम’ सतगुरू साहिबन प्यारा, ’’वे नाम’’ सब्द दात पाई महान।
साहिब जी : जासु उर अनुराग़ बसत ले जान।।

10 अनुराग़ी ही सच्चा प्रेमी जान प्यारे, हर जीव को सुख देता ले जान।
अनुराग़ी मृग समान प्यारो, पल में शिकारी पास ले जान।
साहिब जी : नाद सुनी मग्न अवस्था पाई ले जान।।

11 भय गया मृत्यु का भाव गया प्यारो, तन तजने को तैयार ले जान।
अनुराग़ बिन जीव तरे नाहिं, प्रेमी की पहचान काम महान।
साहिब जी : नाद सुनि सुनि मृग का शीष तजना काम महान।।

12 मृग सा अनुराग़ी कोई कोई प्यारो, नाद सुनि सुनि मृत्यु को गले लगाता जान।
हृदय में कोई भय नाहिं प्यारो, शिकारी को अपना शीष दे देता ले जान।
साहिब जी : सच्चे अनुराग़ी की सच्ची पहचान ले जान।।

13 सति नारी सम्मान प्यारो, सच्चे अनुराग़ी को पहचान।
सब का मोह छोड़ प्यारो, प्रीयतम संग जल मरती ले जान।
साहिब जी : पति प्रेम को हृदय में बसाये जल मरती जान।।

14 जग जीवना चार दिन का प्यारो, एक ना साथी अंत का जान।
एक ना माने बात सति नारी, एक साथ मरती ले जान।
साहिब जी : दौ वर्ष के बच्चे को भी छोड़ जाती ले जान।।

15 स्वांस स्वांस में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द ईक पल भी भूला ना जान।
चित्त में चाह भी मन की प्यारो, निज की कर पहचान।
साहिब जी : हर नर मन तरंग जाल में भटका ले जान।।

16 हंसा महांसागर की प्यारो, तरंग सरिता बीज समान ले जान।
स्वयं के भीतर झांक के प्यारो, सुरति अनंत साग़र समाना ही प्यार महान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान ले जान।।

17 जग की हंसी खुशी प्यारो, चारों ओर बंसुरी की तान रे।
सतपुरूष बिन सतगुरू मिलता नहीं प्यारो, भेद सुरति सूं जान रे।
साहिब जी : साहिब जी वेदना वैराग़ प्रेम संग वासा जान रे।।

18 दास साधक चरणों में सिर रख कर, मांगे अवसर ''वे नाम'' दात देने को रे।
अहंकार की ऊँची चौटी पर प्यारो, हर एक अकेला बैठा तूं जान रे।
साहिब जी : विरह की आग में धुआं उठता तूं जान रे।।

19 किस बात का गर्व नर तूं करता, सारे का सारा खेल मन का जान रे।
अंधकार में डूबा रहता प्यारो, फिर सतगुरू सूं कैसे पावे दात रे।
साहिब जी : सतगुरू बिन एक ना होत पार रे।।

20 अहंकारी नर दिन रात प्यारो, अंधकार में डूबा रहता रे।
सतगुरू ओर कैसे पग़ धरे प्यारो, सतगुरू चरणन धूलि ना पाता रे।
साहिब जी : अहंकारी अहंकार में झुक ना पाता रे।।

21 मन मान में डूबा रहता प्यारो, फिर सच्ची प्यास कैसे बुझ पाये रे।
बाहर तो केवल सपने रहते, अंदर तेरे सुरति धार रे।
साहिब जी : सुरति चेतन होने से बनती बात रे।।

22 बाहर के पट बंद कर प्यारे, अंदर के पट खोलो रे।
लाखों जन्मों से प्यारे, बाहर का ही खेल खेला रे।
साहिब जी : सुरति निरति प्राणों का भेद ना पाया रे।।

23 सतगुरू चेतन सुरति दात प्यारो, साधक को करावे भव पार।
सतगुरू सब्द चेतन सुरति प्यारो, साधक सुरति सब्द स्वांसा से जोड़ होत पार रे।
साहिब जी : आओ चलें निजघर उस पार रे।।

24 सुरति निरति सब्द की धार संग प्यारो, निजघर की ओर ले जाती जान रे।
प्यास किस को किस की प्यारो, बोद्य हो तो जाना जाये रे।
साहिब जी : जल स्त्रोत्र की ओर हंसा चलता जान रे।।

25 प्यास की तलाश ही प्यारो, पति प्रेम की ओर ले जाती जान रे।
सत्यपुरूष का पाना प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति धार सूं रे।
साहिब जी : सतगुरू सुरति करती भय सूं पार रे।।

26 राजनीति नीति धर्म प्यारो, जीवन से कौसों दूर जान रे।
ना वैराग़ में ना प्रेम में, इन का कोई प्रयोग मत जान रे।
साहिब जी : सत की खोज भय से उस पार रे।।

27 सत्य की सीढ़ी ''वे नाम'' सब्द प्यारो, भय से संग छूटा जान रे।
सुरति ध्यान स्वांसा संग प्यारो, समग्र सतगुरू सुरति सब्द स्वांसा संग जान रे।
साहिब जी : समर्पण में सूखे पत्ते समान होना जान रे।।

28 प्रेम सत्य आनंद में प्यारो, तैरना नहीं बहना ही सुरति ध्यान रे।
ध्यान सुरति में प्यारो, सुन्न अवस्था भी संग संग जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से होते सब काम रे।।

29 प्रेम सत्य की राह पे चलना प्यारो, भयभीत होने से लेन ना देन रे।
मन मान पल में मिटत प्यारो, भय से छूटना साथ रे।
साहिब जी : भय मन मान गया ईक साथ रे।।

30 प्रेम सत्त आनंद की पहचान प्यारो, सुरति निरति की पहचान रे।
तासे निज की पहचान प्यारो, विरह तड़प प्रीत जगाती जान रे।
साहिब जी : हंसा रूप पा तीन लोक से पार रे।।

31 प्रेम सत्त आनंद प्यारो, सुरति चेतन से उपझे जान रे।
तन मन मान का संग प्यारो, पल में छूटा जान रे।
साहिब जी : हंसा रूप पाओ महान रे।।

32 लालची महत्वकांक्षी प्यारो, हर पल सोया ले जान।
मिटना जो जानता नहीं प्यारो, मुर्दा ही उसे जान।
साहिब जी : प्रभु इन के कारण छिपा हुआ ले जान।।

33 प्रेम तो स्वार्थ रहित प्यारो, सुख शांति का प्रतीक ले जान।
प्रेम कारण हर्षित होने का अनुभव प्यारो, हर जीव से प्रीत ले जान।
साहिब जी : काम क्रौध से संग छूटा ले जान।।

34 प्रेम में दूसरों पर हक कैसा प्यारो, स्वार्थ से पार ले जान।
स्वार्थ पर आधारित प्रेम प्यारो, प्रेम जंजाल ले जान।
साहिब जी : प्रेम डौर से नर पार होता ले जान।।

35 ''वे नाम'' सब्द दात बिन प्यारो, अंदर प्रेम विद्यमान मत जान।
बिन चेतन सुरति सतगुरू की प्यारो, परस्पर प्रेम संभव मत जान।
बिन सतगुरू और साधक विश्वास के, ईक दूजे से प्रेम संभव मत जान।
साहिब जी : दौ से एक होना प्रेम परिपूर्ण होता ले जान।।

36 कौटि नाम जगत में प्यारो, पार कोई करे ना रे।
''वे नाम'' सब्द दात महान प्यारो, पल में करे भव पार रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति करावे भव पार रे।।

37 इस संसार में प्यारो, बिष्ठा का कीड़ा निज को जान रे।
''वे नाम'' सब्द बिन प्यारे, सोया निज को जान रे।
साहिब जी : पापों में ग्रस्त निज को जान रे।।

38 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, बावन अक्षर से पार ले जान।
इस में चेतन सुरति सतपुरूष की प्यारो, इस सब्द बिन नर सोया जान।
साहिब जी : सब कुछ खो कर मिलता सब्द ''वे नाम'' महान।।

39 सतपुरूष की चेतन सुरति पावसी प्यारो, सोहि पूर्ण सतगुरू ले जान।
पारस सुरति सतपुरूष दर्श से पाई प्यारो, हर नर को पार कराती ले जान।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू की महिमां महान तूं जान।।

40 योगी पंच मुद्राओं की प्यारो, बात बताई ले जान रे।
चाचरी मुद्रा में पवन को प्यारो, साध कर बने महान रे।
साहिब जी : समस्त वायुओं को तीसरे तल में लाना जान रे।।

41 तीसरे तल में योगियों ने प्यारो, प्रकाश की ज्योत देखी महान रे।
वही अलख ब्रह्म निरंकार प्यारो, अदभुत शक्ति के स्वामी जान रे।
साहिब जी : काल भगवन अदभुत शक्तियों के मालिक जान रे।।

42 सार सुरत सब्द सबसे न्यारा, बिन सतगुरू भेद ना देत कोई।
तीन देव भी दात ना पाई, दात पाओ तो ही बात बन जाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही भव पार कराई।।

43 सतलोक प्रेम सत्य आनंद धाम प्यारो, कर्म दुख मोह आदि तहां मत जान।
तहां हंसा सतपुरूष के प्यारो, अमृतपान करते ले जान।
साहिब जी : सतपुरूष के दर्श पाओ महान।।

44 अवगुण मेरे साहिब जी, करे कईं कईं बार ले जान।
बख़्श दो मेरे साहिबा, ग़रीब नवाज़ मुझको अपना जान।
साहिब जी : मुझ का अपना लो जान।।

45 मैं बस तेरे आसरे प्यारे, बेसुद्ध पड़ा साहिबा तेरे दरबार।
मुझे कुछ भी आता नहीं प्यारे, ग़फलत से भरा खड़ा तेरे आगे करतार।
साहिब जी : पार करो मुझे करतार।।

46 घर को मत छोड़ना प्यारो, जग को जगाना अपना बनाना ले जान।
मां को भी सतगुरू दात दिलाना, मात्र ऋण अदा करना ले जान।
साहिब जी : दृढ़ संकल्प से प्यारो मिटें कर्मण फल ले जान।।

47 प्रेम सत्य आनंद की ओर प्यारो, सुरति को चेतन सुरति में डालना ले जान।
सब सुनि झेलो प्यारो, अपने संकल्प को दृढ़ बनाना काम महान ले जान।
साहिब जी : दृढ़ संकल्प से बनें सब काम।।

48 मिट्टी में रहकर प्यारो, फौलाद समान बनना ले जान।
सतगुरू 'वे नाम' का होना, सतपुरूष का होना ले जान।
साहिब जी : समर्पण में रहना ले तूं जान।।

49 हंसते हंसते सहना सुनना प्यारो, आंधियों और तुफानों से टकराना ले जान।
संसार को बहुत देखा प्यारो, अब निजघर की ओर चलना ले जान।
साहिब जी : हंसा रूप को पाना ही निज का मूल लक्ष्य तूं जान।।

50 सतगुरू सूं टूटा आत्महीन प्यारो, तूं समस्त धर्मों की पहचान महान।
किसी एक धर्म का अब तूं नहीं, सतपुरूष की हंसा पहचान महान।
साहिब जी : संसार को अभय और असंग ले जान।।

क संतों शब्दे शब्द बख़ाना, सब्द नहीं पहचाना।
शब्द फांस फंसें सब कोई, सब्द सुरति ना पहचाना।
जो जिन की अराधना कीन्ही, तिन का कहुं ठिकाना।
साहिब जी : कबीर साहिब महांयोगी राज़ जाना।।

51 ''वे नाम'' सब्द के स्मरण से प्यारो, पल पल होत चित्त शांत रे।
सत्य समावे शांति लावे प्यारो, जिस की महिमां वर्णन से बाहिरा रे।
साहिब जी : बिन पूर्ण सतगुरू बात बनती मत जान रे।।

52 जब स्वांस स्वांस में चेतन सुरति वास प्यारो, मन बुद्धि चित्त शांत रे।
विचार गये चित्त विश्राम में प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा ईक साथ रे।
साहिब जी : मन बुद्धि चित्त मूल सुरति में समाते रे।।

53 सहज मार्ग पर चलने से प्यारे, शांति अशांति दोनों की पकड़ छोड़ दे रे।
अब सुख दुख का संग गया प्यारो, सतगुरू सुरति चेतन से नाता जोड़ रे।
साहिब जी : मन मान का संग छूटा रे।।

54 किसी भी अपमान के लिये राज़ी प्यारो, फिर अशांत होना मत जान रे।
बिन चेतन सुरति बात बने ना प्यारो, ''वे नाम'' सब्द के आगे मन झुकता रे।
साहिब जी : चेष्ठा से मन कभी ना मर पाये रे।।

55 रोकना कुछ भी नहीं भावों का, केवल स्वीकार करना ले जान।
''वे नाम'' सब्द की दात पास जब, सुरति सिमरन सूं सब छूटा ले जान।
साहिब जी : महां भय से आते विचार ले जान।।

56 मन तन के कारण अशांति प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा ईक करना जान।
भावों का संग गया प्यारो, सुरति पर तन मन का बाण ना चलता जान।
साहिब जी : सार सब्द चेतना जगाता ले जान।।

57 तन मन ईन्द्रियां कौन देखेगा प्यारो, सुरति चेतन से मिटते ले जान।
जन्म मृत्यु का चक्कर प्यारो, बिन ''वे नाम'' सब्द छूटा मत ले जान।
साहिब जी : अमरलोक जन्म मृत्यु रहित ले जान।।

58 सुख दुख में दुख सुख में प्यारो, पल पल बदलते ले जान।
प्रेम सत्य आनंद प्यारो, कभी भी बदलते मत ले जान।
साहिब जी : सुख दुख मन के बदलते भाव ले जान।।

59 सतगुरू सजीव नाम सुरति को देता प्यारो, सत्य प्रेम आनंद सुरति रे।
जाके बल हंसा चेतन प्यारो, निजघर जाता जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में साहिबन वासा जान रे।।

60 संत सतगुरू मत्त प्यारो, सब मत्तों से न्यारा जान रे।
जग गुरूआ भेद ना जाने प्यारो, पूर्ण सतगुरू से बनता काम रे।
साहिब जी : सतगुरू महिमां अति महान रे।।

61 कलयुग आया हर ओर प्यारो, सतगुरू की ना माने कोई बात रे।
कामी क्रौधी लालची प्यारो, गुरूआ की पूजा जान रे।
साहिब जी : नर निजघर को भूला जान रे।।

62 जब मन बंधन से प्यारो, छुट जावे सुरति निरति रे।
सब जगत तुम्हारा चेला प्यारो, ईक बार साहिबन दर्स पाने की देरी रे।
साहिब जी : सारा जगत तुम्हारा चेला रे।।

63 वाद विवाद मत करो प्यारो, जब तुम मन से मुक्त हो जाओगे।
सारा जगत तुम्हारा चेला प्यारो, अपने से खिंचा चला आयेगा।
साहिब जी : जग आप खोजते खोजते आयेगा।।

64 रूपरेखा ये आंखे कैसे देखें प्यारो, कभी ना विचार में रे।
रूप परिभाषा इस तन से नहीं प्यारो, विचार से भी कैसे रे।
साहिब जी : सतगुरू द्वरबार ही प्यारा रे।।

65 मेरी सुरति बैराग लीना, सच्चे साहिबन से मिलने का।
करना हर जीव को बैरागी, निजघर ले जाने का।
साहिब जी : निजघर ले जाने का।।

66 नहीं मोहताज मन माया का, जिसे दात साबि ने दी।
नहीं मान ''वे नाम'' सब्द का, जिसे पूर्ण मोक्ष दात दे दी।
साहिब जी : जिसे पूर्ण मोक्ष दात दे दी।।

67 आत्मां अन्तर्यामी को कोई, देखे सुने मन बुद्धि से मत जान।
इस बिन देखने सुनने वाला कोई है नहीं, ताही इसे अन्तर्यामी जान।
साहिब जी : सुरति बिन सब मन मांहि जान।।

68 जहां भजन पूरा हो जात है, तहं सुरति का फूल खिले।
सब तन सुगंधित से मर जात है, सुरति में फूल खिले। (भजन में तुमरा कृत्य)
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति आत्म रंग खिले।।

69 अभी मैं से आशाऐं तेरी, भय ही कारण जान।
मिटना पड़ता ध्यान में, तब पी का खोजना जान।
साहिब जी : तब पी का खोजना जान।।

70 आत्मां सत सुरति आनंद रूप है, चेतन सुरति अंश महान।
यह जग असत मिथ्या (नाषवान), सत्य एवं नित्य सत्यपुरूष ही जान।
साहिब जी : आत्म सत्यपुरूष अंश महान।।

71 श्रद्धा अनुभाव विवेक से, जानने की यात्रा जान।
झूठे विश्वास छोड़ कर, सच्ची सरल सीधी राह पर चलना जान।
साहिब जी : सतगुरू छूड़ावे झूठी जग की आन।।

72 यह तन विष की बेलरी, सतगुरू अमृत की खान।
सीस दिये जो सतगुरू मिलें, तो भी सस्ता जान।
साहिब जी : सतगुरू प्रीत प्रेम की खान।।

73 तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमावे कोये।
सार सब्द पाये बिना, कागा हंस ना होये।
साहिब जी : बिन सब्द जीव हंसा ना होये।।

74 चैत सवेरे भांवरे, फिर पाछे पछताये।
सो तो को जाना दूर है, कहें साहिब भुजाये।
साहिब जी : कहें साहिब भुजाये।।

75 राजघाट धन पाये के, क्यों करता अभिमान।
पड़ोसी की जो दशा, वही तो अपनी जान।
साहिब जी : वही तो अपनी जान।।

76 एक शब्द सुख खानी, एक शब्द दुख रासी।
एक सब्द बंधन काटे, एक गले में फांसी।
साहिब जी : एक गले में फांसी।।

77 शीतल शब्द उचारिये, आह आन्ये नांहि।
तेरा प्रीयतम तुझ में, दुश्मन वैरी भी तुझ मांहि।
साहिब जी : दुश्मन भी तुझ मांहि।।

78 कुटिल वचन नहीं बोलिये, शीतल से मिले चैन।
सार सब्द की दात से, निजघर की होत पहचान।
साहिब जी : निजघर की होत पहचान।।

79 पतंगे की प्रीति दीपक सूं, पल पल जलते अंग जोड़ गई।
सुरति जोती संग जुड़ गई, पल को भी ना मोड़े अंग।
साहिब जी : पल को भी ना मोड़े अंग।।

80 मीरा योग में ना गई, भक्ति भेद ने उसे लिया जान।
पग घुंगरू बांध मीरा नाच उठी, भेद की बात ले जान।
साहिब जी : भेद की बात ले जान।।

81 भक्त का होना ना होना, जोहरी की सी रीत।
बूंद समाना सिंधु में, फिर कहां हैरी जात।
साहिब जी : फिर कहां हैरी जात।।

82 बुद्धि से लेन ना देल प्यारो, ना समझी उसे ले जान।
आद और अंत उस का नहीं, उसे जोड़ा हर पल ले जान।
साहिब जी : उसे जोड़ हर पल ले जान।।

83 तुम्हारी पुकार में वह आया है, देरी की क्या बात।
इसी पल उस को भौग ले, सुरति प्रतीती की बात।
साहिब जी : सतगुरू सुरति बुझाये आत्म प्यास।।

84 परम भौग इसी ज्ञान में, महां स्वांस स्वांस में संग साथ।
एक छलांग महां भौग की, फूलों का खिलना एक साथ।
साहिब जी फूलों का खिलना एक साथ।।

85 सुरति वचन कर्म ध्याना, भक्ति भेद न्यारा बारीक प्यारो।
सगुण भक्ति में संसार प्यारो, निगुण योगेश्वर अनुसार रे।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष भक्ति कोई प्यारा करता जान रे।।

86 भक्ति भक्ति में भेद प्यारो, गुरू सतगुरू में जैसे भेद।
गुरू मन का द्वार बतावे, सतगुरू परम पुरूष का देते सच्चा भेद।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द का जानो भेद।।

87 सगुण भक्ति में संसार प्यारो, निर्गुण में योगी साध रे।
सगुण निर्गुण दोनों से पार प्यारो, सच्ची सहज भक्ति की धार रे।
साहिब जी : सत्यलोक ही हमारा सच्चा दरबार रे।।

88 वायु पृथ्वी तत्व से क्षर अक्षर प्यारो, कांठ की क्रिया महान ले जान।
अंदर की धुनों को प्यारे, परमात्म कभी मत जान।
साहिब जी : जाप अजपा अनहद मन के काम ले जान।।

89 बाहरी उपासना तीर्थ प्यारो, अध्यात्म काम मत जान।
ये नित्य नहीं काल्पनिक प्यारो, मिथ्या भ्रमांक मान का काम ले जान।
साहिब जी : आकाश तत्व की उपासना औंकार की भक्ति ले जान।।

90 तीर्थ यात्रा बाहरी उपासना प्यारो, अध्यात्म भक्ति मत जान रे।
मन की गंठान का बिंदु जानो, कैसे आत्म ना मन तन को निज रूप जाना रे।
साहिब जी : आत्म की भूल को जानो रे।।

91 संसार जिस को परमात्म जाने प्यारो, सोहि काल भगवान रे।
इस की भक्ति से निरवाण प्यारो, पूर्ण मोक्ष की मत कर बात रे।
साहिब जी : दुख सुख मन का खेल रे।।

92 जिस की जरूरत उसी का प्रयास प्यारो, बंधन रहित मुक्ति का भेद रे।
आत्मज्ञान बिना पूर्ण मुक्ति ना प्यारो, धन से बने ना बात रे।
साहिब जी : उपक्रम सार सब्द से पार रे।।

93 पूर्ण मुक्ति भेद प्यारो, जानत नहीं संसार रे।
अमरपुर की प्राप्ति प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से मिलती जान रे।
साहिब जी : अमर लोक प्रेम सत्य आनंद का देश रे।।

94 वहां हंसा अमृत भौजन पाता प्यारो, सोलहं सूर्य की काया महान रे।
प्रकाश की शोभा प्यारो, चार सौ योजन से पार रे।
साहिब जी : अमृत वचन सुरति से जान रे।।

95 सुनो प्यारो दास कहे समुझाई, ''वे नाम'' सब्द सुरति में चेतन सुरति सूं आवे रे।
जिहि सुमिरत ते सुरति चेतन प्यारो, पल में उतरो भव जल पार रे।
साहिब जी : पाओ सच्चा घर उस पार रे।।

96 '' वे नाम'' सब्द जिन लिया प्यारो, सब शब्दों को भेद।
बिन नामे नरक विदाना, सुरति चेतन का पा ले भेद।
साहिब जी : निज घर जाने का भेद।।

97 मन माला फेरत जुग भया प्यारो, पाया ना सुरति भेद।
कर मन का मनका छोड़ दे प्यारे, सुरति सब्द स्वांसा का मनका फेरा।
साहिब जी : इस पल में आते ही छूटे मन का फेर।।

98 जब तन थिर मन थिर वचन थिर, स्वांसा सुरति निरति सब्द संग थिर होये।
सुरति से कहे 'वे नाम' उस पल, सुरत कमल में वासा होये।
साहिब जी : अमरपुर का वासी होये।।

99 माला ''वे नाम'' सब्द की धार प्यारो, सुरति सूं फेरे कोई प्यारा दास।
चौरासी में भरमे ना प्यारो, पूर्ण मुक्ति का भागी दास।
साहिब जी : 'वे नाम' पे राखो मुक्ति की आस।।

क मनवा तो पंछी भया पड़ा, उड़ि के चला आकास।
उपर ही ते गिर पड़ा, मन माया के पास।
साहिब जी : सुरति में कर ले वास।।

100 जैसे माया मन मन में, तैसा नाम रमाये।
सुन्न महांसुन्न को पार कर, तब अमरपुर आये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से बात बन जाये।।

101 निष्कामी ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, पावे सतगुरू धाम।
ताहि पर साहिबन आ मिलें, ले चलें संग निजधाम।
साहिब जी : पाओ परम हंसा रूप महान।।

102 मन को कोई जान ना पावे, मन तरंग में सुरति खो जावे।
मन माया का खेल जग सारा, सुरति जागे तो काल छूट जावे।
साहिब जी : सतगुरू सब्द काम कर जावे।।

103 जा की सुरति जागे जहां, कहे कबीर पहुंचाओ तहां।
मेरा मेरी का खेल है सारा, कैसे पहुंचे तहां।
साहिब जी : मन माया का खेल ना तहां।।

काव्य

104 मन ही लेवे मन ही देवे प्यारो, मन ही नाच नचावे।
मन को कोई देख ना पावे, ना आवे ना जावे।
पल पल भाव उत्पन्न करता, सुरति को हर पल उलझावे।
सुरति से हर पल काम है लेता, सुरति हर कार्य कर जावे।
कभी चैन ना सुरति को देता, सुरति ही तन मन बन जावे।
हर ओर से घेरा डाला प्यारो, भाव कौन पार लगावे।
पूर्ण सतगुरू का संग जब मिलता प्यारो, मन की चाल समझ में आवे।
अब मन पर अंकुश लगता प्यारो, सार सब्द पार लगावे।
सुष्मिना द्वार का भेद पाता प्यारो, सम कर पार हो जावे।
बिन पूरे सतगुरू बात बने ना, सुरति मन तरंग में खो जावे।।

105 आत्म ज्ञान बिना नर भटके प्यारो, मन माया खेल रचाया।
हर तन में खेल चलता प्यारो, मथुरा काशी हरि द्वार में जान ये खेल रचाया।
साहिब जी : भेद 'वे नाम' ने पाया।।

106 जीवन पांच पच्चीसी लागी, काम क्रौध मद्य़ लौभ की गांठ है लागी।
सार नाम से गांठ को खोलो प्यारो, पूर्ण मोक्ष की सुधी जागे।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति से सुरति जागी।।

क चल हंसा सतलोक को, छोड़ ये संसारा।
ये संसार काल है राजा, कर्म का जाल पसारा।
साहिब जी : सुरति का खेल है सारा।।

107 जहां क्रौध तहां काल है, जहां ख़यामां तहां आप।
सार नाम ते सुरति चेतन प्यारो, दुख सुख एक में आप।
साहिब जी : सुरति निरति से हंसा आप।।

108 निष्चय भरौसा विश्वास प्यारो, ''वे नाम'' सब्द का दान।
'वे नाम' बिन आत्म चेतन कैसे, कैसे पावेगा पद निर्वाण।
साहिब जी : बिन नामे काल का मेहमान।।

109 जो कोई संत 'वे नाम' अनुरागी, ता को सुरत साहिब से लागी।
अरस परस पिव के संग राती, देख चेतन सुरति से सुरति जागी।
साहिब जी : सुष्मिन सम कर मन माया भागी।।

110 उड़ना छोड़ो थिर हो बैठो, निस दिन सुरति सब्द स्वांसा एक जान।
एक धारा में सुरति सब्द महान, दो से एक का होना जान।
साहिब जी : प्रेम गली में एक का समाना जान।।

111 सुरति पांच ठगों के वस पड़ी प्यारो, कब निजघर को जावे।
पाप पुण्य सुख दुख की करनी प्यारो, बेड़ी पड़ी हर पल सतावे।
साहिब जी : सार सब्द ही पार लगावे।।

112 ''सार नाम'' बिन ना ठौर ठिकाना, जहं जावे तहां काल को संग पावे।
''वे नाम'' उलटा जगत सूं, कईं विधि घर को जावे।
साहिब जी : सब्द ही सुरति बन जावे।।

113 दिवस गंवाया काल संग, रैन गंवाई सोया।
सुरति अपनी का संग अनमोल था, पांच के संग गया भरमाया।
साहिब जी : सुरति को नहीं जगाया।।

114 'प्रेम रस' नाम पाया सत्य जो तेरा, संग रहे 'वे नाम' जो तेरा।
तेरा मेरा एक हो जान, प्रेम गली में वास जब तेरा।
साहिब जी : निजघर का संग करूं में तेरा।।

115 निजघर से हो आये 'वे नाम', ''वे नाम'' सब्द दात संग साथ।
चोला पाया सुरति चेतन का प्यारो, तोड़े यम जंज़ीर।
साहिब जी : मन माया का छूटा स्वयं का साथ जंज़ीर।।

116 एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनः आध।
'वे नाम' सुमिरन 'वे नाम' का, नर से बनावे साध।
साहिब जी : हर ओर दिखें सब साध।।

117 बिन नामे नरके गयो, पढ़ी पढ़ी चारों वेद।
सार नाम लिया तिन सब लिया, सब शस्त्रण को भेद।
साहिब जी : आप ही देता भेद।।

118 पल ही पल चरण कमल में, श्रद्ध से शीष नवाये।
संग साहिब ''वे नाम'' सब्द में, निज संग निजघर ले जायें।
साहिब जी : इस पल में रहना आ जाये।।

119 वेद क्तेब भ्रम में डालते, नर ना जाने ''वे नाम'' सब्द का सार।
भ्रम करी कर्म धर्म उलझाया, नर ना जाने साहिबन दरबार।
साहिब जी : आओ चलें सच्चे घर दरबार।।

120 आत्म तृष्णाहीन है, रिश्ते नातों से कौसों दूर।
मन माया छूटे आत्म हंसा बने, जो साहिबन का नूर।
साहिब जी : आप ही साहिबन का नूर।।

121 माटी का घट पाई, जाना ये सार सुरति का भेद।
माटी माटी को रौंदे प्यारो, कैसे पावे इस पल का भेद।
साहिब जी : इस पल में मिलता साहिबन भेद।।

122 श्री कृष्ण अर्जुन सूं कहत हैं, सत्यपुरूष भौतिक प्राकृति सूं पार।
उनके तेज का वर्णन ना प्यारो, क्षर अक्षर से पार।
साहिब जी : निअक्षर सब्द उस पार।।

123 पारस सुरति में जब सुरति डले, क्षर अक्षर सूं टूटे तार।
मन माया का संग छूटे, उसी पल बरसे अमृत धार।
साहिब जी : बिन सब्द सुरति जीव जावे यम द्वार।।

क किस्मत जब तक हमारे पास रहे प्यारो, हम नहीं रहे।
समर्पण की कोई चौख़ट मिले, हम नहीं रहे।
हैरत हैरत कबीरा रहा हराई, समुंद समाना बूंद में वे कब हैरी जाये।।

क हैरत हैरत हे सखी, रहा कबीर हैराई।
बूंद समानी समुंद में, वह कब हैरी जाई।
साहिब जी : सुरति सूं सब एको भाई।।

124 पल्टु शुभ दिन शुभ घड़ी, याद पड़े जब नाम विश्राम।
अब वे ही आन समा गया, पल्टु करे विश्राम।
साहिब जी : वे ही करता सब काम।।

125 सार नाम इस पल में लाता, जाने ना संसार।
पुकार पे पुकार है दे रहा, बिन नामे नहीं कोई पार।
साहिब जी : सब्द करावे मन मान से पार।।

126 वे महां सागर हम बूंद प्यारो, बूंद में आ समान काम महान।
बूंद तो कब की खो गई बूंद में, उस बिन कौन महान।
साहिब जी : सच्ची बात जान सके तो जान।।

127 सो माया वश भयो गुसाई, बंधयो जीव मरघट की नाई।
'वे नाम' सब्द ने सुरति जगाई, जन्म मरन सूं मुक्ति पाई।
साहिब जी – 'वे नाम' सब्द से मन माया मुक्ति पाई।।

128 एक हंसा के मन जो आई प्यारो, पास का हंसा समझ सब जाई।
यह सुरति की भाशा कहलाई, मन तरंगों से कम कर जाई।
साहिब जी : तन की कोशिकाओं के संपर्क से अनहद होता मेरे भाई।।

129 तन में आत्म सात सुरति की धारा प्यारो, सुरति संसारी वस्तुओं में आनंद ले जान।
जो गुण महां चेतन सुरति में प्यारो, वही सुरति में ले जान।
साहिब जी : सुरति के कारण हो आनंद ले जान।।

130 सुरति में महां चेतन सुरति ऐसे प्यारो, जैसे जल में शीतलता ले जान।
जैसे आग में तपश प्यारो, वे सुरति में साहिबन वासा ले जान।
साहिब जी : परम चेतन सुरति की महिमां महान।।

131 सुरति में सत्य प्रेम आनंद प्यारो, सत्यपुरूष की ख़बर देता ले जान।
सुरति निरति चेतन होने से प्यारो, वाणी (शब्द) तन मन थिर ले जान।
साहिब जी : चेतन सुरति महिमां महान ले जान।।

132 कल और कल का संग गया, इस पल में सुरति जान।
'वे नाम' यह पल शुभ घड़ी, सुरति में बसा नाम ले जान।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा संग महान।।

133 ''वे नाम'' सब्द में साहिबन पास प्यारो, सतगुरू पूर्ण महां चेतन सुरति सूं पाता दान।
जो साधक दात को पा जाता प्यारो, तीन लोक से पार ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द तीन लोक से पार ले जान।।

134 औंकार भगवान का संग गया, परमपुरूष का संग मिलता महान।
जहां बैठो तहां आप प्यारो, जहां डोलो पराक्रम जान।
साहिब जी : साहिबन रूप सत्यगुरू ले जान।।

135 पलटो शुभ दिन शुभ घड़ी प्यारो, जब सुरति में समावे नाम।
अब नाम ही केवल रह गया, मन माया का संग छुड़ावे नाम।
साहिब जी : संग संग चले निजधाम।।

137 बैठने उठने की समर्पण कला जब आ गई प्यारो, मै गई मेरा गया प्यारो।
अब हम नहीं रहे प्यारो, वे ही अंदर बाहिर ले जान प्यारो।
साहिब जी : अब तूं ही तूं हर थां प्यारो।।

138 तीन लोक की आदों का क्या करें प्यारो, जिस से बाहिरी दो आंखें ले जान।
चेतन सुरति से अनंत आंखें मिली प्यारो, हर ओर वही प्यारा ले जान।
साहिब जी : परम चेतन सुरति करे सब काम ले जान।।

139 लगन मुहूरत इस पल में प्यारो, कल और कल अजापा जान।
अनहद नाद भी प्यारो, कल और कल में जाता ले जान।
साहिब जी : एक हाथ की ताली मत जान।।

140 जो शरणागति 'वे नाम' सत्यगुरू की प्यारो, पल में चेतन होई सुरति ले जान।
सार नाम की दात सुरति में प्यारो, सुरत कमल से निजघर जान।
साहिब जी : सुष्मिना की महिमां महान ले जान।।

क हैरी हैरी हे सखी, रहा कबीर हैराई।
सिंधु समाना बूंद, तो कत हैरी जाई।
साहिब जी : बूंद भी संग सहाई।।

क कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराये।
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही ना जाये।
साहिब जी : सुरति चाल मौसे कही ना जाये।।

क जो सुख को चाहो सदा, तो दात नाम की लो।
नाम होवे तो माथ निवावे, नहीं तो यह मन बान्द नचावे।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब्द काल जीव नचावे।।

क चश्मे दिल से देख तूं, क्या क्या तमाशे हो रहे।
दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिये।
साहिब जी : काल जाल है ही भरमाने के लिये।।

क ध्यान मूलंम गुरू रूपम, पूजा मूलम गुरू पादकम।
मंत्र मूलम् गुरू वाक्यम्, मोक्ष मूलम् गुरू कृपा।
समझ पड़े जब ध्यान घेरे।।

141 प्रेम भक्ति चेतन सुरति, चाल तेरी हंसा।
जो तन मन मोह तजे, पाये रूप हंसा।
साहिब जी : प्रेम प्रीत आनंद रूप है हंसा।।

142 'वे नाम' है नाम दास का, दीक्षा देन तन जीवत किया।
अमरलोक से ही हम आये, जीव छुड़ान का हुकम है पाया।
साहिब जी : सत्य सुरत सब्द संग संग पाया।।

143 स्थूल सूक्ष्म कारण महां कारण प्यारो, ज्ञान और विज्ञान छे तन संग जान।
संत सतगुरू पार हैं करते, अन्तवाहक तन पा सैल करते महान।
साहिब जी : पास जाते पहुंचते मस्तिष्क पड़ते ले जान।।

144 ना योग ध्यान से प्यारो, ना किसी मंत्र से पार ले जान।
ना तीर्थ से ना पूजा से प्यारा, पार होता मत ले जान।
साहिब जी : सार नाम सुरत नाम से पार होता ले जान।।

क मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहिये।
कि दाना ख़ाक में मिलकर, गुलज़ार होता है।
साहिब जी : बिन मिटे कहां साहिबन दीदार होता है।।

क सतगुरू पारस सतगुरू पारस हैं, सतगुरू अमृत की खान।
शीष दिये जो सतगुरू मिले प्यारो, तो भी सस्ता जान।
साहिब जी : सतगुरू महिमां महान।।

145 योगी यति सन्यासी प्यारो, मन का ना पावे कोई अंत।
सार नाम सुरत नाम की दात जब पासे में प्यारो, मन माया का होवे अंत।
साहिब जी : सतगुरू की महिमां अनंत।।

क पाप कर्मों से रहती है प्यारो, जिस की आत्मां मलीन।
उसको सपने में भी प्यारो, परमात्म (सतपुरूष) नज़र आता नहीं।
साहिब जी : आत्म मन माया में मलीन।।

क सत्यपुरूष अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख रासी।
सो माया बस भयो गुसाईं, बध्यो कीर मरकट की नाई।
साहिब जी : बिन सतगुरू काल उदेड़ खाई।।

2 सत्यपुरूष जी का पता

146 जब कभी साहिब जग आये प्यारो, मयूर रचाया नाच रे।
चकौर चारों ओर बोलने लगे प्यारो, पक्षी लगे चहचहाने रे।
साहिब जी – सब वातावरण जगत अमृतमय ले जान रे।।

147 महिमां साहिब कबीर की प्यारो, स्वामी अष्टानंद रामानंद को बताई रे।
रामानंद पुल्कित हो उठे प्यारो, उनकी महिमां जगत ना जानी रे।
साहिब जी – साहिब जी सत्यपुरूष प्यारे जगत पधारे रे।।

148 आवे ना जावे मरे ना जन्मे, सोहि सत्यपुरूष हमारा रे।
वे तो प्रेम के महांसागर प्यारो, हद् अनहद् से पार रे।
साहिब जी – प्रेम सत्त आनंद की धार रे।।

'वे नाम' कहें :–
149 जो भूझे सो बांवरा प्यारो, क्या उम्र साहिबन की रे।
असंख्य युग प्रलयः गई प्यारो, तब के ब्रह्मचारी रे।
कौटिन प्रलयः देखे प्यारो, कभी ना परलोक सिधारे रे।
हम सब से प्यार करते प्यारो, सब के प्यारे कहलाते रे।
साहिब जी – पार करने नर को जग आते रे।।

क गौरख़ नाथ : कब से भये बैराग़ी साहिब जी, कब से भये बैराग़ी रे।
साहिब जी : नाथ जी हम तब से भये बैराग़ी रे, मेरी आदि अंत सुद्धी लागी रे।
जब का हम योग उपासा, तब का फिरूं अकेला रे।।

150 कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग खोजे वन मांहि रे।
ऐसो सुरति धारा में प्रेम प्यारो, ये जग जानत नांहि रे।
साहिब जी – ये जग जानत नांहि रे।।

साहिबन कहत हैं :–

क मौ को कहां ढूंढे ओ बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं जल में ना मैं थल में, नहीं सुन्न आकाश में।
साहिब जी : मैं तो तेरे स्वांस में।।

क ना तीर्थ में ना मूरत में, नां एकांत निवास में।
ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में।
साहिब जी : मैं तो रहुं विश्वास में।।

क ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, नांहि योग सन्यास में।
साहिब जी : मैं तो श्वांसों की श्वांस में।।

वाणी कबीर जी :

क कहे कबीर भेदी लिया, पल में देत लिखात रे।
नांहि प्राण में नांहि पिण्ड में, ना ब्रह्मण्ड आकाश रे।
ना मैं भृकुटि भंवर गुफ़ा में प्यारो, ना नाभी के पास में रे।
खोजी होये तुरंत मिल जाऊँ, ईक पल की तालाश में रे।
साहिब जी – मैं तो तेरे विश्वास में रे।।

क स्वांसों में ही आत्म का वास प्यारो, जब सुश्मिना सम हो जात रे।
आत्म में है उसी का वासा, जब सुरत कमल में निवास रे।
साहिब जी – जब सुरत कमल में निवास रे।।

क बिन पवन की राह प्यारो, बिन बस्ती मरघट का देस है।
बिन पिण्ड के परम हंसा प्यारो, 'वे नाम' का सच्चा संदेस है।
साहिब जी : अमरलोक सब हंसों का देस है।।

क आत्म लोक से आई प्यारो, वोहि साहिबन सच्चा देश है।
जो कोई पूर्ण सतगुरू को पाये, उसी से मिलता सच्चा दरबार है।
साहिब जी – वे महां सुन्न से पार हैं।।

3 आत्मां नित्य है

क पराधीन सुख सपने हूं नांहि।
भक्ति कारण मुक्ति का पाना होई।
बिन सब्दे काल का संग छूटे नांहि।।

क सतगुरू का दर्शन कीजिये, दिन में सौ सौ बार।
आसायु का मेह ज्यों, बहुत करे उपकार।
सतगुरू समान जग में कोई हितकारी नहीं।।

151 पंच भौतिक तन का नांहि प्यारो, आता सगुण परमात्मां नांहि है।
निर्गुण निरंझन भी नहीं प्यारो, वोहि सत्यपुरूष अमर देश है।
''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, पाता सच्चा कोई भेद है।
जग में आकर आत्म जगता, जो पाता सार नाम का भेद है।।

152 अगम चेतन सुरति अगम घर, जहां ना देवी देव ना क्लेश रे।
सुन्न महांसुन्न तहां ना प्यारो, आर ना पार का देश रे।
साहिब जी : देख सखी निज देश रे।।

153 पांच तत्व गुण तहां ना प्यारो, परम महां चेतन सुरति का देश रे।
सर्गुण निर्गुण से मेल तहां ना प्यारो, सच्चे परम पुरूष का देश रे।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द का देश रे।।

154 जात हमारी हंसा प्यारो, परम हंसा बने जा उस देश रे।
घर हमारा अमरपुर प्यारो, सत्य प्रेम आनंद उस देश रे।
साहिब जी : बिन सूर्य चांद का देश रे।।

र हीरा रत्न की पोटली, बार बार मत खोल रे।
कुं जड़न के हाट में, हीरे का क्या मोल रे।
साहिब जी : ज्ञानी सन्मुख खोलो भेद रे।।

155 केवल ज्ञान सत्यपुरूष प्यारो का, किसी विरले जन जाना।
जिन पूर्ण सतगुरू को पहचाना, उन्हीं सत्यपुरूष को पहचाना।
साहिब जी : उन्हीं संग सत्य लोक को जान।।

156 साधो यह जग पाग़ल खाना, प्यारो ये जग पाग़ल खाना रे।
लाखों जन्मों से सोया पड़ा प्यारो, जागन की राह पर चलन पाया रे।
साहिब जी : कोई जगवान हर मिल नहीं पाया रे।।

क सगुण भक्ति करे संसार, निर्गुण योगेश्वर अनुसारा।
इन दोनों के पार बताया, मेरी सुरति सत्यपुरूष अनुसारा।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू सतपुरूष अनुसारा।।

157 सुन्न गगन में क्षर अक्षर उठत है, वाणी का काम कर जावे।
निःअक्षर सुरति सब्द कहावे, सतगुरू सुरति में समावे।
साहिब जी : सतगुरू निःअक्षर रूप समावे।।

158 धन तन मन दीजै दान सतगुरू को, भरोसे की लगा लो छलांग रे।
तन धन सतगुरू वापस करे, उन्हीं का जान कर ले काम रे।
साहिब जी : दुख सुख जानो एक समान रे।।

159 लाखों जन्म गये प्यारो, देवी देवा पूजते रे।
किया वादा गर्भ में टरि गया प्यारो, काल की सेवा में जीव ना खोया रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात पाने में मत कर देर रे।।

160 सतलोक की अकह वाणी प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' की सहदानी जान रे।
जात धर्म वहां नहीं प्यारो, तीन लोक का लेखा मत जान रे।
साहिब जी : दुख का लेन ना देन रे।।

काव्य

161 नहीं तहां पांच तत्व की काया, आप ही सत्यपुरूष निर्माया रे।
प्राकृति का तहां खेल ना प्यारो, जन्म मरन जाने ना कोई रे।
चौदहं ईन्द्री नांहि षट् कर्मा, सुरति धार से चाल पावे हर हंसा रे।
दिवस ना रैन चंद्र नहीं आकाश, देवी देव तहां ना वासा रे।
औंकार आद्य शक्ति तहां ना वासा, कर्म धर्म का ना जाल रे।
सब्द स्वरूप सतगुरू हैं कर्ता प्यारो, सत्यपुरूष का आप ही खेल रे।।

162 पाओ सच्चा संदेश चेतन सुरत स्नेहि प्यारो, 'वे नाम' संदेश सब्द विदेहि रे।
600 साल बाद हम आन पुकारा, कोई प्यारा पावे नाम विदेहि रे।
साहिब जी : साहिबन वासा सब्द विदेहि रे।।

163 सत्य सब्द प्रेम का संदेश महान, अनहद वाणी काल भगवन की महिमां जान रे।
और सब झूठ ज्ञान प्यारो, सच्चे सतगुरू की कर पहचान रे।
साहिब जी : सार सबद सुरत सब्द की महिमां जान रे।।

164 झूठ पे झूठ छल करते पचि मुआ, 'वे नाम' करत पुकार रे।
बिन 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, एक भी पार ना जान रे।
साहिब जी : सुरति से कर हर काम रे।।

165 ध्याण कर छाड़ी कुल लाज प्यारे, जो साहिबन उपदेश दिया दया कर रे।
करूं जीव के काज 'वे नाम' दात सूं, डाले चेतन सुरति सुरति के साथ रे।
साहिब जी : जब पावे सब्द 'वे नाम' का रे।।

166 बिन सार नाम भरम ना मिटे प्यारो, संसे मन का आंगन छूट न्यारा पाई रे।
सब जग तजि होये न्यारा प्यारो, वे ही होये सतगुरू प्यारा रे।
साहिब जी : सोई जागे जब पावे सब्द न्यारा रे।।

167 सब्द गहे सुरति की धारा, हर एक संग प्यारा बड़ाये रे।
साहिबन संग निजघर जावे, परमहंसों के दर्शन पावे रे।
साहिब जी : निजघर की पहचान हो जावे रे।।

168 काया से बाहिर जब सुरति निरति होई, ता में राखो सुरति समाई।
निःअक्षर सबद जब संग सहाई, तीन लोक से पार हो जाई।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द की महिमां जाने कोई कोई।।

क सब्द सार चीन्हो नर लोई, सब घट व्यापक जानो सोई।
चीन्हे तांहि जीव निस्तरि है, सुरत रसना सूं सब्द में सोई।
साहिब जी : सुरत सब्द स्वांसा पर करो जाई।।

169 सत्य की चोट आसान्तवाना प्यारो, है मिठी पर अमृत धार नांहि।
संतन सब्द चोट पे चोट करते प्यारो, कल्याण की बात कुछ नांहि।
साहिब जी : प्यास बिन जल की खोज नांहि।।

170 भुख (सवा) को जगाना ही सच्चा काम प्यारो, भूख बिन खाने का भेद कहां।
प्यास लगे जल मिल जाता, हर ओर जल ही जल ले जान।
साहिब जी : दुखी को दुख ही मिलता ले जान।।

171 ''वे नाम'' सब्द की लूट हो रही प्यारो, लूट सके तो लूट।
पाच्छे फिर पच्छतायेगा, प्राण जायें जब छूट।
साहिब जी : पा ले निःअक्षर सब्द की लूट।।

172 पाप पुण्य सुख दुख नहीं, जहां कोई कर्म ना काल।
सुरत निरत परिचय भया, श्वेत महल प्यारा बिन काल।
साहिब जी : मिटा जन्म मरन का खेल।।

173 जग में बहुते करत हैं, कथनी में विश्वास।
सर्गुण निर्गुण से काम ना, निर्लम्भ राम के सब दास।
साहिब जी : परम महां जोत का तहां वास।।

174 लाख आंखों से दीखे प्यारा महां चेतन सुरति महान।
मन बुद्धि चित पहुंचे नहीं, मूल सुरति कराती पहचान।
साहिब जी : मूल सुरति ही कराती पहचान।।

175 नाम रत्न की दात को, ग्राहक बिन मत खोल।
जब कोई साहिबन प्यारा मिले, पूरा ही दे खोल।
साहिब जी : चेतन सुरति सुरति के पट खोल।।

176 'वे नाम' सोये जगत को, क्या कीजै समझाये।
रोग़ ही रोग़ इस देह में, पत्थरों पर फूल चड़ाये।
साहिब जी : पत्थरों को पूजन जाये।।

177 मीन पंछी राह नहीं संत की, उनकी राह साहिबन सहज स्वभाव।
साहिबन महां चेतन सुरति से चलें, सहज से सहज स्वभाव।
साहिब जी : चलते सहज स्वभाव।।

178 'वे नाम' सांचा निर्लम्भ राम है, और सकल मन मान।
अंदर रहिये साहिबन संग, शान्त करें मन मान।
साहिब जी : सुमिरन से शान्त मन मान।।

179 'वे नाम' सुरति धार लोह की, पारस परसै साहिबन आप।
'वे नाम' दात जब भीतर नहीं, कौन करे कंचन सम्म आप।
साहिब जी : सार सब्द सुरति को चेतन कर ले आप।।

द दरिया कांचे दूध का, बानी सो बन जाये।
दूध फाट कांजी भई, तहं गुण कहां समाये।
साहिब जी : घी कैसे बन जाये।।

द दरिया छुरी कसाब की, पारस परसै आये।
लोह पलटे कंचन भया, मांस भला ना जाये।
साहिब जी : सुरति चेतन से मन मान का संग छुट जाये।।

द दरिया कांटी (मेल) भेष सब, भीतर घात ना प्रेम।
कली लगावे कपट की, नाम घरावे हेम (सोना)।
साहिब जी : झूठ गुरूओं का प्रेम।।

180 बिन सार नाम ना संसै जाई, संसै मिटे बिन कैसे समाई।
मन माया तजि जो होये न्यारा, सोई में चेतन सुरति जाई समाई।
साहिब जी : दात पाई निज घर को जाई।।

क आदि अच्छर ही अग़म है, ता को सब बिस्तार।
सतगुरू दया तैं पाईये, 'सार नाम' निज सार।
साहिब जी : जो पावे सौ उतरे पार।।

181 तीन लोक की संपदा धृति तुला ईक संग, ता ही से सब कम हैं।
जांह छीन ईक, सुरति सब्द स्वांसा का संग है।
साहिब जी : सतगुरू सुरति में साहिबन महां चेतन सुरति संग संग है।।

182 बाहिर की भक्ति सब झूठ है, सत्य कहते 'वे नाम' महान।
''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन, काग़ हंस मन जान।
साहिब जी : सच्चे संत की कर पहचान।।

183 ''वे नाम'' दात सतगुरू 'वे नाम' सतगुरू सूं पाओ, आवागमण चक्र छूट जावे रे।
सच्ची दात आप सतगुरू भेद सूं पावे प्यारो, मन माया संग छूट जावे रे।
साहिब जी : सुख दुख में एक सम्म रहना आ जावे रे।।

184 सतगुरू मिलें तो घाट दिखावे, काल घट से सच्चे देश ले जावें।
चेतन सुरति में साहिब महांसागर बन आवे, मन शान्त हो जावे रे।
साहिब जी : बूंद में महां सागर आन समावे रे।।

185 पास रहे पर भेद पावे, मृग कस्तूरी बन झाड़ा ढूंढण जाये रे।
घट घट सुरति प्यारो, सुरति निरति की सुद्धि ना पावे रे।
साहिब जी : नर बाहिर ही खोजन जावे रे।।

186 सुरत निरत दो पलड़े मेरे भाई, सुष्मिना मध्य में ले जान रे।
''वे नाम'' सब्द कोई भेद ना जाने, सुष्मिना चेतन हो ना पावे रे।
साहिब जी : मन माया में अटका रह जावे रे।।

187 अनहद आरम्भ है प्यारो, सुष्मिना भेद महान रे।
'वे नाम' भेद संसार मिटावे, महां चेतन सुरति सब्द में समावे।
साहिब जी : मेरी मेरी का भेद खो जावे रे।।

188 सुरति में रहना ही प्यारो, महान भक्ति ले जान रे।
मन विचार देता प्यारो, माया कल और कल ले जान रे।
साहिब जी : सुरति चेतन होता सब जान रे।।

189 'वे नाम' काया अथाह जान प्यारे, बिन ''वे नाम'' सब्द ना जाने भेद रे।
तीन लोक का भेद अंदर प्यारो, ईसी में रहता सृजनहारा रे।
साहिब जी : मन तरंग में जगत भुलाना रे।।

190 शुद्ध सुरति में चाह ईच्छा नहीं प्यारो, संकल्प विकल्प से पार ले जान रे।
सुरति निरति ''वे नाम'' दात बिन प्यारो, बंधन में ले जान रे।
साहिब जी : अनश्वर अखंडित निर्लम्भ सहज ले जान रे।।

191 मन आत्म को आभास कराता प्यारो, तुम ही तन मन अंतःकरण महान रे।
आप ही मन हो सोच रही है, आप ही विषय विकार में जान रे।
साहिब जी : आत्मां भ्रमित होई ले जान रे।।

192 साहिब से कोई घट खाली नहीं प्यारो, विरला जाने सच्चा भेद।
सार नाम दात पाये बिना, निजघर का ना मिलता भेद।।
साहिब जी : जागन से मिलता भेद।।

193 ज्यों तिल मांहि तेल है, चकमक नहीं बिन आग़।
सत्यपुरूष अंश सब में है, सार सब्द से जाग।
साहिब जी : अपने आप में जाग।।

194 जीव अधम और नीच है, मन से मत कर झमाई।
सतगुरू सूं चतुराई ना प्यारो, सुरति को ले जगाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात ले जगाई।।

195 सतगुरू से कपट धोखा और चोरी, करे नर अंधा या कौढ़ी।
काम क्रौध मद लोभ प्यारो, जीवित जान अंधा और कौढ़ी।
साहिब जी : अपने द्वारा अपने ही घर की चोरी।।

196 मन राजा दिमाग़ वज़ीर प्यारो, मन तरंग करती सब काम रे।
बुद्धि सोच विचार है करति, चित्त निर्णय करता जान रे।
साहिब जी : अहंकार क्रिया करता जान रे।।

क सुरति सब सूं तोड़ो एक से जोड़ो
दशम द्वार से जीव जब जाई, स्वर्ग लोक में वासा पाई।
राजा होकर जग में आई, भोग भोग बहु विधि भाई।।

197 ग्याहरवें द्वार से हंस निकासा, महांचेतन सुरति में वासा पाये रे।
पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाता, गर्भहि समाता उसे मत जान रे।
साहिब जी : ग्याहरवें द्वार की महिमां सतगुरू सूं जान रे।।

198 जहां आशा तहं तहां प्राणों का प्यारे, मृत्यु के बाद वासा ले जान रे।
अंत समय जहां प्राणों का वासा, वहीं आत्म का वासा ले जान रे।
साहिब जी : आशा तृष्णा का सब काम रे।।

क कोटि नाम संसार में, तिनसे मुक्ति ना होये।
मूल नाम जो गुप्त है, जाने बिरला कोये।
साहिब जी : बिन सब्द तरे ना कोये।।

क सब्द सब्द सब कोई कहें, सो तो सब्द विदेह।
जीव्हा पर आवे नहीं, निरख़ परख़ के लेह।
साहिब जी : सार सब्द सुरति सूं लेह।।

199 साहिब कृपा जो होये तो, ऊँचे से ऊँचे कर्म ले जान।
कहे 'वे नाम' सतगुरू पाना प्यारो, उन्हीं का प्रसाद ले जान।
साहिब जी : हरि आप सौंपा ले जान।।

200 सुरति पाओ निज को समझो प्यारो, बड़ो प्रेम सत्य की ओर रे।
झीणी माया तजी ना जाये प्यारो, झीणी सवई को खाये रे।
साहिब जी : मोरी तजना किसी काम ना आये रे।।

201 सुरति प्रथम ध्याण उत्पन्न करे प्यारो, ता ही से उपझे ज्ञान रे।
ज्ञान ध्याण में वैर प्यारो, आती मीन ध्याण की डौरी रे।
साहिब जी : ज्ञान से ही उपझे मान रे।।

202 ध्याण गर्भ की पीड़ा अति प्यारो, जीव को दाव पर लगाना जान रे।
गर्भवति बने पीड़ा सहे प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से आत्म प्रतीती जान रे।
साहिब जी : सुरति ध्यान में प्रकटें सतगुरू महान रे।।

203 अनुभव से सम्भव प्रतीती प्यारो, मानना थोथा अनुभव ले जान।
अनुभव बिन कौरा पंडित प्यारो, भूल ही भूल करता नर जान।
साहिब जी : ज्ञान ध्यान का साया जान रे।।

204 सत्य प्रेम का खोजी कोई कोई प्यारो, परमात्मां पर भरोसा कठिन ले जान रे।
जग करामाताओं को भी प्यारो, मानता मत जान रे।
साहिब जी : साहिबन खोजी को साधक जान रे।।

205 अहं अग्नि उनमें झरे प्यारो, जग में चाहे मान रे।
आत्म परमात्म के भेद को जानो प्यारो, पूर्ण मोक्ष पाने का भेद रे।
साहिब जी : यम का बने मेहमान रे।।

क हैरी हैरी है सखी, रहया कबीर हैराई रे।
अपना आपा खो गया प्यारो, वे ही आन समाई रे
साहिब जी : निर्मल कर्ता की पहचान पाई रे।।

206 सत्यपुरूष से भय कैसा नाता प्यारो, वे तो हमारा निर्माता रे।
सिखावट पर मत चलो प्यारो, अनुभव ही सच्ची सुरति धारा रे।
साहिब जी : प्रेम अभय की डौरी पकड़ाता रे।।

207 देखने वाले की आंखों में प्यारो, सत्य प्रेम की सुरति जग जाती रे।
शब्द शब्द खोंटी जान प्यारे, कोट टांगने का काम कर जाते रे।
साहिब जी : निःसब्द से बात बन जाती रे।।

208 यह लोभ से भक्ति मत जान प्यारे, यह तो मोत निशानी रे।
''वे नाम'' सब्द को पूर्ण सतगुरू सूं प्यारो, पाना ही पूर्ण मोक्ष को पाना रे।
साहिब जी : हंसा बन हम को निजघर जाना रे।।

209 तिल घोंट तारण जगत को, सुखी नदी में बहता नीर रे।
साधों का संशय गया प्यारो, पूर्ण मोक्ष का बहता जब नीर रे।
साहिब जी : संतन सुरति में सुरति धार रे।।

210 सुरतिवान मिले ज्ञानी से, होवे मन महांचेतन सुरति की बात।
ज्ञानी से ज्ञानी मिले, मन मान की बात।
साहिब जी : छूटे ना मन मान का साथ।।

न अस्तुति निंदा नांहि जिन, बैरी मोत समान।
कह नानक रे सुन मना, मुक्त तांहि को जान।
साहिब जी : सच्ची भक्ति की महिमां महान।।

211 तन हो कर मत जियो प्यारो, सुरति में जाग कर जियो रे।
दृढ़ निष्चय से हर काम प्यारो, प्रतिज्ञा का पालन सुरति धार रे।
साहिब जी : सिद्धांतों के साथ समझौता नांहि रे।।

212 झूठ चोरी दग़ा करने वाला प्यारो, अंदर से खोखला जान रे।
बाहिर से कितना भी शक्तिशाली प्यारो, अंदर से कमज़ोर जान रे।
साहिब जी : सत्यमार्ग पर चलना महान रे।।

213 दृढ़ निष्चय से हर काम प्यारो, सुरति का संग साथ रे।
'वे नाम' सतगुरू सूं दात को पाले, फिर सत्यपुरूष भी संग साथ रे।
साहिब जी : हर हंसा में भी वे ही सुरति धार रे।।

214 ज्ञान चदरिया जिसने लीनी, मैली कर धर लीनी।
एक 'वे नाम' प्रेम प्यास से लीनी, साहिबन आ दे दीनी।
साहिब जी : दौ बार दे दीनी।।

215 सत्यपुरूष जान चेतन सुरति की धारा, सब घट व्यापक सुरति निरति की धारा।
औंकार भगवन से जान प्यारा, 'वे नाम' सतगुरू तदरूप प्यारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से उतरे पारा।।

216 जग में तीन राम हैं प्यारो, चौथे राम उस पार रे।
उस पार ही सच्चे राम हैं, जाने ना संसार रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति की धार रे।।

4 सार सब्द, सुरत सब्द सत्यपुरूष कहाये

काव्य

217 जब तक सत्य प्रेम आनंद से परिचय ना प्यारो, तब तक भक्ति भ्रम ले जान रे।
नाचना गाना जब तप प्यारो, दान पुण्य भी भ्रम के रूप महान रे।
भय और भ्रम के कारण प्यारे, ईन्द्रिय वश योगी भी भ्रम में जान रे।
गुफ़ा में बैठा ध्याणी भी प्यारो, भक्ति भ्रम में करता जान रे।
जब तक निरंकार (शून्य) को पाने की चाह प्यारो, तब तक भक्ति भ्रम महान जान रे।
निरंकार भगवन काल पुरूष प्यारो, तन की आस ही भ्रम महान रे।
तन माया जान प्यारे, सच्चे 'वे नाम' से होता पार रे।
सार सब्द – सुरत सब्द प्यारो, निःशब्द (सत्य सब्द) ही जान रे।
अनहद शब्द निःशब्द नांहि प्यारो, इस सत्यपुरूष मत जान रे।
यह भी उनको अज्ञान प्यारो, 'वे नाम' परमहंसा सूं पा लो सच्चा नाम रे।।

क एक राम दशरथ घर डौले, एक राम घट घट में बोले।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।
आकार राम दशरथ घर डौले, निराकार घट घट में बोले।
बिंदु राम का सकल पसारा, निरालम्भ राम सबही ते न्यारा।
चौथा राम सार तत्व प्यारो उसको जानो, सब जाना ले जान रे।।

क बेचूने जग रांचिया, साहिब नूर निनार।
आखिर केरे वक्त को, किसका करे दीदार।
साहिब जी : बिन सद्रगुरू कोई ना उतरे पार।।

क सतगुरू सत्यपुरूष तो एक हैं, दूजा सब आकार।
आपा तजे सतगुरू भजे प्यारो, तब पावे सत्यपुरूष दीदार।
साहिब जी : बिन सतगुरू कृपा कोई ना करे दीदार।।

न मन माया में बंध रहयो, बिसरयो नाम गोविंद रे।
कह नानक रे सुन मना, अंत पड़े यम फंद।
साहिब जी : दुख सुख दोनों फंद।।

क जो कोई साध कुटि में आवे, चरण परिवार चरणामृत लावे।
नारी पुरूष एक मत प्यारो, सतगुरू दया अमीरस पावे।
साहिब जी : सतगुरू कृपा सत प्रेम जगावे।।

218 प्रीत प्रीति बहुत संसार में प्यारो, नाना विधि में जान हर ओर रे।
सच्ची प्रति सो जानिये प्यारो, जो सतगुरू से होये रे।
साहिब जी : विश्वास भरोसा संग जब होये रे।।

219 प्रेम अंदर विरह की धारा प्यारो, कोई जाग जन जाने रे।
उसी मार्ग सत्यपुरूष मिलें, प्रेम की जोत जग जाये रे।
साहिब जी : सतगुरू कृपा कोई प्यारा पा जाये रे।।

220 सुरति को धारे पीव मिलें प्यारो, सत्यपुरूष आन समाये रे।
प्रेम की तार जोड़ गई प्यारो, महांसागर बूंद में आन समाये रे।
साहिब जी : सुरति में महांचेतन सुरति आन समाये रे।।

221 छिन ही चढ़े छिन ही उतरे प्यारो, सो तो प्रेम ना कहलाये रे।
अघट प्रेम पिंझरे बसे प्यारो, प्रेम कहावे सोये रे।
साहिब जी : धैर्य प्रेम का वस्त्र होये रे।।

222 जब प्रेम का प्रेम से उतर ना मिले प्यारो, प्रेम का कम हो जान मन जान रे।
कभी नकारात्मक भावे मन के प्यारो, नफ़रत क्रोध को जन्म देते जान रे।
साहिब जी : बिन समर्पण ना कोई प्रेमी जान रे।।

223 'वे नाम' सब नामों में प्यारे, शिरोमणि नाम ले जान रे।
हंसा सदा अपनी सुरति प्यारो, सब्द स्वांसा में समाते रे।
साहिब जी : सब्द में रहना काम महान रे।।

224 आत्म दृष्टा ही नहीं प्यारो, कर्ता भी इसे ले जान रे।
हर कार्य में सहभागिता जान प्यारे, निर्मल करना आवश्यक जान रे।
साहिब जी : नहीं कुछ लेन ना देन रे।।

225 आत्म मन से मैली जान प्यारे, मन ना बंधी जान रे।
निज को निज ही बांधा प्यारो, छूटत जान कठिनाई रे।
साहिब जी : जड़ चेतन में ग्रंथि पड़ी ले जान रे।।

226 बहुत समय से तन में रहकर प्यारो, मन को ही अपना रूप लेती जान रे।
हर अच्छे बुरे कर्मों में प्यारो, भागीदार आत्म को जान रे।
साहिब जी : आत्म हमारा ध्यान घूम रहा ले जान रे।।

227 सुष्मना में बैठे मन प्यारो, दिमाग़ को तरंगे भेजता ले जान रे।
अंतःकरण में आत्मां प्यारो, जाने ना मन का भेद रे।
साहिब जी : मन माया आत्म को जान रे।।

228 आज्ञा चक्र में आत्म का वासा प्यारो, स्वांसा द्वारा पूरी ऊर्जा नाड़ियों में बह रही रे।
अंतःकरण मिली हुई प्यारो, निज को ब्रेन भी मान रहीं रे।
साहिब जी : आत्म भूली भटकी जान रे।।

229 तीन लोक में मन ही विराजी, तांहि ना चीन्हत पंडित काजी रे।
अंतःकरण में मिली हुई प्यारो, अपने आप को ब्रेन भी माने रे।
साहिब जी : पूरा तन भी निज रूप जाना रे।।

230 जब सुरति थी तो सतगुरू नहीं, अब सतगुरू ही सुरति मांहि।
महां चेतन सुरति एक करें, तीनों एक के मांहि।
साहिब जी : तीनों एक सुरति अंग महां चेतन सुरति मांहि।।

231 चेतन सुरति की पोटली, सतगुरू ने पाई रे।
बार बार मत खोल, जब मिले कोई पारखी ताही खोलो रे।
साहिब जी : सुरति का संग चेतन सुरति सूं जोड़ो रे।।

5 निर्गुण भक्ति (पंच मुद्राऐं)

चाचरी मुद्रा :

232 चाचरी मुद्रा प्यारो, दोनों आंखों के मध्य छिद्र में ध्यान रोकना ले जान।
ज्योति निरंजन शब्द का जाप प्यारो, अग्नि तत्व उत्पन्न होता ले जान।
साहिब जी – अग्नि देवता निरक्षन करत ले जान।।

233 चाचरी मुद्रा वाले प्यारो, इस मुद्रा को नक्कारते जान रे।
ज्योति निरंझन में प्यारो, आंखों के मध्य में ध्यान लगाते रे।
साहिब जी : तीसरे तल में लगाते जान रे।।

75 प्रतिशत मन से मुक्त !
शब्द : ज्योति निरंजन – मुद्रा : चाचरी ।
स्थान : तीसरा तल – दो नैनन के मध्य में।
मस्तिष्क की कोशिकायें जगती प्यारो, त्रिकाल का ज्ञान होता जान।
दिव्य प्रकाश उच्चारण करने की शक्ति व सिद्धी प्राप्त होती है।
नासिका पर ध्यान करने से दम घुटने लगेगा, भोगी करते ये काम अहंकार का।

भूचरी मुद्रा :

234 इस में योगी ओम (औंकार) का जाप करता जान।
आज्ञा चक्र में रोकता ध्यान, जल तत्व उत्पन्न होता जान।
साहिब जी : जल देवता का कार्य देखता ले जान।।

235 इस अवस्था के कुछ योगी प्यारो, इसी ज्योति प्रकाश का अधिष्ट मानते रे।
भूचरी मुद्रा में जाने वाले योगी प्यारो, तीसरे तिल की भक्ति नक्कारते रे।
साहिब जी : आज्ञा चक्र में ध्यान लगाना महान जान रे।।

236 आज्ञा चक्र में ध्यान से प्यारो, नाना सुन्न लोक लुकांतरों की सैल महान रे।
अंतवाहक शरीर को प्राप्त करते प्यारो, ईच्छा अनुसार लोकों की सैल करते रे।
साहिब जी : इसे मोहनी माया का ही खेल जान रे।।

90 प्रतिशत मन से मुक्त !
शब्द : औंकार, मुद्रा : भूचरी, स्थान : त्रिकुटि।
योगी व्यास देव जी ने आलोकिक दिव्य अनुभूतियों को पाया।
जल व अग्नि तत्वों से युक्त सिद्धियों के स्वामी लो जान।

''प्राणायाम का महत्व भी जान, लोक लुकांतर अपने अंदर देखा जान।
जन्म मरन से पार ना, (जहां भोग तहां योग विनाशा) ''

अगोचरि मुद्रा :

237 इस में साधक सोहंग शब्द का प्यारो, जाप करता ले जान।
ध्यान अनहद धुनों पर प्यारो, साधक करता ले जान।
इस शब्द से वायु तत्व, उत्पन्न होता ले जान।।

238 अगोचरि मुद्रा वाले प्यारो, अंदर की धुणों को औंकार मानते रे।
अनहद की धुणें भंवर गुफ़ा, पल पल होत झंकारी रे।
साहिब जी : अनहद की धुणें बड़ी प्यारी रे।।

239 साहिब ब्रह्मानंद जी ने प्यारो, अनहद धुणों का ब्खान किया रे।
अनहद की धुण प्यारी रे, झीणी झीणी धुण सुरति में डारी रे।
साहिब जी : भंवर गुफ़ा में होत नाद झंकारी रे।।

95 प्रतिशत मन से मुक्त !
शब्द : सोहंग, मुद्रा : अगोचरी, स्थान : भंवर गुफ़ा ।
शुकदेव योगी बंकनाल अभ्यासी सुने अनह्द नाद धुणें
अग्नि, जल व वायु तत्वों से युक्त सिद्धियों के स्वामी इन्हें जान।

उनमुनि मुद्रा :

240 उनमुनि मुद्रा में योगी प्यारो, अदभुत प्रकाश देखता ले जान।
साधक सत्त शब्द का जाप करता प्यारो, पृथ्वी तत्व पैदा होता ले जान।
साहिब जी : निरक्षण करता पृथ्वी देवता ले जान।।

98 प्रतिशत मन से मुक्त !
शब्द : सत्त, मुद्रा : उनमुनी, स्थान : आकाश (सुन्न) स्नेहि।
चक्र : सहस्त्रसार ध्यानी।
पृथ्वी, अग्नि, जल और वायु तत्व सिद्धियों के स्वामी जान।

''सुखदेव उनमुनि मुद्रा ध्यानी तीन लोक में ही जानी,
सूक्ष्म गंभीर कौष्किाओं का ज्ञानी कालपुरूष की सीमा जानी''

खेचरी मुद्रा :

241 खेचरी मुद्रा में प्यारो, रंरकार शब्द का जाप तीन देवता करते ले जान।
इस में आकाश तत्व की उत्पत्ति प्यारो, देवता काल पुरूष निरंकार निरंजन आप ले जान।
साहिब जी मन रूप में औंकार समाया ले जान, पांचों मुद्राओं को योग मत ले जान।।

99 प्रतिशत मन से मुक्त !
शब्द : ररंकार, मुद्रा : खेचरी, स्थान : दसवां द्वार।

''ऋद्धि सिद्धियों के स्वामी मन भावन पदार्थ प्रकट कर लेते,
पंच तत्वों के स्वामी पल ही पल कहीं भी प्रकट हो जाते''

''खेचरी मुद्रा तीन देव का स्थाना,
सुष्मिना पार अनहद धुण ध्याना''

242 योग मत्त भक्ति में प्यारो, भिन्न भिन्न चक्रों पर सुरति ध्यान।
मूलाधार सिद्ध लोक द्वार प्यारो, ऋद्धि सिद्धि का स्थान महान।
योगी यत्ति तहां ध्यान लगाते, संग में गणेश जी के दर्स महान।
साहिब जी : त्रिद्धि सिद्धि मन रूप परिकाष्ठा तूं जान।।

243 दूजा चक्र शीष्ण ईन्द्री प्यारो, ब्रह्मां जी वास तहां पर।
नर जीव संचार जगत में, जीव जंत पौधों का हो विस्तार।
जो जन तहां ध्यान लगाते, मृत्यु उपरांत पाते ब्रह्मलोक द्वार।
साहिब जी : ब्रह्मां हैं तन के देवनहार।।

244 तीसरा नाभी चक्र मणिपुर प्यारो, नाभी मध्य बैकुण्ठ स्थान।
विष्णु जी का वासा वहां पर, हर काया का पाचन तंत्र महान।
जो भक्त मणिपुर ध्यान लगाते, वो पायें विष्णु लोक बैकुण्ठ स्थान।
साहिब जी : विष्णु भगवान को जगत का अन्नदाता लो जान।।

245 चौथा चक्र हृदय मध्य प्यारो, महांदेव भूतनाथ लोक स्थान।
शरीर का करते ऊर्जा संचार, शरीर बने बलिष्ठ बलवान।
हृदय चक्र जो जन ध्यान लगाते, शिवलोक पाते निवास स्थान।
साहिब जी : भोलेनाथ शिव मृत्यु के देव तूं जान।।

246 कण्ठ में विशुद्ध चक्र प्यारो, मां आद्य्शक्ति का लोक महान।
अन्न जल वायु प्रवेश द्वार, शरीर का मुख संचार स्थान।
जो जन विशुद्ध चक्र ध्यान लगाते, आद्य्शक्ति लोक करें प्रस्थान।
साहिब जी : मां आद्य्शक्ति सुर संगीत व ज्ञान की देवी महान।।

247 छठा चक्र भृकुटि स्थान प्यारो, निरंकार स्वयं कफ़ रूप में विद्य्मान।
कोई बिरला इससे पार पाये, सुने अनह्द धुणों की तान महान।
जोगी भक्त ज्ञानी यहीं अटके, फिर फिर घेरे मान अभिमान।
साहिब जी : भृकृटि पार तूं भक्ति जान।।

248 अष्ट्म द्वार आज्ञा चक्र प्यारो, ऋषि मुणि योगी तहां ध्यान लगायें।
बिन सतगुरू सब्द पार ना पायें, फिर फिर लोट के जग में आयें।
योगी ध्यानी पंडित ज्ञानी, इसी चक्र से स्वर्ग लोक को जायें।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब्द कोई पूर्ण मोक्ष ना पाये।।

249 सहज सत्यभक्ति का इन चक्रों से, कोई लेन ना देन प्यारो।
'वे नाम' विदेह दात से ईंगला पिंगला भूझे, भृकुटि से पल में पार प्यारो।
अष्ट्म चक्र में साध ध्यान लगाये, सतगुरू रज रज दरसे प्यारो।
साहिब जी : सतगुरू सब्द से आज्ञा चक्र से पार हो जाओ प्यारो।।

250 आज्ञा चक्र में जो विदेह सब्द ध्याये, पल ही पल में सतगुरू सुरति समाये।
सतगुरू सुरति से सुरति चेतन होये, सतगुरू संग अष्टकमल दल जाये।
अष्टकमल दल सतगुरू लोक न्यारा, साहिबन सतगुरू संग निजघर को जाये।
साहिब जी : बिन सतगुरू शरणी कोई निजघर ना जाये।।

'वे नाम' कहें :–
''सहज मार्ग के पूर्ण संत मन माया से पूर्णतः मुक्त लो जान,
पूर्ण सतगुरू त्रिलोकि पार निजधामी वासी इन्हें तूं जान''

6 सहज सत्त मार्ग के सतगुरू जी के गुण

1 ब्रह्मचारी
2 निर्लोभी
3 निज कमाई से निर्वाह
4 निर्बंधन व ऐकांतवासी
5 परमार्थ व सत्य प्रेम आनंद का पथिक
6 सब चक्रों और निजधाम का ज्ञाता
7 साहिबन (निःसब्द/सार सब्द) संदेश वाहक
8 महां चेतन सुरति/पारस सुरति का महांसाग़र
9 सत्यपुरूष का ''तदरूप'' 'वे नाम' में रहे समाये
10 कर्म ईन्द्रियों व ज्ञान ईन्द्रियों का अधिपति

251 मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं निरालम्भ राम।
सुरति निरति स्वांसा में डालो, संग में सार नाम।
साहिब जी : सतगुरू सूं भेद को जान।।

252 बिन सार सब्द आत्म नहीं जगती, आत्म में निरालम्भ राम।
आठों पहर सुरति में रहना, संग में सार नाम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

253 तन मन धन सब अर्पण, सतगुरू चरणन कीजे।
सतगुरू देव परम पद–2, मोक्ष गति लीजे।
साहिब जी : चरणन सुरति दीजे।।

254 संत बिन दान ना होवे, साहिब ब्ख़ान करें।
संत बिन ज्ञान ना होवे संत बिन मोक्ष ना होवे, यत्न बहुत कीने।
साहिब जी : बार बार दर्शन कीजे।।

255 सौंदर्य उत्तम बुद्धि प्यारो, मीठी वाणी उत्तम चरित्र बनाते संत महान।
हंस में यह सारे गुण प्यारो, सुन्दर सफ़ेद लालिमां भरी सुन्दर आंखे महान।
साहिब जी : मोती खाता कहलाता महान।।

256 हम सब हंसा तीन लोक में प्यारो, सत्यपुरूष के अंश महान।
जग में कष्ट अपने अर्जित किये प्यारो, उस को दोषी मत जान।
साहिब जी : अपने कर्मों का फल पाता ले जान।।

7 छेः तन की महिमां

257 जाग्रत अवस्था में प्यारो, मन भाव देता जान रे।
स्वपन्न में अंतःकरण आधार प्यारो, अंतःकरण ही सक्रिय जान रे।
साहिब जी : मन का खेल ही जान रे।।

258 नींद में सपना देखना प्यारो, याद भी रहती संग साथ रे।
पहचान भी होती संग में प्यारो, पल में लेते पहचान रे।
साहिब जी : यह कैसी याद्धाश्त रे।।

259 नींद में सूक्ष्म याद्धाश्त संग में प्यारो, स्थान जीव रिश्ते नाते की होती पहचान रे।

स्थूल याद से बिन प्यारो, स्थूल याद के अंदर की यादाश्त रे।
साहिब जी : जैसे केले के पात पात में पात रे, जैसे सतगुरू की बात, बात में बात रे।

260 सपने जो तन मिलता प्यारो, आत्म तन मत जान रे।
विकार भय क्रौध आदि भी प्यारो, मन के अंग भी संग साथ रे।
साहिब जी : लिंग तन का पाना जान रे।।

8 निज कर्मण दण्ड

काव्य

261 खोट का खेल प्यारा, पल पल दुखी करता ले जान रे।
निरंकार प्यारे सत्यपुरूष के, पांचवे शब्द पुत्र ले जान रे।
वे ही साहिबन वरदान पा कर, जग रचना करी ले जान रे।
वे ही आद्यशक्ति संग हंसों के, काल पुरूष कहलाते जान रे।
वे ही निरंजन अमरधाम के प्यारो, मान सरोवर से निष्कासित ले जान रे।
संग सब आत्मरूप, तीन लोक में आये ले जान रे।
मन ही सृष्टि से परे, ररंकार ले जान रे।
वे ही साकार निरंकार में, विद्यमान ले जान रे।
आप ही सब, सृष्टि् का कर्ता ले जान रे।
आप ही शून्य मण्डलों से परे, घनघौर अंधकार ले जान रे।
आप ही जन्म मरण के, कर्म बनाता रे।
सत्यपुरूष के अनुसार, सब कर्ता जान रे।
'वे नाम' सुरति से, देखा भाला जान रे।
सत्यपुरूष को सब ख़बर प्यारे,दास की देखी मान रे।
वे ही सब देव दानवों के कर्ता, जग संचालक कर्ता जान रे।
अमरपुर सच्चा देश प्यारो, परम हंसों का देश महान जान रे।
सब संत जिनें साहिब पुकारे, हमारा परमात्मां ले परम पुरूष ले जान रे।
प्रेम अवस्था में प्यारो, शीष उतारी भुई धरे रे।
कहें साहिब धर्मदास सूं प्यारो, ऐसा होये तो दात पा जावे रे।।

262 स्थूल तन की क्रियायें प्यारो, मन बुद्धि चित अहंकार से जान रे।
देखना सुनना सूंघना कार्य करना प्यारो, जाग्रत अवस्था में जान रे।
साहिब जी : मस्तिष्क से करनी जान रे।।

263 तीसरा कारण शरीर प्यारो, यह एकाग्रता का शरीर ले जान रे।
भौतिक तन से पार प्यारो, याददाश्त से सबंध रखता ले जान रे।
साहिब जी : नर चिंतन में विचारों में खोया ले जान रे।।

264 नर जिस का जहां का चिंतन करता प्यारो, वहीं पहुंचा ले जान रे।
एक तन मिलता इस में प्यारो, किसी का ध्यान आ जाता जान रे।
यह ध्यान साधारण नांहि प्यारो, कारण तन पाना ले जान रे।।
साहिब जी : ध्यान का घूमना काम महान रे।।

तुरियातीत अवस्था

265 जो नर तुरियातीत अवस्था में देह त्यागे, पहले स्वर्ग में वासा पाये।
लोक लुकांतरों की यात्रा करे प्यारे, राजा ईन्द्र सहायक कहलाये।
साहिब जी : जन्म मरन के चक्र से पार ना पाये।।

चौथा तन (महां कारण शरीर)

266 महांकारण तन योगी को प्यारो, प्राप्त होता ले जान रे।
ज्ञान देही कहलाता प्यारो, बड़ा अदभुत तन जान रे।
साहिब जी : इस में याददाश्त कुछ मत जान रे।।

267 संसारिक यादों से कुछ लेन ना देन रे, अंदर से लोक लुकांतरों की करता सैल रे।
मीन चाल से चलता प्यारो, अति तीव्र गति से चलता जान रे।
साहिब जी : तीन लोक लुकांतरों की सैल महान रे।।

268 पांचवी देही बड़ी अदभुत प्यारो, याददाश्त का संग छूटा जान रे।
संसार केवल एक प्रतिशत प्यारो, संसारी कृपाओं से संग छूटा जान रे।
साहिब जी : अंदर की दुनियां का भेद महान रे।।

269 छठी देहि विज्ञान देहि प्यारो, इसी में आनंद की वर्षा रे।

ब्रेन (बुद्धि) ही चिंता दुख आदि का प्यारो, अनुभव करता जान रे।
साहिब जी : बुद्धि से अति दूर जान रे।।

270 नींद में जब चले जाते प्यारो, स्थूल दूर रह जाता रे।
पंच मुद्राऐं छ्ड़ी तक जाती प्यारो, तहां निरंकार शून्य में समाते रे।
साहिब जी : सहस्त्रसार में वासा जान रे।।

271 योग यहां तक जाता प्यारो, एक शरीर में होता जान रे।
मन एक प्रतिशत गौण रूप में रहता, योग की पराकष्ठा यहां तक जान रे।
साहिब जी : निरंकार भक्ति में मन रहता संग साथ रे।।

272 तुरियातीत तक काम योग का प्यारो, आत्म करति हर काम रे।
बिन आंखा देखना प्यारो, बिन कन्ना सुनना जान रे।
बिन नाक के सूंघना प्यारो, बिन हाथां करना काम रे।
बिन पैरां चलना प्यारो, आत्म ही करति सब काम रे।।

273 जब नर निर्मल शान्त प्रेमी आनंदमयी प्यारो, संग संग फ़िरता ले जान।
सब कुछ अपना संतों पर प्यारो, लोटा देता ले जान।
साहिब जी : सच्चा संत सत्यपुरूष का प्यारो अंश ले जान।।

274 याद का काम प्यारो, चित्त ही करता ले जान।
भाज का पुत्र नाहिं प्यारो, आकाश में सुनता जान।
विलास भोग करती आत्मां प्यारो, बाल अवस्था मां में जान।।

क कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।
गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ ना पावत पारा।
साहिब जी : बिन 'वे नाम' भक्ति करे कभी ना पावे पारा।।

क ईड़ा पिंगला सुष्मिना सम करे, अर्द्ध और उर्द्ध विच ध्यान लावे।
कहें कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म और मरन का भ्रम भावे।
साहिब जी : सुश्मिना सम तो काल ना भरमावे।।

275 आज्ञा चक्र आत्मां बैठी प्यारो, ईड़ा पिंगला के माध्यम से तन में फेलती जान रे।
आत्म का उपर जाने में प्यारो, मन बाधा डालता ले जान रे।
साहिब जी : दसवां द्वार खोलने में बाधा डालता ले जान रे।।

276 ''वे नाम'' सब्द के सुमिरन से प्यारो, ईड़ा पिंगला लय हो जाती ले जान रे।
जप तप से बात बने ना प्यारो, मन जग में धकेलता जान रे।
साहिब जी : एकाग्रता में बाधा डालता ले जान रे।।

277 सब्द सुरति के दण्ड से प्यारो, मन पवन को घेर लेना काम रे।
सब्द सुरति प्राणों से प्यारो, सुष्मिना नाड़ी खुलती जान रे।
साहिब जी : सुरति सब्द से मन पवना को एक करना जान रे।।

प अस्तुति निंदा कोऊ कर, लगै ना तेहि के साथ।
पलटु ऐसे दास को, सब कोई नवावे माथ।
साहिब जी : सुरति वान हो तो साहिबन साथ।।

278 आठ पहर लागी रहे, सुरति जीत की धार।
'वे नाम' ऐसे दास को, कोऊ ना पावे पार।
साहिब जी : सब्द सुरति स्वांसा कर ईक धार।।

279 जैसे काठ में अग्नि का वास प्यारो, फूल में ऐसे जानो बास।
साधक में साहिबन वास प्यारो, दूध में घीव का वास।
साहिब जी : काम क्रौध मान में काल का वास।।

क तन थिर मन थिर, सुरत निरत थिर होये।
कहे कबीर उस पल की, कल्प ना पावे कोये।
साहिब जी : सुरतिवान हर पल थिर होये।।

280 'नाम' सत्यपुरूष सुमिरन सुरति सबद स्वांसा जब एक ही छा जा,
जीवन ऊर्जा का भेद आ पा जां।
ईड़ा पिंगला लह कर, सुष्मिना को आन जग जा।
सुरति निरति के भेद को पा लो प्यारो, तीन से एक ही साहिबन का संग पा जा।।

281 काग़ से पलट हंसा किया 'वे नाम' को, जब विदेह नाम दिया आन रे।
''वे नाम'' दात का भेद दिया प्यारो, पल में सुरति चेतन महान रे।
साहिब जी : सार सुरत सब्द सोये जान रे।।

282 जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के मांहि।
'वे नाम' दास कहें विचार के, सुमिरन सम कुछ नांहि।
साहिब जी : बिन सुमिरन सब माया मांहि।।

283 मन से संकल्प बुद्धि से याद (निष्चय) करना छोड़ दो।
चित्त से अनचाहे वेग प्यारो, औंकार से कार्य करना छोड़ दो।
साहिब जी : मन ही हर तरंग को छोड़ दो।।

म अजगर करे ना चाकरी, पंछी करे ना काम।
मलूक दास कह चले, सब के दाता राम।
साहिब जी : सुरति चेतन से बनें सब काम।।

क नाम भेद जो जानहीं, सोई वंश हमार।
नातर दुनियां बहुत है, बूड़ मरा संसार।
साहिब जी : काल रहा झख मार।।

284 सत्य सत्य और सत्य बताऊँ, कुछ ना पाऊँ ना मांगू आप सूं।
सेवा में रहो सेवादार बन के प्यारो, आप सब का संग पा जाओ।
सब हंसा पुरूष रूप प्यारो, सत्यपुरूष सूं करते प्रीति रे।
साहिबन कृपा सूं पार हों, जब सतगुरू सूं सच्ची प्रीति रे।।

प दीपक बारा नाम का, महल भयो उजियार।
महल भयो उजियार, नाम का दीप (तेज) विराजा।
सब्द किया प्रकाश, मान सरोवर पर छा जा।।

285 भौतिक सुविधाओं से प्यारे, अज्ञान भी बड़ता ले जान रे।
भोगों में सुख ढूंढना मूर्खता प्यारो, मृग मरीच का जार रे।
साहिब जी : दुख ही बड़ता जान रे।

9 जाग्रत संयमी

286 काव्य

1 प्यारो शुभ दिन शुभ घड़ी, याद पड़े जब नाम।
2 दसों दिश शुद्ध भाई, शून्य में रचयो संसार 'वे नाम'।
3 सुरति प्राण शुद्ध धर्म प्रकाश, सब गये एक का संग किया 'वे नाम'।
4 आप में आप आ बैठा प्यारो, मन मान की टूटी ताण।
5 सब्द किरवा प्रकाश प्यारो, बुद्धि निर्मल निःसब्द किया 'वे नाम'।
6 अशुद्धि का संग छूटा प्यारो, शुद्धि प्रकटी पाया जब सब का भाण।
7 छूटि कुमति की गांठ प्यारो, सुमति प्रकट होई नाची संग 'वे नाम'।
8 'वे नाम' अपने से तोड़ा प्यारो, किया संग प्राण स्वांसा 'वे नाम'।
9 सतगुरू ने कांटा फैंका, मूल की पहचान कराई 'वे नाम'।
10 महां साग़र की पहचान मिली, जब सुरति नाम स्वांसा एक नाम।
11 दाग़ त्रिगुण का छूटा प्यारो, प्रकाश शांत श्वेत एक संग हंसा नाम।
12 संतों की महिमां प्यारो, ''वे नाम'' सब्द में समाना हो शुभ काम।
13 जेते दर्शयम तेते नित्यम, जेते नित्यम तेते दर्शयम।
14 एक संग एक हो जाना प्यारो, साग़र का बूंद में समाना ही सच्चा काम।

287 ना तूं संसार ना संसारी प्यारे, भय का कोई कारण नांहि रे।
ना तूं ज्ञानी ना ज्ञान प्यारे, आत्म ज्ञान से भ्रम संग नांहि रे।
साहिब जी : आप ज्ञानी जान खा लो ''वे नाम'' सब्द का बाण रे।।

288 जैसी मति वैसी गति प्यारो, आध्यात्म का सच्चा सूत्र जान रे।
अंत मति सो गति प्यारो, अनासक्त पुरूष परम पद प्राप्त करता रे।
साहिब जी : गीता के सच्चे भेद को जान रे।

289 ध्यान योग में स्थित जो प्यारो, कर्म कर्ता फल का अधिकारी जान रे।
पूर्ण मोक्ष का अधिकारी नहीं प्यारो, बंधन के भय से कर्म छोड़ना पाप रे।
साहिब जी : निष्काम कर्म संग ''वे नाम'' सब्द से पार रे।।

290 आत्मां साक्षी व्यापक पूर्ण प्यारो, एक मुक्त चैतन्य रूप मान रे।
आत्मां क्रिया रहित संग रहित प्यारो, ईच्छा रहित असंग शांत जान रे।
साहिब जी : मन माया लिया भ्रमाई रे।।

काव्य

क कहीं गुप्त कहीं प्रगट होवे, गोकुल मथुरा काशी रे।
पवन चढ़ावे सिद्ध कहावे, सेल करे आसमानी रे।
तबहुं नांहि सच्ची भक्ति में, अबही कच्चे का कच्चा रे।
जल के उपर आसन मारे, जो बोले सो होवे रे।
वेद विविध मार्ग छाने, तन लक्कड़ करि डारे रे।
जोगी होये के जोग कमावे, रोम रोम करि छानेगा।
तीन लोक में कुछ ना छोड़ें, पूरा जोग कमावेगा।
तबहुं नांहि सतगुरू का प्यारा, अभी भी मन संग पावेगा।
तपसी हो तप कर डारे, काया गारा करी डारेगा।
गुरू छोड़ भये सन्यासी, तो भी पार ना हो पावेगा।
''वे नाम'' सब्द जब सतगुरू सूं पावे, तो ही पार हो पावेगा।
सुरति शब्द अभ्यास प्यारो, सोहंग शब्द अगोचरी मुद्रा जान रे।
शुकदेव पा की पहिचान करी प्यारो, भंवर गुफ़ा अस्थाना रे।
साहिब जी : अनहद धुनों को जाना रे।।

291 जब सत्यपुरूष ही एक प्यारो, आत्मां भी एक महान रे।
जैसे सत्यलोक सर्वत्र व्याप्त प्यारो, आत्म भी सर्वत्र व्याप्त रे।
साहिब जी : सतलोक महां सुरति साग़र प्यारा रे।।

292 अज्ञानी सृष्टि् को सत्य मानते प्यारो, अनादि शाश्वत भी मानते जान रे।
इस को बनाने वाला प्यारो, कोई नहीं मानते जान रे।
साहिब जी : सृष्टि् सत्य इस के परे कुछ ना जान रे।।

293 सब है पर सुख की आशा प्यारो, मत इन में जान रे।
बुद्धि का चरम विकास प्यारो, बाहिर का सब मिला, दुख का संग महान रे।
साहिब जी : मन मान का संग महान रे।।

294 जग रस्सी कहो या सर्प प्यारो, इस से कोइ प्रयोजन नहीं रे।
हर जीव आत्म जान प्यारे, सत्यपुरूष अंश बिन कुछ नांहि रे।
साहिब जी : दुख भय बिन कुछ संग नांहि।।

295 हर जीव ज्ञानी ही नहीं प्यारो, स्वयं ज्ञान बोध ले जान रे।
आत्म ज्ञान बिना नर भटके प्यारो, ''वे नाम'' सब्द बिन पार ना एक रे।
साहिब जी : संसार संग प्रीति तोड़ रे।।

296 जैसी मति तैसी गति प्यारो, मुक्ति का अभिमानी मुक्त जान रे।
जिन 'वे नाम' बंधन जाने प्यारो, पल पल जाओं वारी रे।
साहिब जी : नमो नमो 'वे नाम' सतगुरू नमो रे।।

297 सत्यपुरूष सतगुरू भेजिया, हर जन को करने पार रे।
स्त्रवनां सब्द बिन सुनाये के प्यारो, सुरति चेतन सुरति सूं पार रे।
साहिब जी : सत्यगुरू कराते प्रेम से भव पार रे।।

298 कृपा करि ''वे नाम'' सब्द दिया, सतगुरू संग भव पार हो जाये रे।
जिन जिन सतगुरू भक्ति करि प्यारो, महां चेतन सुरति में जा समाई रे।
साहिब जी : चरणों में मिटने से बात बन जाई रे।।

299 कर्म धर्म अंधेरा मिट गया प्यारो, पाया पूर्ण मोक्ष का दान रे।
''वे नाम'' सबद हरि से पार प्यारो, पूर्ण मोक्ष इस के पार रे।
साहिब जी : चौथे लोक की महिमां अपार रे।।

300 सतगुरू सब्द की चोट प्यारो, जाग गई सुरति निरति की धार।
चंचल सों निष्चल भयो, मन माया की टूटी तार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां अपार।।

301 डूब रहा था भव सिंधु में प्यारो, संग में काम क्रौध लोभ मोह की धारा।
''वे नाम'' सतगुरू सब्द ऐसो दिया, कर दिया पल्लो पार।
साहिब जी : निःसब्द करावे भव पार।।

302 चौथे लोक का बीज हंसा प्यारो, तीन लोक में कियो वास।
जब कोई प्यारो चौथे लोक से हो आये, पावे ''वे नाम'' सब्द का सुरति वास।
साहिब जी : सब्द सुरति स्वांसा से निजघर वास।।

303 कल और कल छुड़ाये कर प्यारो, सत्य ''वे नाम'' सब्द दिया सुरति की धार।
सत्य सब्द को सुरति में प्यारो, पकड़ा सुरति स्वांसा की धार।
साहिब जी : सतगुरू कीनी कृपा अपार।।

304 चौथे लोक का बीज प्यारो, विकसत हुआ सुंदरी संग साथ।
सुंदरी महक निजघर चली प्यारो, सतगुरू चेतन सुंदरी के साथ।
साहिब जी : निसंक का साहिबन संग एक साथ।।

305 बाहिर की आंख चाम है देखती प्यारो, अंदर की आंख करती सत्य की पहचान।
बाहिर तो केवल माया का जाल प्यारो, अंदर प्रेम सत्य आनंद की जोत महान।
साहिब जी : किसी संत के अंदर सत्य का फूल खिलता महान ले जान।।

306 ऋषि मुणि भी प्यारो, सुरति की पहचान ना करते रे।
तन देख खो जाते प्यारो, दृष्टि् से कैसी पहचान रे।
साहिब जी : अंदर की आंख महान रे।।

307 ज्ञानी सोयों पर है हंसता प्यारो, आद कच्चा ज्ञान दुख का कारण जान रे।
उस की दृष्टि् तन पर टिकती, अंदर झांकना काम महान रे।
साहिब जी : कोई प्यारा संत ही जाग जान रे।।

308 जो वस्तु पास 'वे नाम' सतगुरू, तीन लोक में मत ले जान रे।
चौथे लोक की महां चेतन सुरति प्यारे, सत्यपुरूष आप दी मान रे।
साहिब जी : सुरति सब्द सार सब्द निःअक्षर दात रे।।

309 ''वे नाम'' सब्द ही प्यारो, सुरत सब्द सार सब्द कहलाता रे।
आत्मां को मन माया से प्यारो, अलग कर देता जान रे।
साहिब जी : पूर्ण सुरक्षा संसार का आकर्षण जाता जान रे।।

310 मन की शक्ति अज्ञान प्यारो, आत्मां में घुला मिला जान रे।
आत्मां भटकी घुम रही प्यारो, बिन ''वे नाम'' सब्द छुटकारा मन से मत जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही करावन पार जान रे।।

311 जैसे हंसा की चोंच में गुण प्यारो, पानी त्याग दूध दूध पी जाता रे।
ऐसे ही पूर्ण सतगुरू की सुरति प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से चेतन जान रे।
साहिब जी : परम चेतन सुरति सदगुरू की सुरति चेतन करती जान रे।।

312 पूर्ण सतगुरू आत्म को प्यारो, मन से अलग करता जान रे।
फिर आत्म मन में प्यारो, समाती मत जान रे।
साहिब जी : सतगुरू कृपा से सब काम रे।।

313 कौटि जन्म का पथ था प्यारो, ''वे नाम'' दात पल में कराया पार रे।
सतगुरू कृपा कीनी प्यारो, कसकर मारा सुरति बाण रे।
साहिब जी : नाम संग पाया पद निर्वाण रे।।

314 'वे नाम' सतगुरू सूरमा प्यारो, सुरति का मारे बाण।
नाम अकेला रह गया, साधक बने साधु महान।
साहिब जी : शुद्ध से भरा हुआ बच्चे समान ले जान।।

315 साधु से संत बने प्यारा, बने जब शांत सरल अनुरागी महान।
निःसब्द बन प्यारो, मन मान का संग छूटा ले जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष संग एक होना जान।।

316 पंडित खोये ज्ञानी भटके प्यारो, सब्द गुरू सब्द चेला सत्यपुरूष सूं आया जान।
सुरति निरति की एक संगति प्यारो, हंसा बने महान।
साहिब जी : सब्द में सतगुरू साहिब एक संग जान।।

317 नाक खुशबू की अनुभूति करता प्यारो, मुख ईन्द्री ले जान रे।
ठोस पदार्थ की अनुभूति हाथ से प्यारो, सत्यपुरूष की अनुभूति दिव्य दृष्टि् जान रे।
साहिब जी : दिव्य दृष्टि् संतों में चेतन जान रे।।

318 दिव्य दृष्टि् तीसरा नेत्र नांहि प्यारो, आज्ञा चक्र में भी मत जान रे।
योगी ध्यान खोजता प्यारो, कोइ धुनों को कहता महान रे।
साहिब जी : प्रकाश में भी मत जान रे सुरति में इस का वासा रे।।

319 सुरति शब्द अभ्यास में नहीं प्यारो, अंदर की धुनों को परमात्म मत जान रे।

आंख ना मूंदे कान ना रूंधे, नहीं अनहद अरू झावे रे।
साहिब जी : सुरति में दिव्य दृष्टि् का वासा रे।।

320 सोई सतगुरू जान प्यारे, जो आवागमन मिटावे रे।
''वे नाम'' सब्द की दात को देकर, दिव्य दृष्टि् जगावे रे।
साहिब जी : तीन लोक से पार हो जावे रे सहज समाधि में ले जावे रे।।

321 आत्मां दो परतों में फंसी जान प्यारो, व्यक्ति व्यक्तित्व मन बुद्धि चित्त अहंकार।
मन माया का नशा प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सब का तोड़ता अहंकार।
साहिब जी : सतगुरू ही नशे को तोड़ता करता पार।।

कबीर महिमां

322 वेद चारों जानत नांही प्यारो, सत्यपुरूष की मेहरबानियां।
हर युग में संत कबीर जी आये, जग जाने ना उनकी कहानियां।
सतयुग में सत्तव्रत त्रेता में मुनिन्द्र, द्वापर में करूणामय कलयुग में कबीर जग जानिया।

323 मेरा मुझ में कुछ नहीं प्यारो, जो कुछ है सो तेरा रे।
मेरा मिसी पर अधिकार ना प्यारो, मेरा कोई गुलाम ना रे।
साहिब जी : आत्म अद्वैत असंग कर्ता और भोगता से मुक्त रे।।

324 आत्म के लिये कोई मेरा नहीं प्यारो, वह तो केवल दृष्टा साक्षी नांहि रे।
आत्म तन से अलग जब प्यारो, क्षण में तन मृतक हो जाता रे।
साहिब जी : आत्मां परमपुरूष का अंग प्यारा रे।।

325 आत्मां व्यक्तिगत नहीं प्यारो, विश्वआत्मां इसे जान रे।
स्वयं कर्ता ना होते हुऐ प्यारो, गुणों से स्वाभाविक क्रिया जान रे।
साहिब जी : चुम्भक सूर्य बादल करते काम रे।।

326 विश्व आत्म तत्व बिना कैसे प्यारो, खेल सत्यपुरूष महां चेतन सुरति का जान रे।
चेतन सत्ता पल पल संतन संग प्यारो, जग को जगाना काम महान रे।
साहिब जी : चौथे लोक की महिमां महान रे।।

327 जग में सब कुछ आत्म कारण प्यारो, जीव जन्तु चांद सूर्य चोथे लोक से आये जान रे।
निरंकार भगवन भी उन के बेटे प्यारे, आद्यशक्ति बेटी जान रे।
साहिब जी : सब कुछ उस एक से आया जान रे।।

328 ज्ञान ज्ञाता और ज्ञेय प्यारो, तीनों जब तक अज्ञान प्रतीति जान रे।
साध के लिये ये सब प्यारो, मिथ्या ही बस जान रे।
साहिब जी : अज्ञानी ज्ञान का भूखा रे।।

329 ज्ञान की वस्तु पाने की क्रिया प्यारो, भी करनी जान रे।
आत्म स्वंय ज्ञान प्यारो, सभी ज्ञानों का ज्ञान रे।
साहिब जी : उसे ''वे नाम'' सब्द से चेतन करना काम महान रे।।

330 सब संत कहें मैं पूरा पाया प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की पाई जब धार रे।
आत्म जागी नाची संग चेतना, तन मान की सुद्धी पाई जान रे।
साहिब जी : चेतन सुरति ही करावे पार रे।।

331 आत्म ज्ञानी सार सब्द से प्यारो, मन माया से पार रे।
अज्ञानी संसार वस्तुका प्यारो, ज्ञान प्राप्त करता जान रे।
साहिब जी : कुछ पाता किसी काम का मत जान रे।।

332 ''वे नाम'' दात के अमृत मोती, साहिब बिखेरें सुरति की गली।
ले लो रे भाई ले लो रे, ''वे नाम'' सब्द की लहर चली।
साहिब जी : फूले खिले हर एक गली।

333 सतगुरू आज्ञा ते आवई प्यारो, सतगुरू आज्ञा ले जाई रे।
सो सच्चा संत जगत में प्यारो, बहु विधि अमृत पाये रे।
साहिब जी : सच्चा प्रेमी कहलाये रे।।

334 मिटना जो जानता नहीं प्यारो, हर पल सोया ले जान रे।
लालची महत्वकांक्षी देख साहिब छिप जाते रे, लाश ही चलती फ़िरती जान रे।
साहिब जी : सतगुरू सेवा काम महान रे।।

335 भक्ति भक्ति सब जगत करत प्यारो, बिन सतगुरू ना पावत प्राणी रे।
प्रेम दया क्षमा विवेक, भक्ति के लक्ष्ण जान रे।
साहिब जी : विश्वास करे सब काम रे।।

336 धन्यवाद के फूल जब अन्दर खिलें प्यारो, तब प्यारे के प्रेम की पुकार उठे।
छम छम अश्विन धारा प्यारो, अंदर से पुकार पर पुकार उठे।
साहिब जी : संतन वाणी सूं साधक जाग उठें।।

337 श्री कृष्ण राधा के नैनों को कोमल हाथों से प्यारो, चुपके से आकर बंद किये।
राधा का हर अंग चेतना से भर गया प्यारो, चेतन सुरति के हर ओर से पट खोल दिये।
साहिब जी : सच्ची प्रीत ने सुरति भेद खोल दिये।।

338 सच्चा साधक शीष उतारी भुई धरे प्यारो, ता पर पांव रख सतगुरू को पावे रे।
कहें साहिब सुरति से प्यारो, ऐसा होये तो आवे रे।
पूर्ण मोक्ष की दात को पाकर प्यारो, निजघर को संग जावे रे।।

339 हीरा लिये जोहरी गया प्यारो, गंवारो के देश रे।
देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख़ ना लेत रे।
साहिब जी : सतगुरू देवें साहिबन परख़ रे।।

340 'वे नाम' पाया अमृत निजधाम का प्यारो, चला गली गली देत संदेश रे।
देख 'वे नाम' को ज्ञानी कहा, भेद ना पाया अमृत का लेस रे।
साहिब जी : तीन लोक सोये अंधों का देश रे।।

341 दरिया हीरा क्रोड़ का कीमत लखै ना कोये।
जबर मिलै कोई जौहरी प्यारो, परख़ तबही होये रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द महां चेतन सुरति वासा होये रे।।

342 सतगुरू दाता मुक्ति का प्यारो, सुरति को महां सुरति से चेतन करे।
कृपा पाना चरण कमलों में प्यारो, मन माया सुरति सूं दूर करे।
साहिब जी : 'वे नाम' ''वे नाम'' दात से उस पार करे।।

343 हर फूल हर पत्ता हर वृक्ष प्यारो, सत्य प्रेम आनंद का संदेश भरे।

झूठे जग के रिश्ते नातों से प्यारो, हर नर की सुरति में चेतना भरे।
साहिब जी : '' वे नाम'' सब्द दुख सुख से पार करे।।

344 तीन लोक में सत्य प्रेम आनंद का बीज प्यारो, तन मन से अर्पण, मिले उस पार किनारा।
जे चाहो पूर्ण मोक्ष प्यारो, सब्द सुरति स्वांस स्वांस में चले उस पारा।
साहिब जी : जागें भाग चले उस पारा।।

345 नर सोया कई जन्मों से प्यारा, 'वे नाम' सतगुरू दिया आन जगाये।
दात पाते ही प्यारो, दुख सुख संशय रोग पल में बह जाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही आन जगायों।।

346 सतगुरू आये शान्त दासा रूप में प्यारो, कृपा करी सुरति जगाये।
तपता को शीतल करे प्यारो, सोता लेत जगाये।
साहिब जी : सतगुरू ही नशे को तोड़ जगाये।।

10 ब्रह्माण्ड की यात्राओं का भेद

347 कोई जाग्रत अवस्था में खो जाता प्यारो, कहां गया कुछ ख़बर ना जान रे।
यह कारण तन का खेल प्यारो, ब्रह्मण्डों की यात्रा इस तन में होती जान रे।
साहिब जी : आने वाली घटना का भेद मिलता जान रे।।

348 हमारे तन में छेः शरीर प्यारो, आंतरिक मण्डलों की यात्रा स्वपन्न मत जान रे।
दास ने ये सब पाया प्यारो, चेतना की चार अवस्थायें जान रे।
साहिब जी : सुषुप्ति स्वपन्न जाग्रत और तुरिया रे।।

349 सुषुप्ति में चेतना नाभि में प्यारो, याद का संग ना साथ रे।
गहरी नींद अवस्था ये प्यारो, निज को भूला जान रे।
साहिब जी : स्वांसा का संग साथ रे।।

350 जाग्रत अवस्था दूसरी प्यारो, संसार का बोध होता जान रे।
नींद में स्वपन्न लोक देखना प्यारो, तीसरी अवस्था जान रे।
साहिब जी : अंदर आंखें हरकत करती जान रे।।

351 स्वपन्न अवस्था में प्यारो, स्थूल तन से बाहिर आते जान रे।
इस तन में बड़े काम हैं करते, वापिस आते भी जान रे।
साहिब जी : कई कई बार बार–बार इस अवस्था में जाते जान रे।।

352 कई काल के खेल प्यारो, स्वपन्न दिखता जान रे।
कुछ याद रहते प्यारे, कुछ खो जाते जान रे।
साहिब जी : बार बार जो देखो घर जाने का संदेशा जान रे।।

353 कई बार विविध लोकों में प्यारो, इस तन भ्रमण करते महान रे।
वे तन नित्य लगता प्यारो, कुछ सत्य का भी मिलता ज्ञान रे।
साहिब जी : भिन्न भिन्न खेल माया खेलती जान रे।।

354 पूर्व जन्म का कई कई बार भेद मिलता प्यारो, स्वपन्न लोक अनूठा जान रे।
बचपन में बागों को देखता प्यारो, आज तक बागों में बसेरा जान रे।
साहिब जी : हर पल निज को अकेला पाया जान रे।।

355 चौथी तुरिया (प्रज्ञा) अवस्था प्यारो, इस में कारण तन मिलता जान रे।
पहले पपील चाल है मिलती प्यारो, ब्रह्मण्डों की यात्रा होती महान रे।
साहिब जी : शब्द ध्यान से होता सब काम रे।।

356 पहले पहल की सूर्य रोशणी से तेज प्यारो, डेढ़ घंटे में एक लोक भरपुर ले जान रे।
अनुमान के दर्शन पाओ, कुछ कुछ भक्तों का वासा जान रे।
साहिब जी : कुछ चेष्टा करनी मत जान रे।।

357 फिर दो और तीन लोक की यात्रा ऊपर से प्यारो, चलने की गति बड़ती जान रे।
इस में गति चाल की बड़ जाती प्यारो, डेढ़ घंटे में वापिस आना जान रे।
साहिब जी : पपील चाल सब से कम जान रे।।

358 किसी को भेद कभी मत देना प्यारो, जब तक औंकार का दर्श ना पाया जान रे।
प्रतिदिन ध्यान में सब घटे प्यारो, चुप्पी साधना काम महान रे।
साहिब जी : औंकार की कृपा से होता जान रे।।

359 आने वाली घटनाओं का पता चलता, अति दूर दूर का भेद मिलता जान रे।
यह सब छठी ईन्द्री से प्यारो, घटना से पहले चेतावनी मिलती जान रे।
साहिब जी : छठी ईन्द्री सभी नर में जान रे।।

360 इस से आगे महांकारण तन प्यारो, ता की अदभुत महिमां जान रे।
कोई कोई ध्यानी योगी प्यारो, इस तन को पाता जान रे।
साहिब जी : सतगुरू कृपा से हों सब काम महान रे।।

361 मूल सुरति का वासा प्यारो, छेः तन में हर पल जान रे।
मीन चाल से चलता योगी प्यारो, चार से पांच लोक लुकांतरों की सैल जान रे।
साहिब जी : समय डेढ़ घंटा ही लगता जान रे।।

362 इस तन में बैठ प्यारो, त्रिकाल की सब घटनाऐं देखना जान रे।
इसी तन को पाकर प्यारो, संजय ने धृतराष्ट्र को युद्ध का हाल सुनाया जान रे।
साहिब जी : कई कई लोकों की सैल महान रे।।

363 इस से आगे ज्ञान देहि प्यारो, योगी को प्राप्त होती जान रे।
योगी विराट रूप को पाता प्यारो, ब्रह्मस्मि कहता जान रे।
साहिब जी : अति शक्ति का मालिक जान रे।।

364 सृजन करने की शक्ति मिलती, जब चाहे वृष्टि करवा सकता रे।
मोसम को बदल सकता प्यारो, जो कहता हो जाता रे।
साहिब जी : 98 प्रतिशत आत्मिक हो जाता जान रे।।

365 फिर छठा तन विज्ञानदई प्यारो, अति दुर्लभ यह तन जान रे।
महां योगेश्वर यह तन पावे जान रे, 99 प्रतिशत होते जान रे।
साहिब जी : सहस्त्रसार में प्रवेश करते प्यारो, विहंगम चाल पाते जान रे।।

366 विज्ञानदेई में प्यारो, बिन कान के सुनता आंखों के बिना देखते रे।
महां प्रज्ञा अवस्था कहलाती प्यारो, विराट अवस्था महान ले जान रे।
साहिब जी : मन बुद्धि का आभार गया जान रे।।

367 मरन पर जो बचता प्यारो, वह मिटता मत जान रे।
वह कहीं दुख कहीं सुख भोगने प्यारो, स्वर्ग नर्क पित्रलोक में गया जान रे।
साहिब जी : जो बचता आभास रहता रे।।

368 एक भूल अवस्था प्यारो, एक मूल सुरति जान रे।
नींद सुषुप्ति दोनों में प्यारो, संग रहती जान रे।
साहिब जी : मूल सुरति सतलोक से आने पर देती सतलोक का भेद रे।।

369 मूल सुरति सभी जीवों में प्यारो, इसे सत्यपुरूष का अंग जान रे।
बच्चे बूढ़े सभी में प्यारो, मूल सुरति सब याद रखती जान रे।
साहिब जी : विचारों को बाहर रखना मूल लक्ष्य रे।।

370 संत इन छेः शरीरों से आगे प्यारो, सत्यपुरूष का संग मिलता जान रे।
पूर्ण सतगुरू भी संग देते प्यारो, शुद्ध विहंगम चाल का पाना जान रे।
साहिब जी : कौरा पत्र मिलता जान रे।।

11 हित अनहित पशु पक्षिन जानत रे

371 कबहु ना मारो जीव, सब में साहिबन वास।
स्वाद वश जीव हत्या, मरते ही पाये प्रेत योनि वास।
साहिब जी : जीव फंसा कर्मण की फांस।।

372 पशु समान नर जग में आये, पशु समान नर जग से जाये।
सतगुरू से जब तक मेल ना होये, हंसा बन नर कबहु ना जाये।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष सतगुरू से ही पाये।।

373 जीव जंत सब एक हैं, सब में एको प्राण।
सुरति सूं बोलें जब प्यारो, आत्म से हंसा महान।
साहिब जी : सुरति बिन निर्जीव सारा जहान।।

374 पार होने का सौदा हर पल करो, सच्चे जीवन की सच्ची बाट।

कौन जाने फिर ये तन कब मिले, पूर्ण मोक्ष मार्ग है बाट।
साहिब जी : चौरासी लाख करावे बाट।।

क जीव ना मारो बापुरा, सबके एकै प्राण।
हत्या कबहूं ना छूटती, कोटि सुनो प्राण।
साहिब जी : सब में साहिबन सुरति प्राण।।

क चला जब लोक को, शोक सब त्यागिया।
हंस का रूप सदगुरू, सब्द बनाई।
साहिब जी : सार सब्द ही पार लगाई।।

क पुरूष नाम सुमिरो सहिदानी, बीरा सार करो परमानी।
देह धरे सत्य सब्द समाई, तब हंसा सत्यलोक को जाई।
देह धरे कीने जहं आसा, अन्त काल लीनी तहं बासा।
अब तोहि कष्ट भयो जीव आनी, ताते यहि विधि बोलो बानी।
जब तुम देह धरो जग जाई, अपने किये का फल पाई।।

क कोटि नाम संसार में प्यारो, तिनसे मुक्ति ना होये।
मूल नाम जो गुप्त है प्यारो, जाने बिरला कोये।
साहिब जी : सार नाम से निजघर जाये।।

क कहो संदेश, सत्यपुरूष साहिबन का प्यारो रे।
कहं कबीर सो अमर हो, जो गह मम उपदेश रे।
साहिब जी : गुप्त और प्रकट रूप से, सत्यपुरूष के दर्शन पाता रे।।

क जा सुख को मुनिवर रमे, सुर नर करें मिलाप।
सो सुख सहजे पाईये, संतो संगति आप।
साहिब जी : संतों की संगति में साहिबन प्रकटे आप।

375 साहिब सब घट टिठा प्यारो, पूरे का पूरा पाया जान रे।
हर फूल में उस का भेद है, दिखाना अति कठिन जान रे।
साहिब जी : बच्चे की किलकारी में जान रे।।

376 ''वे नाम'' सब्द जब संग में प्यारो, क्या कर सके कुसंग रे।
चंदन का विष क्या करे प्यारो, लिपटे रहे कई भुजंग रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द का काट कोई ना जग में रे।।

377 समर्पण दृढ़त अनुशासन जान प्यारे, क्रूरता अहंकार से लेन ना देन रे।
सतगुरू ही भव निधि पार करावे प्यारा, सदगुरू बिन कोई पार ना जाने रे।
साहिब जी : पारस सुरति संतन के पास रे।।

378 संतत्व भेद ब्रह्मण्ड में प्यारो, पहले दिया साहिब कबीर रे।
अब 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, सत्य सब्द का भेद दिया जान रे।
साहिब जी : पारस दात बिन ना कोई पार रे।।

379 आत्मनिष्ठ होना ही लक्ष्य हमारा, आत्म स्वतः आनंदित जान रे।
मन भी आसक्ति के कारण प्यारो, आनंदित आत्मां विस्मृति अवस्था में जान रे।
साहिब जी : सार सुरत सब्द से बनें सब काम रे।।

क प्रथम पुरूष पुरूष पुरातन, पांच सब्द उच्चारे रे।
सोहंग सत्त ज्योति निरंजन प्यारो, ररंकार औंकार रे।
साहिब जी : वायु पृथ्वी अग्नि आकाश जल तत्व प्रकटायो रे।।

380 सब्द ही सगुण सब्द ही निर्गुण प्यारो, शब्द वेद भी कह रहे रे।
सब्द काया में जान प्यारो, जाकी भक्ति करे उसी में ठिकाना रे।
साहिब जी : सब्द निःअक्षर दात प्यारो रे।।

क सब्द तो शब्दै नांहि प्यारो, शब्द हुआ माया के मांहि।
दो बिना होये ना अधर अवाज़ा, काल में ही जा समाई।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब्द जीव काल रहयो रमाई।।

381 पांच तत्व तीन गुण प्यारो, माया ही ले जान रे।
सतगुण विष्णु राजगुण ब्रह्मा प्यारो, तम्‌गुण शिव की उत्पति माया से जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन पार मत जान रे।।

क शब्द शब्द सब कोई कहे प्यारो, वो तो सब्द विदेह रे।
जीवा पर आवे नहीं प्यारो, निरख परख के ले रे।
साहिब जी : सार सब्द सुरत सब्द ही सच्चा ज्ञान रे।।

काव्य

382 मन के बहुतक रंग प्यारो, पल छिन बदले जान रे।
एक रंग में साधो प्यारो, जानो बिरला कोये रे।
मन पांचों वश पड़ा प्यारो, मन के वश नहीं पांच रे।
जित देखूं यूं लगी प्यारो, जित भागूं तित आंच रे।
मना मनोरथ छाड़ी दे प्यारे, तेरा किया ना होये रे।
पानी में घी नीकसे प्यारो, रूखा खाये ना कोये रे।
यह मन नीचा मूल है, नीचा कर्म सुहाये रे।
अमृत छाड़े मान करि प्यारे, विषहिं प्रीति करि खाये रे।
काम क्रोध अहंकार से ही मन प्यारो, अहंकार मन पर छाया जान रे।
मन बड़ा निकृष्ट प्यारो, गंदे कार्य में लग जान रे।
मन को अंतःकरण में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं घेरो रे।
मन पर अंकुश सुरति सूं प्यारो, शांत निर्मल होता जान रे।
फिर इसे सतगुरू भक्ति में डाल प्यारे, सतगुरू चरणों में डाल रे।।

383 पांच तत्व से निर्मित तन प्यारो, माया ही ले जान रे।
आत्म के संग मन का वासा प्यारो, दोनों का संग संग रहना जान रे।
साहिब जी : आत्म निज को भोली जान रे।।

384 ''वे नाम'' सब्द से बच्चे प्यारो, सुरति चेतन का संग महान रे।
मन मरे ना माया मरे प्यारो, मरता केवल तन ही बात को जान रे।
साहिब जी : सूक्ष्म माया तजनी काम महान रे।।

385 पीर पैगम्बर कुतुब औलिया प्यारो, मन माया खाया जान रे।
माया संतों की दासी प्यारो, लज्जा में डूबी रहती रे।
साहिब जी : माया सतगुरू की दासी जान रे।।
386 अतीत चली होई कारतूस प्यारो, उस की क्या परवाह रे।

इस पल में रहना सीख लो, निज की पहचान सतगुरू सूं रे।
साहिब जी : निज की ऊर्जा व्यर्थ मत खोओ रे ।।

387 आगे कुआं पीछे खाई प्यारो, पार ना पवे कोई रे।
इस पल में निज की पहचान प्यारो, आत्म में रहना जान रे।
साहिब जी : इस पल में सतगुरू सुरति धारा महान रे।।

388 सील संतोख ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, सुरति की जोत जग जाती रे।
आत्म आनंदित जान प्यारे, भीतर आनंद के फूल खिल जाते रे।
साहिब जी : सब्द से भीतर से सुरति जोत जगती रहती रे।।

389 भीतर सुरति का नाद उठत प्यारे, सो सब सब्द से जान रे।
परम संगीरत से आगे प्यारो, सुरति सब्द का ज्ञान रे।
परम संगीत से आगे प्यारो, सुरति सब्द का जान रे।।

390 संतजन असली जोहरी पारखी प्यारो, स्वांस स्वांस में ''वे नाम'' सब्द जान रे।
अपने आप में संतोष लाना प्यारो, संतोष मत जान रे।
साहिब जी : सच्ची दोलत से ही मिलता संतोष रे।।

391 बड़े से बड़ा आर्य पाना प्यारो, सच्चा संतोष मत जान रे।
धन दोलत में प्यारो, सच्चा संतोष मत जान रे।
साहिब जी : जो समय काल में ना मिटे संतोष देता जान रे।।

392 हरिजन साहिब का बुध पुरूष प्यारो, कभी कभार कोई हरिजन जान रे।
शूद्र होना काफ़ी प्यारो, हरिजन होना जान रे।
साहिब जी : जागे की सच्ची पहचान रे।।

393 सुरति विकसित रहे प्यारो, वासा आनंद में जान रे।
अधर पर मधुर मुस्कान प्यारो, सत्य गैले नहीं झूठ बोले नांहि रे।
साहिब जी : सुरति में ''वे नाम'' सब्द से श्रेष्ठ ज्ञानी जान रे।।

394 जा की सुरति (अंतप्रज्ञ) में ''वे नाम'' सब्द प्यारो, स्मरण सततः बहता जान रे।

सो साधु सच्चा साधक प्यारो, भीतर सुरति सब्द स्वांसा एक जान रे।
साहिब जी : बहती स्मृति में साहिबन वासा जान रे।।

395 साहिब में सगन कठिन है भाई, जैसे पपेईया प्यासा स्वाति बूंद का।
पिया पिया रट लगाई प्यारो, सब घट साहिबन वासा रे।
साहिब जी : सहज योगा करावे पार रे।।

396 हमारी आदतें ही प्यारो, हम्हें निर्मित करती जान रे।
धन पद प्रतिष्ठा पाने पर प्यारो, ईमानदारों की पूछताछ मत जान रे।
साहिब जी : लंगोटी बचाना काफ़ी जान रे।।

397 ''वे नाम'' के कारण प्यारो, चारों और एक आभा जान रे।
साहिब जी चुनरिया प्यारो, आत्म की सौंदर्य जान रे।
साहिब जी : जीवन की आभा नाम से जान रे।।

398 जो जिस का उसकी आन लौटाते प्यारो, जीव के बहाने हम ऋण चुकाते रे।
साग़र से आंसू मिट्टी प्यारो, वायु से स्वांसा निरति से प्राण रे।
साहिब जी : नभ से सूनापन मृत्यु के बहाने आते और जाते रे।।

399 प्रेम ध्यान मैं हूं प्यारो, और सब छूटा जान रे।
भक्ति में तूं है प्यारे, सुरति सब्द स्वांसा एक जान रे।
साहिब जी : मैं और मेरा कुछ नांहि रे।।

400 तो गया तो मैं भी प्यारो, संग संग गये जान रे।
मैं से तूं का जोड़ प्यारो, मैं गया तो तूं कहां रह पाये रे।
साहिब जी : दोनों साथ साथ जीते जान रे।।

401 जब तूं तूं ना रहा मैं मैं ना रहा, एक दूजे में खो जाहे रे।
भीजे चुनरिया प्रेम रस बूंदन, दुल्हन सम निज को जान रे।
साहिब जी : चुनरिया ओढ़ जान रे।।

402 संस्कार अपने अपने प्यारो, तो ही हर जीव भिन्न भिन्न ले जान रे।

कर्म भोग लेता हर जीव प्यारो, पर संस्कार छूटे मत ले जान रे।
साहिब जी : दरिद्री भी आता पर अति दरिद्र ले जान रे।।

403 गुरू मन से देह को शब्द देता प्यारो, भेद सतगुरू का पाया नांहि रे।
जन्म मरन के जाल में फंसा प्यारो, भेद निज घर का जाना नांहि रे।
साहिब जी : नर फिर फिर गोता खाई रे।।

12 शब्द की महिमां

404 प्रथम पूर्ण पुरूष औंकारा, पांच शब्द उच्चारा रे।
सोहंग सत ज्योति निरंजन प्यारो, ररंकार औंकारा जान रे।
साहिब जी : सब जग पांच में समाया रे।।

405 सोहंग से वायु प्यारो, सत से पृथ्वी, जयोति निरंजन से अग्नि जान रे।
ररंकार आकाश (सुन्न) प्यारो, औंकार से जल तत्व बनना जान रे।
साहिब जी : पंच महांभूत कहलाये जान रे।।

406 शब्द ही सगुण प्यारो, शब्द ही निगुर्ण जान रे।
वेद भी शब्द कहत प्यारो, शब्द काया में जान रे।
साहिब जी : जो जाकी भक्ति करे उसी में ठिकाना जान रे।।

407 प्रारंभ में अंत छिपा प्यारो, पल पल मरना जान रे।
जन्म में ही मृत्यु छिपी प्यारो, जाने का समय निकट जान रे।
साहिब जी : मृत्यु अचानक मत जान रे।।

408 पहली स्वांस के साथ प्यारो, मृत्यु के साथ ही पग़ ध्वणि सुनी जान रे।
जन्म जिसे हम कहते हैं, वही मृत्यु भी लाती रे।
जीवित पानी का बुलबुला प्यारो, सूर्य की रोशणी में सात रे।।

409 पिन के चुभाने से प्यारो, पल में मिटता जान रे।
निज को जान कर प्यारे, शान्ति को प्राप्त करना जान रे।
साहिब जी : जीवन पत्ते पर ओस समान रे।।

410 सुबह जब होती प्यारो, शाम को दूर मत जान रे।
प्रारंभ में अंत छिपा प्यारो, जन्म में मृत्यु छिपी जान रे।
साहिब जी : कली से फूल खिलना काम महान रे।।

411 तुम छोड़ोगे क्या प्यारो, और पकड़ोगे क्या रे।
तुम अभी हो कहां प्यारो, ना पकड़ना ही है ना छोड़ना है रे।
साहिब जी : सतगुरू संग जागना जान रे।।

412 आत्मां ना शुद्ध ना मुक्त ही प्यारो, मन माया का करती काम रे।
मन माया का संग छूटने से प्यारो, आत्म निज में आती जान रे।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द बनें ना काम रे।।

413 आत्मां के एकत्व बोध से प्यारो, पूर्ण मोक्ष प्राप्त होना जान रे।
सार सब्द सुरत सब्द से प्यारो, आत्म महां चेतन जान रे।
साहिब जी : सत्यपुरूष की महांचेतन सुरति करती सब काम रे।।

414 सत्य भक्ति अमर धाम से आई प्यारो, करे कर्म फल से पार रे।
सुरति दात 'वे नाम' सतगुरू सूं पाकर प्यारो, साधु बनो महान रे।
साधक से साधु बनी प्यारो, बनो साधु से हंसा महान रे।
साहिब जी : सत्यपुरूष की दात करे सब काम रे।।

415 सत्य भक्ति जो जानसी प्यारो, पूर्ण मोक्ष का पाना जान रे।
बिन ''वे नाम'' सब्द के प्यारो, व्यर्थ गंवाई देहि ले जान रे।
साहिब जी : विचारों से मुक्त निर्मल होना जान रे।।

416 'वे नाम' पूरा पाया, टूटी मन माया की तार।
तीनों मिल एक हुआ, उसी की चारों ओर है धार।
साहिब जी : बनी ''वे नाम'' सब्द की धार।।

417 सुरत नाम 'सत्यनाम' सब्द प्यारो, 'वे नाम' पूर्ण सतगुरू पास ले जान रे।
भक्ति का सच्चा ठौर ठिकाना प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की दात में जान रे।
साहिब जी : सच्चे भक्त ही होत पहचान रे।।

418 सुरत निरत सब्द संग स्वांसा में प्यारो, साधना सेवा भक्ति आधार रे।
विधि युक्ति पाकर प्यारो, भवसाग़र से पार रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द पूर्ण मोक्ष की दात रे।।

419 यह जन्म नहीं तन काजा, 'वे नाम' सतगुरू शरणी पा जा।
''वे नाम'' सब्द सच्ची दात को पा जा, मन माया के वश मत पड़ अभागा।
साहिब जी : 'वे नाम' से सच्चे घर को पा जा।।

420 ध्यान में केवल आत्मां प्यारो, और कुछ भी मत जान रे।
मन माया का संग छूआ प्यारे, मन शान्त हुआ ले जान रे।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द बने ना काम रे।।

421 भक्ति में केवल साहिबन सब्द प्यारो, मन मान का छूटा संग जान रे।
ध्यान भक्ति दोनों प्यारो, एक जग पर ले आते जान रे।
साहिब जी : बिन तूं के मैं भी छूटा जान रे।।

422 तूं ही तो मैं की परिभाषा प्यारो, तूं ही से मैं की सीमा जान रे।
एक गया दूजा संग संग गया प्यारो, दोनों साथ साथ जीते और मरते रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से हंसा महान रे।।

423 तूं तूं ना रहा मैं मैं ना रहा, एक दूजे में खो जायें रे।
साहिब की दुल्हनिया बनो प्यारो, सुरति निरति हंसा रूप रे।
साहिब जी : घर में पाया साहिबन वास रे।।

424 इन सरल तरल नयनों में प्यारो, साहिबन की उज्जवल छवि छाई रे।
उसी ने मेरी सुरति में प्यारो, अपनी तस्वीर बनाई रे।
साहिब जी : प्राणों में सुरति सब्द संग समाई रे।।

425 सोई नाम संसार में आया, 'वे नाम' सतगुरू पाई दात अनमोल अपार।
ताहि 'नाम' मुक्ति नांहि प्यारो, दुखि जान संसार।
साहिब जी : बुड़ि मुआ (जग सारा) संसार।।

426 'वे नाम' गुप्त नाम प्यारो, पाई सुरति स्वांसा में सुमिरन करो।
भाव से निज को प्यारो, सतगुरू कृपा से पार करो।
साहिब जी : सतगुरू चरणों में ध्यान धरो।।

427 ''वे नाम'' सब्द के नाम बिन प्यारो, छूटे ना काल और नर्क का जाल रे।
''सार नाम'' बिन जीव प्यारो, नर्क में करता वास रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से काल भी रहता दूर रे।।

428 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, मोह और बंधन छूट जाते रे।
भक्त संतन का हो जाता प्यारो, कल और कल छूट जाते रे।
साहिब जी : सतगुरू वाण करावे पार रे।।

429 अजर पुरूष संग प्रीत पुरानी, जब उसमें संत समानी।
मूल नाम सुरति समानी, साधक सब्द सत्यगुरू साहिब संग समानी।
साहिब जी : निजघर की सुद्धि सुरति पहचानी।।

क ज्ञान दीपक सुरत की बाती, दोनों संतन हाथ।
दीपक लेके खोलिये, निस दिन सतगुरू साथ।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू का कर ले साथ।।

क ज्ञान दीपक प्रकाश के, भीतर भवन उजाल।
तहां जा बैठ पुरूष को सुमरो, सहजे होये निहाल।
साहिब जी : हर साधु होत निहाल।।

430 सच्चे प्रशणों का उत्तर नहीं प्यारो, सच्चे प्रशणों का गिर जाना ही उत्तर जान रे।
झूठे प्रशणों के उत्तर मिलते प्यारो, गणित मनुष्य की ईजाद रे।
साहिब जी : शून्य से शून्य निकालो सुन्न ही रहता रे।।

431 मूल गणित दस अंगुलियां प्यारो, सब जग में इन से चलता काम रे।
मूल गणित दस पर ख़त्म प्यारो, दस अंगुलियां करती काम महान रे।
साहिब जी : गणित मनुष्य की ही ईजाद रे।।

432 सुरति निरति से आगे प्यारो, सीमां रहित श्वेत लोक प्रकाशा।
आवागमण से पार वे लोक प्यारो, खुले द्वार सुरति के प्रकाशा।
साहिब जी : सार सब्द सुरत सब्द प्रकाश।।

433 त्रिदेव योगेश्वर नौ नाथ प्यारो, चौरासी सिद्ध पांच शब्द में अटके जान रे।
प्रथम शिव दूसरे दत्तात्रेय शुकदेव प्यारो, वयास वासुदेव कृष्ण गोरखनाथ 'वे नाम' जान रे।
साहिब जी : सात योगेश्वर महान रे।।

434 अपान उदान प्राण समान प्यारो,
सर्वतन व्याप्त देवदत्त धण्झय नाग और जम्हाई पवन दस जान रे।
सब वायुओं को प्यारो, सुषुम्ना नाड़ी से ऊपर ले जान रे।
साहिब जी : मुद्रा साधना अति कठिन तूं जान रे।।

435 काव्य : सूरदास जी कहते हैं :–

चरण कमल बन्दु हरी राई, सूरदास पर कृपा करिहूं।
बार बार बादू तोई पाई, चरण कमल बन्दु हरि रहे।
मुरली धुन गाजा, सूर सुरति सर साजा।
निरखत केवल नयन नभ ऊपर, शब्द अनहद बाजा।
धुनि सुनि में मुकुर मन मांजा, पाया अतिरस झांझां।
सुरति संग सोध सत काजा, लखि लखि शब्द समाजा।
घट घट कुण्झ पुण्झ जहं छाजा, पिण्ड ब्रह्मण्ड विराजा।
फोड़ि आकाश अनिल पंछी भाजा, उल्टि के आपु समाजा।
ऐसे सुरति निरति निःअक्षर, कोटि कृष्ण तहं लाजा।
'सूरदास' सार लखि पाया, लखि लखि अलख अकाया।
गगन गली घर पाया, सिंधु में बूंद समाया।।

436 सतगुरू ब्रह्मचारी ही प्यारो, ब्रह्मचारी साधक को मार्ग दर्शन देता जान रे।
सुषुम्ना का सम्म होना प्यारो, अति आवश्यक जान रे।
साहिब जी : तन थिर मन थिर सुरति निरति थिर जान रे।।

437 आत्मां अनाम अरूप प्यारो, प्रत्येक जीव में वासा जान रे।
ता से जीव जान जगत में प्यारे, आत्म ही सृष्टि् में सत्य स्वरूप रे।
साहिब जी : आत्म शक्ति शरीर संचालन में खोई रे।।

438 आत्म स्वयं का भेद ना पाये प्यारो, मूल धर को भूली बैठी रे।
नर तांहि कारण असंतुष्ट प्यारो, अशांत आशा तृष्णा में खोया रे।
साहिब जी : ताते पड़ गयो धूर रे।।

13 सुरति खेल

439 'वे नाम' पारब्रह्म का सत्यपुरूष संग प्यारो, दर्श किये महान ले जान रे।
अब सारे चार लोक चेतन सुरति धार प्यारो, महां नंदनवन हर ओर ले जान रे।
साहिब जी : वे आप ही वेदों का सार रे।।

440 राग़ द्वैष से पार प्यारो, निरपेक्षता शान्ति समदृष्टि जान रे।
निर्ममत्म अहंकार शून्यता प्यारो, द्वन्द हीनता निष्परिग्रह गुण जान रे।
साहिब जी : इन गुणों से ही संत महान जान रे।।

441 तप त्याग दक्षिणा व्रत प्यारो, यज्ञ छनद तीर्थ नियम वश में करते मत जान रे।
सत्संग में नित आने से प्यारो, दुखों का दूर होना जान रे।
साहिब जी : प्रेम प्रीत सुख की खान रे।।

442 औंकार जग भेजेया प्यारो, हम चली आये रे।
ना अपनी खुशी जग आये प्यारो, भक्ति रोग से साहिब पाये रे।
साहिब जी : उनकी कृपा से निजघर पायो रे।।

443 मरने की आकांक्षा भी ना रही, कृपन कभी मगत नांहि सब पकड़ खो गयी।
ना तूं ही रही ना मैं ही रही, एक दूजे में ही खो गये।
ज़रे ज़रे में वह समाया है प्यारो, उस का हर द्वार सुरति से खुल गया।
साहिब जी : अमृत ही अमृत बहता पी गये।।

444 काव्य : तन मन से खाली होना कैसे रे

मिटा रहा हूं में प्यारो, मन माया की पहचान झूठी रे।
निज को सार नाम से जग कर प्यारो, बिगड़ी बना रहा हूं अपनी रे।
नाम का तेरा आसरा लेकर प्यारे, दो जहां को ठुकरा रहा हूं रे।
सुरति सब्द में समा रहा हूं, सुरति निरति को एक कर रहा हूं रे।
आत्मां (सुरति निरति) को ''वे नाम'' सब्द की शराब पिला रहा हूं रे।
सुरति चेतन बनाने के लिये प्यारो, सुरति में सब्द कैमिकल मिला रहा हूं रे।
सुरति निरति को महां चेतन सुरति की प्यारो मंदिरा पिला रहा हूं रे।
खुद जग गया हूं प्यारो, ओरों को मंदिरा पिला के जगा रहा हूं रे।
सुरत कमल में लेने वह आ रहा प्यारो, मैं सुन्न हो गया हूं रे।
निजघर ले जाने को तैयार बैठा, अब आया के तब आया खोल डाला द्वार रे।
महां साग़र में समाने की प्यारो, तैयारी में रहता जागता हर पल हूं रे।।

445 साध से सिद्ध हो गया मैं, कि अपना आप ही बह गये।
अपना पराया सब मिटै, मरने जीने से हाथ धो लिये।
साहिब जी : मरने जिने से पार हो गये।।

446 परिभाषा दो जानने वालों में होती प्यारो, कुछ सच्ची कुछ झूठ ले जान।
अर्थात भक्ति हम भक्ति की प्यारो, व्याख़्या करते लो जान।
साहिब जी : सतगुरू संगति भक्ति परिभाषा ले जान।।

447 काम से कहना भक्ति नहीं प्यारो, ये तो केवल प्रेम रूप रे।
भक्ति दोनों से पार प्यारो, काम की परिपक्वता कर जाता रे।
साहिब जी : प्रेमी प्रेम के कारण काम में जान रे।

448 पीतल सोना नहीं प्यारो, पर सोने के समान ले जान रे।
सतगुरू प्रेमी प्यारो, उस के प्रति प्रेम भक्ति जान रे।
साहिब जी : सतगुरू भक्ति की महिमां महान रे।।

449 तुम समझो भी प्यारो, ना समझा छोड़ो ले जान।
उस के प्रति ही प्यारो, सब कुछ उस से आया जान।
साहिब जी : वे ही दृष्टा वे ही दर्शक ले जान।।

450 प्रेम से महां प्रेम की ओर प्यारो, वहां केवल प्रेम ही जान।
सतगुरू की ओर चल प्यारे, निर्भर प्रेम शुद्ध मत जान।
साहिब जी : ईक सतगुरू ही मोक्ष दाता जान।।

451 कलह तड़पना मन से प्यारो, सब्द से इन्हें दो डार रे।
स्वांस स्वांस सिमरो सब्द प्यारो, पहुंच जाओ निजघर द्वार रे।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं पाओ मोक्ष द्वार रे।।

452 स्वांसा को सब्द सुरति में प्यारो, छुपा के रखना जान रे।
योग साधना सिमरन से प्यारो, सब्द सुरत कमल में लय करना जान रे।
साहिब जी : निज को निज में समाया जान रे।।

453 जाग्रत अवस्था सुरति सूं प्यारो, पृथ्वी जल में लय करना जान रे।
स्वपन्न अवस्था सहित प्यारो, अग्नि में जल लय करना जान रे।
साहिब जी : सुशुप्ति में अनि वायु में लय करना जान रे।।

454 तुरिया अवस्था में प्यारो, वायु आकाश में लय करना जान रे।
पंच शब्द से प्यारो, पंच तत्व लय होते जान रे।
साहिब जी : लय योग साधना कहलाती जान रे।।

455 यह धन–मन मान की जड़ प्यारो, बारम्बार इस पर करो विचार रे।
धनवान बेटे से डरते मात पिता प्यारो, व्यथित चिंतित रहते व्यर्थ रे।
साहिब जी : बेटे का सामना करना कठिन जान रे।।

456 धन अपने–पन को तोड़ देता प्यारो, धन से मन राज़ी मत जान रे।
प्रेम सत्य आनंद की झलक कहां प्यारो, मान ही हर ओर दिखता जान रे।
साहिब जी : मान से दुखी सारा जहान रे।।

457 कौटि नाम संसार में प्यारो, मुक्ति फल देते मत जान रे।
''वे नाम'' सब्द गुप्त जानो प्यारो, सुरति सूं पकड़ा जाये रे।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' सुरति चेतन करे महान रे।।

458 ''वे नाम'' सब्द पाया प्यारो, सब पाया जान रे।
सब पाया ''वे नाम'' सब्द ना पाया, सब पाया मान जान रे।
साहिब जी : जग में सब मान में डूबे जान रे।।

459 जो चेतन सुरति पावे प्यारो, सब सधे ले जान रे।
सब सधे ईक नाम बिन प्यारो, मन मान ना छूटा जान रे।
साहिब जी : काल का संग छूटा मत जान रे।।

460 वेद शास्त्र भागवत गीता पढ़ी प्यारो, मन चेतन ले जान रे।
काल पुरूष संतुष्ट प्यारो, काल से छूटा मत जान रे।
साहिब जी : सारा जग काल में ही उलझा जान रे।।

461 मन मान को मिटाना प्यारो, सुरति का चेतन होना जान रे।
बिन ''वे नाम'' सब्द के प्यारो, मन मान का मिटना मत जान रे।
साहिब जी : निज की तूं कर पहचान रे।।

462 प्रेम प्रेसी की हर बात मानता प्यारो, प्रीत चाँद चकौर समान ले जान रे।
निज की भूल जानो प्यारो, प्रेसी में ही अटका ध्यान रे।
साहिब जी : प्रेम में केवल निज को खोना जान रे।।

463 सतगुरू की महिमां प्यारो, उपलब्धि और अधिकार ले जान।
सतगुरू पास स्वयं की अनुभूति प्यारो, शिष्य को सौंपता ले जान।
धर्म ज्ञान में सतगुरू अधिकार से प्यारो, शिष्य को ज्ञान उपलब्ध होता जान।
साहिब जी : सतगुरू साहिबन तदरूप ले जान।।

464 ''वे नाम'' सब्द सतगुरू सूं मिलता प्यारो, निःअक्षर सब्द महांचेतन सुरति धारा।
सच्चा साधक उसे जान प्यारे, जिस पाया सब्द न्यारा।
साहिब जी : कोई विरला पाये सब्द न्यारा।।

465 सतगुरू समाना शिष्य में प्यारो, शिष्य की सुरति में चेतन सुरति वे।
चेतन सुरति धारा में प्यारो, आप समाया वे।
साहिब जी : तीनों मिल बने त्रिधारा वे।।

466 आत्म सतपुरूष का अंश प्यारो, काल भगवन का अंश मत जान।
आत्म अंश अगम अरूप अनामी प्यारो, अविनाषी पुरूष अंश महान।
साहिब जी : सतपुरूष महांचेतन सुरति सूं पार ले जान।।

467 जग में सतगुरू आने से प्यारो, सत्य की खोज की प्यास जगती जाये रे।
मनुष्य होने का राज़ प्यारो, सत्य होना ही जग में आना जान रे।
साहिब जी : मैं कौन कहां से आया कहां जाना जान रे।।

468 औंकार अपनी माया से मनुष्य में, अंधकार आलस्य तमोगुण प्रकटाये ले जान।
संग कर्म अर्थात रजौगुण प्यारो, मनुष्य भीतर प्रकटाये ले जान।
साहिब जी : उपद्रव कामनाओं का संग ले जान।।

469 औंकार भगवन नर को प्यारो, तम और रज की ओर लिया ले जान।
महात्मां में राजसिक तामसिक प्यारो, सत्य की ना करता पहचान।
साहिब जी : व्रत्त आदि में रहता उलझा जान।।

470 तामसिक मानस भाग्य को मानता प्यारो, मेहनत परिश्रम से दूर ले जान।
राजसिक भाग्य को मानते प्यारो, कर्म में हर पल रमे ले जान।
साहिब जी : भाग्य से कर्म बचाव ले जान।।

471 पांडे पुजारी पादरी मौलवी पाई, निज को ईश्वर के प्रचारक मानते ले जान।
धन पा सिफारिश का लौभ देते प्यारो, अपना अपना धन्धा चलाते ले जान।
साहिब जी : मांग पूरी होने को आश्वासन देते ले जान।।

472 सत्य भक्ति जगत से खोई प्यारो, ये संसार अभागा ले जान।
मन भ्रम जाल के खेल प्यारो, कर्मों का खेला हर ओर ले जान।
साहिब जी : कर्मों से बंधा सारा जगत ले जान।।

473 'मन' ही औंकार भगवन ईश्वर खुदा प्यारो, हर ओर जीव में वासा जान रे।
अज्ञानी नर भेद ना जाने, जन्म जन्म से भूला जान रे।
साहिब जी : कालपुरूष ही औंकार तूं इसे जान रे।।

474 तीर्थ जाते चित्त चंचल मन भाव प्यारो, दोनों आत्म को भ्रमाते जान रे।
पाप एको काटा मत जान प्यारे, संग में आते अनेकों और रे।
साहिब जी : आत्म मन माया के बंधन में जानो रे।।

475 चलते बैठते सुरत सब्द के ध्यान में प्यारो, मन साथ छूटा जान रे।
पारस नाम जब साथ प्यारो, काल का संग छूटा जान रे।
साहिब जी : मन तरंग से पार होना जान रे।।

476 हर बार सुमिरन सुरति सूं प्यारो, काटे मोह माया बंधन जान रे।
छूटे बंधन ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से उस पार होना जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही उतारे भव पार रे।।

477 मोटे बंधन मन मान के प्यारो, सतगुरू सब्द से कटते जान रे।
थोड़ा सुमिरन सुरति सब्द सूं प्यारो, प्रेम भक्ति जगाती जान रे।
साहिब जी : कांटे से कांटा निकालना जान रे।।

478 सतगुरू बड़े साहिबन से प्यारो, सुरति सूं कर तूं ध्यान रे।
साहिब सुमिरे बात बने ना प्यारो, सतगुरू सुमिरो तो पार रे।
साहिब जी : जो सतगुरू सुमिरे सोहि पार रे।।

479 जितने नशे मन मान के प्यारो, उतारे ''वे नाम'' सब्द की दात रे।
''वे नाम'' सब्द खुमारी 'वे नाम' की प्यारो, चढ़ी रहे दिन रात रे।
साहिब जी : सुख साग़र में रहुं दिन रात रे।।

480 जहां जहां सुरति डौले प्यारो, करे प्ररिक्रमा काम महान।
जो कुछ करो सुरति सूं प्यारो, सो दास की सेवा जान रे।
साहिब जी : सोवत जागत दण्डवत में जान रे।।

481 ''वे नाम'' सब्द से सुरति जागी, मन मान वासना त्यागी रे।
स्वांस स्वांस में सुरति ना टूटे, ऐसी सुश्मिन में ताड़ी लागी रे।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा (तुरिया अवस्था) की ताड़ी लागी रे।।

482 ईक हंसा की सुरति जग जाई, सतपुरूष भेद पा जाई रे।
विहंगम चाल दे जाई, संग अपने निजघर ले जाई रे।
साहिब जी : सुरति महांचेतन से बात बन जाई रे।।

483 पहला दर्शन साहिबन का प्यारो, हंसा संग सौलहं सूर्य की ज्योत संग जान।
रचना बाहिर प्यारो, 'वे नाम' देस महान ले जान।
साहिब जी : विहंगम चाल सूं निजघर ले जान।।

484 पारस सुरति बिन बात बने ना प्यारो, सतगुरू बिन तरई ना कोई।
मन मान छूटे पल में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन करि जाई।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष की दात जब मिलि जाई।।

485 सतगुरू अमृत की ख़ान प्यारो, पारस सुरति से करते कल्याण रे।
कौटिन जन्म का पथ हैं काटते प्यारो, महांचेतन सुरति दे करते कल्याण रे।
साहिब जी : सतगुरू की सुरति महिमां महान रे।।

486 मन की शक्ति अज्ञान प्यारो, अंधकार अज्ञान की उत्पति जान रे।
आकाश तत्व सुन्न अंधकार प्यारो, इसी में मन समाया जान रे।
साहिब जी : मन के बाण महान रे।।

487 मन के पांच बाण प्यारो, काम क्रौध लोभ मोह और अहंकार रे।
मन का बंधन भी अज्ञान प्यारो, आने और जाने का खेल जान रे।
साहिब जी : जग आने जाने का खेल महान रे।।

488 आत्म जाने बिन प्यारो, सत्यपुरूष जाने जाते नाहिं।
आत्म सुरति निरति धार प्यारो, मन बिन आत्म नाहिं।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात बिन मन मान छूटे नाहिं।।

489 स्वांस स्वांस के साथ साथ प्यारो, सब्द सुरति संग भीतर जाओ बाहर आओ रे।
इसी स्वांस में ''वे नाम'' सब्द प्यारो, अर्द से उर्द में सारी परिक्रमा जान रे।
साहिब जी : इसी स्वांस सब्द सुरति में सुरत कमल धाम रे।।

490 मन मान का संग गयो प्यारो, आत्म से हंसा रूप पायो जान रे।
अब तुम वह नहीं रहे प्यारो, जिस में मन और मान रे।
साहिब जी : सच्चा प्यारा हंसा रूप पाया जान रे।।

491 परम शुद्ध निजरूप प्यारो, पल पल में पाया जान रे।
सतगुरू की कृपा बरसी प्यारो, निज को चेतन धारा में बहता जान रे।
साहिब जी : लाखों जन्म का बंधन छूटा जान रे।।

492 सच्चा साधक सब पा जाता प्यारो, जब भरौसा विश्वास जगता ईक साथ रे।
शब्द शास्त्र संप्रदायः से पार प्यारो, जात धर्म ईक साथ खोये जान रे।
साहिब जी : सुरति सतपुरूष सूं चेतन होती जान रे।।

493 अब मन के चलाये तन ना चले प्यारो, अब तन सुरति की करता पहचान रे।
मन स्वार्थी मूल सुरति में वास करे, अंदर सुरति निरति का वास रे।
साहिब जी : सुरति निरति चेतन सुरति धारा रे।।

494 गौता मार सिंधु में प्यारे, मोती संग साथ लाये रे।
वह तो खाली जायेगा प्यारो, जो किनारा छोड़ ना पाये रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से बात बन जाये रे।।

495 ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, सांचा सेवादार कोई पाये।
सिर उपर मन मान सहे, तो ही वह सतगुरू का होये।
साहिब जी : चोट पे चोट मन की खाये।।

496 संतोषी सुख है पावता, बनता सेवक परम सुझान।
भूख प्यास खो जाती प्यारो, नींद में भी जागा जान।
साहिब जी : चाल से हर एक की करता पहचान।।

497 निजधाम में प्यारो, कमी काहु की मत जान।
दुखी हो जो सेव कमाये, चूक चाकरी के माहिं जान।
साहिब जी : संतोषी साधक जान अति महान।।

498 प्रीत पुरानी कभी ना होत प्यारो, जे सतगुरू सूं लागी जान।
जो पत्थर साग़र में रहे, कठोरता ना छूटे जान।
साहिब जी : सच्चे प्रेम की महिमां अत्यंत महान।।

499 प्रेम प्रीत हर ओर संसार में, टूटे और जुड़े सौ सौ बार।
सच्ची प्रीत सो ही जानिये, जो ले चले साहिबन द्वार।
साहिब जी : प्रेम प्रीति से पाओ साहिबन दरबार।।

500 ''वे नाम'' सब्द मोक्षदायी प्यारो, पंच तत्व त्रिगुणि दोषों से पार ले जान।
सतगुरू आत्म रक्षक मुक्ति दाता प्यारो, तीन पांच पच्चिस पिंझरे से पार ले जान।
साहिब जी : सतगुरू ही सत प्रेम आनंद का दाता ले जान।।

501 सतगुरू 'वे नाम' कहत प्यारो, जीव पुकार पे पुकार अज्ञान में करता रे।
जीव व्रत्त उपवास बंधन में फंसा प्यारो, काम कल्पनाओं में देत पुकार रे।
साहिब जी : काम क्रौध मोह में जीव अटका जान रे।।

502 तीन लोक कल्पनाओं का जाल प्यारो, स्थूल सूक्ष्म दोनों में फंसा जान रे।
अज्ञान में हर जीव प्यारो, ज्ञान अज्ञान के मध्य में फंसा लो जान रे।
साहिब जी : अनुमान से चारों वेद रचना जान रे।।

503 जीव निज को जान प्यारे, औंकार ईश्वर को जान रे।
ईश्वर आत्म अनुमान प्यारो, आप ही ब्रह्म होये आत्म निष्चय को जान रे।
साहिब जी : सो जल धरनी अमर प्रकासा जान रे।।

504 सभी आत्म में प्यारो, औंकार भगवन समाये ले जान रे।
तांहि से सब शरीर प्यारो, विकार उपझे उनका अधिष्ठा ले जान रे।
साहिब जी : यह सब 'मै' के कारण जान रे।।

505 सतगुरू सुमिरन ध्यान से प्यारो, तीन लोक से पार जान रे।
संतन जानें सच्चे भेद को प्यारो, सुरति ध्यान में रहते हर पल जान रे।
साहिब जी : महां प्रलयः में सब खो जाता जान रे।।

506 साधक सतगुरू की पहचान प्यारो, जग से भिन्न ले जान रे।
तीन लोक से भिन्न पसारा प्यारो, आओ चलें सच्चे घर द्वार रे।
साहिब जी : सुरति चेतन से जाओ साहिबन दरबार रे।।

507 महांप्रलयः में प्यारो, तत्व गये शब्द भी गये जान रे।
चेतन सुरति ही हर ओर प्यारो, पंच तत्व का संग छूटा जान रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू एक ना पार जान रे।।

508 पारस सुरति संग अति महान प्यारो, विहंगम चाल मिल जाती रे।
खावत पीवत सोवत जागत प्यारो, महांचेतन सुरति में रहयो समाई रे।
साहिब जी : अब ना छूटे साहिबन संग जान रे।।

509 तोहे दात मिले मोहे तेरा भेद मिले प्यारो, मैं तोही माहिं समाना जान रे।
'मै' (औंकार) मेरा अज्ञान रूप प्यारो, तेरा ज्ञान रूप अति महान रे।
साहिब जी : सुश्मिना में औंकार वास जान रे।।

510 'मैं' (औंकार) मन रूप प्यारो, चित्त बुद्धि अहंकार मेरे अंग जान रे।
'मैं' ही पल पल भरमाता प्यारो, सुश्मिना पार ना जाने देता जान रे।
साहिब जी : तीन लोक का राजा कहलाता जान रे।।

511 निरालम्भ राम जी सब में प्यारो, हृदय में सुरति स्वांसा में निरति जान रे।
जीवन का अधिष्ठान प्यारो, ईक निरालम्भ राम जान रे।
साहिब जी : सुरति तरंग बिन जग रोग जान रे।।

512 तन–बिन आत्म हंसा प्यारो, और कुछ भी सत्य मत जान रे।
सतगुरू 'वे नाम' हो आया प्यारो, अमरपुर साहिबन सच्चे देस से रे।
साहिब जी : आओ चलो निज हंसा देस रे।।

513 तीन लोक में प्यारो, सच्चे से झूठा भया जान रे।
चेतन्य से जड़ हुआ प्यारो, हंसा से ब्रह्म लेप जान रे।
साहिब जी : निजघर से संग टूटा जान रे।।

514 शब्द सतगुरू चित्त चेला जानो प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सुरति साधक जान रे।
हर युग में संत आते जगत में प्यारो, तैयार खड़े को संग ले जाते जान रे।
साहिब जी : कुछ प्यारे घाट बनते जान रे।।

515 यह मेरी सत्त सुरति की नाव, 'वे नाम' सतगुरू पार लगावें रे।
जीवन से परम जीवन को प्यारो, सतगुरू धार ले जावे रे।
साहिब जी : सतगुरू में दक्षता सुरति जान रे।।

516 सार नाम नहीं ह्रदय धरा, रहे काग़ा का काग़ा रे।
सार नाम नहीं सुरति धरा, कैसे फिर तूं जागे रे।
साहिब जी : पशु समान नर लागे रे।।

517 काल का जीव सत्य पावे नहीं, असत्य का संग जावे मत जान।
दास ''वे नाम'' सब्द की पुकार पर पुकार रे, जीव काल का संग छुड़ा ना पावे रे।
साहिब जी : पूर्ण को पूर्ण से पाने की चाह गई

518 भक्ति ध्यान से प्यारो, मन माया का परदा, सुरति से हट जाये रे।
काम क्रोध लोभ मोह का कीचड़ प्यारो, घुलता ही चला जाये रे।
साहिब जी : सत्यपुरूष गुण वृत्तियां भीतर आ जाये रे।।

519 सतपुरूष महांसाग़र प्यारो, ''वे नाम'' सब्द भी उन्हें ले जान।
जा में आन समाया ''वे नाम'' सब्द, वह भी महांसाग़र ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू साहिबन में भेद मत जान।।

520 निरालम्भ राम 'वे नाम' एक है प्यारो, बोल तोल में भी एक।
दोई कर सोई जाने, जे 'वे नाम' सतगुरू मिला ना एक।
साहिब जी : एक में ही जानो अनेक।।

521 औंकार का प्यारा औंकार सा, भेद ना जानो कोये।
जैसे तरंग साग़र की प्यारे, फिर फिर साग़र में खो जाये।
साहिब जी : सोया जीव जन्म मरन में फिर फिर खो जाये।।

522 बिन काया औंकार से बात ना, शब्द बोल काया के भाई।
गुरू में आप समायो करतारा, सोया नर भेद ना पाई।
साहिब जी : जागे तो बात बन जाई।।

523 गुरू रूप में प्यारा रूप धार आया, गुरू पदकुण्झ कृपा सिंधु नर रूप औंकारा।
सब सेवक सेवा में रहें, स्वांस स्वांस में औंकारा।
साहिब जी : अंग संग पाओ औंकारा।।

524 आत्म राम देह धरि आयो, तन मन हरि का रूप।
कहते 'वे नाम' जगत को, ''वे नाम'' सब्द ही साहिबन सुरति रूप।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही जानो साहिबन रूप।।

525 तीर्थ व्रत्त कर्म काण्ड में प्यारो, इन क्रियाओं में हर नर उलझा ले जान।
''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, फिरि फिरि काल में लौटे ले जान।
साहिब जी : जीवन मिथ्या माया ले जान।।

526 सुरति सूं सिमर ले ''वे नाम'' सब्द, सच्चा सतगुरू ले आया जान।
तन मन की तड़प छूटे, ''वे नाम'' सब्द सतगुरू महिमां ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू महिमां तूं जान।।

527 हर नर सुंदर सजल सुरतिवान, जैसे कमल का फूल।
भक्ति करे सुरति निरति चीन्ही के, चले संग तुम्हारे कुल।
साहिब जी : संतन संग चले निजघर पूरा कुल।।

528 'वे नाम' सतगुरू सूं प्रेम करो, सब्द सुरति में लो बसाये।
मनुष्य जन्म दुर्लभ प्यारो, ''वे नाम'' सब्द पूर्ण मोक्ष दे जाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से निजघर जायें।।

529 'वे नाम' पायें सतलोक को जायें, परमहंसों को अंग संग पायें।
अमृतपान करें तहां पर, सतपुरूष को अपने अंग संग पायें।
साहिब जी : काल जाल सब छूटा जाये।।

530 पूर्ण सतगुरू का संग करो, कमल फूल चरणों में ध्यान।
विरह वैराग़ से प्रेम जागे, सुरति निरति सब्द से ध्यान।
साहिब जी : सब्द छुड़ाये मन मान अभिमान।।

531 आनंद होत सदा निजघर में, जहां से हंसा आये जान।
सतपुरूष ही कर्ता उस घर में, पल पल देते पुकार ले जान।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' की सुनो पुकार महान।।

532 जब तक विरह ना उपझे, हृदय ना उपझे सच्चा प्रेम।
तब लग सुरति ना जागे, काम ना आवें धर्म व्रत नेम।
साहिब जी : सुरति निरति सब्द ही सच्चा नेम।।

533 ''वे नाम'' सब्द सूं प्रतीती करी, प्रेम की पकड़ी डौर।
सुरति सब्द दर्पण देखिये, मल से कौसों दूर है डौर।
साहिब जी : छोड़ो छल कपट की डौर।।

534 अज्ञान वश अहंकार का, नर जानो शिकार।
हीरे की पहचान नाहिं, फैंके चारों ओर।
साहिब जी : सतगुरू को सौंपों तुम डौर।।

535 फ़कीर को कल और कल की प्यारो, परवाह होती जान रे।
लोक और परलोक प्यारो, तुच्छ समान ले जान रे।
साहिब जी : सारा जगत तुच्छ ही जान रे।।

536 ''वे नाम'' दात सुरति बिन प्यारो, कोई भी बात विचारो मत ले जान रे।
अपना रूप खो जाता प्यारो, साहिबन रूप में समा जाता रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं साहिबन समा जाता रे।।

537 'सार सब्द' में मग्न होने से प्यारो, काम क्रौध अहंकार का संग छूटा ले जान।
सुरति में साहिबन ज्योत जगे, स्वांस स्वांस में उनका वासा ले जान।
साहिब जी : सब्द स्वांसा में वासा करे ले जान।।

538 साहिबन प्यारा शांत ऐकांत में प्यारो, वास करता ले जान।
नेत्रों में ज्योति साहिबन की, स्वरूप में चमक ले जान।
साहिब जी : मन पर हर पल स्वार ले जान।।

539 संगति करो 'वे नाम' प्यारे की, जिस पाई ''वे नाम'' दात साहिबन सूं आप।
पल पल सुरति चेतन भयी, जब पाये संग साहिबन आप।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द संग साहिबन आप।।

540 संगति सुरत सब्द की प्यारो, कभी ना निष्फल होई।
चंदन बन चंदन करे, शेष बचे ना कोई।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं चाह बचे ना कोई।।

541 सतपुरूष रूप 'वे नाम' प्यारो, फल रूपी विरह वैराग़।
साया रूपी संग साथ हैं, प्रेम भक्ति जगावे विरह वैराग़।
साहिब जी : भक्ति की पहली सीढ़ी विरह वैराग़।।

542 ''वे नाम'' सब्द सूं प्यारो, पूर्ण मोक्ष का संग साथ।
विश्वास भरौसा सब काम करे, ले चले निजघर संग साथ।
साहिब जी : तजो वाद विवाद ईक साथ।।

543 'वे नाम' तन का संग छूट जायेगा, जागन की ओर चल भाई।
कर संगति 'वे नाम' की, जो साहिबन के गुण गाई।
साहिब जी : 'वे नाम' सुरति सूं साहिबन महिमां गाई।।

544 कर संगति 'वे नाम' साध की, सतगुरू चेतन सुरति करे ईक धार।
दुर्मति दुर्भाग्यवासी, बरसी सुमति प्रेम ईक धार।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम प्रीत की धार।।

545 प्रेम बिन प्यासा जीवना, भक्ति बिन ना सतपुरूष का संग।
मन मान सूं सुरति मैली भयी, मैल छूटे जब मिले सतगुरू संग।
साहिब जी : सतगुरू मिले तो चढ़े प्रेम प्रीत रंग।।

546 कौटिन यत्न जे करे कोई, काग़ा से हंसा मत ले जान।
''वे नाम'' सब्द के संग से, काग़ा भी हंसा होत ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं आत्म हंसा होत ले जान।।

547 ''वे नाम'' सब्द ना मिलने के कारणे, हर नर हुआ उदास।
''वे नाम'' सब्द को पा ले, सतपुरूष जी पल में तेरे पास।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं साहिबन तेरे पास।।

548 सुमिरन संगीत ''वे नाम'' सब्द बिन, इक ना जानो उस पार।
सतगुरू संगति पाई ले, जो ले चले साहिबन दरबार।
साहिब जी : सतगुरू संग चलो साहिबन दरबार।।

549 जब लग सुरति सूं सुरति चेतन नाहिं, सिमरन संग जुड़े ना तार।
'वे नाम' सतगुरू सार नाम बिन, अपराध तोड़े सुरति तार।
साहिब जी : सतगुरू सुरति करावे भवसाग़र पार।।

550 विषय वासना लोभ त्याग दे, कर ले सतगुरू सेव।
उनके चरणों में शीष धरो, सेव से उपझे सब मेव।
साहिब जी : सतगुरू चरणन सेव से ही पाओ तुम मेव।।

551 भक्ति और सत्संग में, जागे सुरति भेद महान।
दुर्लभ पूर्ण संत संसार में, देवें पद निर्वाण।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू महिमां महान।।

552 जैसे चंदन बन चंदन करे, बांस बांस से रोका जाये।
''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन करे, जब सतगुरू संगति पाये।
साहिब जी : सतगुरू संगति मोक्ष पायें।।

553 चेतन सुरति का फल मिलता, सतगुरू चरणन में शीष झुकाई।
दुर्लभ इस संसार में, सतगुरू सत समागम भाई।
साहिब जी : सतगुरू में चेतन सुरति समाई।।

554 सुरति हर नर की अस्थिर प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति में दो समाये।
पल पल सुरति चेतन भयी, उसी में रहो तुम समाये।
साहिब जी : अग़म पथ लखाये।।

555 सतगुरू सुरति सतपुरूष समाना, 'वे नाम' सब में 'वे नाम' को जान।
सतगुरू के सुमिरन मात्र से प्यारो, विघ्न अनंत शांत ले जान।
साहिब जी : सुख शांति के संग महान।।

556 तीन लोक में दुख बिन कुछ ना, आनंद से युक्त अमरलोक महान।
'वे नाम' सतगुरू उस लोक सूं आया, खबर उसकी देता ले जान।
साहिब जी : अमरलोक ही सच्चा लोक ले जान।।

557 भय से लेन ना देन प्यारो, यह तो दुख का मूल।
जो कोई इस सूं पार प्यारो, जागना सुख का मूल।
साहिब जी : प्रेम भक्ति ही सुख का मूल।।

558 नूना दास कबीर ने, बचा खुचा सो सूर।
बीन बाण तुलसी लिया, अब बीने सो कूर।
साहिब जी : कूर से उपझे नूर।।

559 सतगुरू सोहि जानो प्यारे, जो शिष्य को सब कुछ देय।
चेतन सुरति से सुरति चेतन करे, प्रेम भक्ति भी देय।
साहिब जी : शिष्य सतगुरू को सर्वस्व न्योछावर कर देय।।

560 औंकार कौटि ब्रह्मण्ड का मालिक प्यारे, सुन्न महांसुन्न ले जान।
'वे नाम' अनंत की बात करे, अमरपुर भेद उसी सूं ले जान।
साहिब जी : सब हंसों का सच्चा घर अमरपुर ले जान।।

561 सत्यलोक बिन पंच तत्व प्रकासा, तहां ना विषय विकार रे।
तन मन का काम तहां ना, नाहिं देवी देव वासा रे।
साहिब जी : काल जाल से हर हंसा पार रे।।

क सिद्ध साद्ध त्रिदेव आदि, पंच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मूंह लटके।
साहिब जी : इस जग में सब ही भटके।।

562 बावन अक्षर रचा संसारा, निःअक्षर अमरलोक पसारा।
अक्षर से माया विस्तारा, निःअक्षर से चेतन सुरति धारा।
साहिब जी : निःअक्षर सूं पाओ अमरलोक प्यारा।।

563 शब्द शब्द मन मान प्यारो, निःअक्षर सब्द विदेह।
मुख से बोला ना जावे, सुरत सब्द विदेह।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द सुरति धारो निसंदेह।।

564 ''वे नाम'' दात में सतपुरूष जी वासा, सुरति सूं पकड़ा ले जान।
प्राकृतिक शब्द भाव प्रकटाये, सार सुरत सब्द निःतत्व महान।
साहिब जी : सार सुरत सब्द की महिमां लो जान।।

565 पांच तीन काया में वासा, सुरति धारा सब्द विदेह।
सुरति डौर विदेह दरसावे, सतगुरू 'वे नाम' पास दात विदेह।
साहिब जी : सतगुरू सूं पाओ दात विदेह।।

566 भंवर गुफ़ा में अनहद झण्कार प्यारो, शब्द से पकड़ी जाये।
सिद्ध साधु पार ना पावत, ''वे नाम'' सब्द सुरति डौर कहाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही पार लगाये।।

567 निगुर्ण सगुण लक्ष्ण देह के, गुप्त निर्गुण ले जान।
भौतिक सगुण प्रकटाये प्यारो, निर्गुण भीतर ले जान।
साहिब जी : सगुण निर्गुण निरंकार महिमां तूं जान।।

568 विषय विकारों की ज्वाला में प्यारो, शरीर जलता ले जान।
आत्म बेकार अज्ञान वश प्यारो, ज्वाला में जलने को बैठी ले जान।
साहिब जी : तन मन का बेकार संग ले जान।।

569 हंसा शरीर को त्यागी चले, तन मन खाली ले जान।
''वे नाम'' सब्द जब संग प्यारो, मानसरोवर पहुंचा ले जान।
साहिब जी : सुरति की शुद्धि का काम महान।।

570 ''वे नाम'' सब्द सुहागा प्यारो, आत्म परम चेतन करता ले जान।
रज वीर्य पानी के बुलबुले समान, तन में मस्त फिरता ले जान।
साहिब जी : रज विरज का भक्ति में महान काम ले जान।।

571 अमरलोक नाहिं धरती आकाश प्यारो, चांद सूर्य प्रकाश तहां मत जान।
ब्रह्मां विष्णु शिव तहां ना प्यारो, तहां दस अवतार का वासा मत ले जान।
साहिब जी : आद्य ज्योति तहां ना निरंझन वासा जान।।

572 निरंकार आकार तहां ना, तहां बावन अक्षर विस्तारा मत ले जान।
नाद अनहद शब्द तहां ना, तहां धरति अग्नि प्रगासा मत ले जान।
साहिब जी : हद अनहद से पार ले जान।।

573 सतपुरूष पूर्ण से पूर्ण प्यारो, सब विधि पूरा जान।
'वे नाम' सतगुरू बिन भेद ना प्यारो, 'वे नाम' सूं भेद तूं जान।
साहिब जी : 'वे नाम' भेदी से तुरंत भेद ले जान।।

574 काया मध्य सार प्यारो, स्वांस सुरति सार महान।
सुन्न से श्वांसा उठत प्यारो, नाभि दल में समाना जान।
साहिब जी : सुरति सूं पकड़ना काम महान।।

575 पवन का पलटना प्यारो, सुन्न में घर सवा हाथ उपर ले जान।
घर में साहिबन प्रकटें प्यारो, त्रिकुटि मध्य सतगुरू लोक ले जान।
साहिब जी : सतगुरू कृपा से ही सब जान।।

576 सत्य भक्ति में प्यारो, कमाई का कोई महत्व मत ले जान।
कमाई तीन लोक का खेल प्यारो, अमरलोक से लेन ना देन।
साहिब जी : सतगुरू निरंझन से पार ले जान।।

577 हरि कृपा तीन लोक में राखे, सतगुरू कृपा तीन लोक से पार।
सतगुरू अपने में समा कर प्यारो, ले चलें साहिबन द्वार।
साहिब जी : सतगुरू संग पाओ साहिबन दरबार।।

578 ''वे नाम'' सब्द मिला साहिब मिले, दुखों का संग छूटा ले जान।
मन माया का संग छूटा, चेतन सुरति में निज को ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द चेतन सुरति ले जान।।

579 स्वांसा के माध्यम से प्यारो, आत्म में समाति ले जान।
त्रिकुटि उपर सुश्मिना से प्यारो, दसवें द्वार तक ले जाना जान।
साहिब जी : दसवें द्वार से सुरत कमल ले जान।।

580 सुश्मिना खुलते ही प्यारो, नौ नाड़ी प्राण सुश्मिना में एकत्रित होते ले जान।
हमारा तन दस प्राण वायु आधार प्यारो, तन खाली होता ले जान।
साहिब जी : पल पल सुरति में रहे ध्यान।।

581 स्वांसा सुरति की धारा पर प्यारो, दसवें द्वार की ओर चलती ले जान।
मक्र तार का ये भेद प्यारो, सुरति हटी स्वांसा पुनः नाभी में ले जान।
साहिब जी : सुश्मिन की महिमां महान ले जान।।

582 सावधानी और एकाग्रता का प्यारो, खेल ये सारा ले जान।
पल पल स्वांसा का उपर प्यारो, सुरत सब्द संग जाना ले जान।
साहिब जी : सुरति से स्वांसा सब्द ईक करना ले जान।।

583 आनंद और भय का प्यारो, भेद ईक संग ले जान।
तन छूटा मन छूटा प्यारो, स्वांस रूप ही निज को जान।
साहिब जी : स्वांस स्वांस बसे सुरति महान।।

584 स्वांसा धीरे धीरे प्यारो, सुन्न में स्थित होती ले जान।
सुन्न खाली होते ही प्यारो, वायु पलटने का करती काम ले जान।
साहिब जी : जीवित मरने का खेल महान।।

585 चल हंसा निज देस प्यारे, साहिबन की सुन पुकार रे।
प्रेम सत्य आनंद का देस प्यारे, मृत्यु पसार संसार रे।
साहिब जी : ये झूठा संसार रे।।

586 प्राण अपान समान उदान प्यारो, संग में सर्व तन व्यायाम जान।
देवदेत किरकल जम्हाई प्यारो, नाग़ धनंजय से ले जान।
साहिब जी : इन दस प्राण वायुओं का खेल महान।।

587 मरने से हर नर डरता प्यारो, जागे की सुरति में आनंद।
पल पल मरता प्यारा साधक, पाता पूर्ण परमानंद।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष में परम आनंद।।

588 ''वे नाम'' सब्द मिला सतपुरूष मिले, सब पाया ईक साथ।
मन माया का संग छूटा प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू पकड़ा हाथ।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष पाया संग साथ।।

589 सतगुरू रक्षक का भेद प्यारो, पाया ना सच्चे का भेद।
मन भक्षक का ध्यान किया, संग छूटा सच्चा भेद।
साहिब जी : सतगुरू देते सच्चा भेद।।

590 लाखों शब्द नाम तीन लोक में, मुक्ति उनसे मत ले जान।
मूल नाम सतगुरू पास में, विश्वास श्रद्धा से मिलता ले जान।
साहिब जी : विश्वास की डौरी महान।।

591 जिन जिन संग किया सतगुरू का, जन्म जन्म का लेखा छूटा ले जान।
प्रेम प्यास सुरति में जागे, सत्य आनंद की वर्षा हुई ले जान।
साहिब जी : सतगुरू साहिबन संग ले जान।।

592 सत्यपुरूष सतगुरू रूप में आते प्यारो, जीवों का करने कल्याण।
'वे नाम' साहिब एक हैं प्यारो, कहन सुनन में दौये ले जान।
साहिब जी : सुरति सूं एको तूं जान।।

593 पंडित पढ़ते प्रतिदिन वेद पुराणा, बात बने ना उल्टि सुरति ध्याना।
वैराग़ी बन तिलक माला जपे, भेस भिखारी ध्याना।
साहिब जी : मूर्ती आगे मांगों का करते ध्याना।।

594 बाहरमुखि कर्मों में प्यारो, दया धर्म का भाव मत ले जान।
नर मूर्ख बाहर दौड़े, अंदर के पट बंद ले जान।
साहिब जी : अंदर के पट खोलना काम महान।।

595 जो ना कुछ बोले ना कुछ खाई, हर पल रहता तिलक लगाई।
हाथ पांव मुख काम ना करते, अपने आप की पहचान ना पाई।
साहिब जी : पाओ अपने आप की पहचान मेरे भाई।।

596 राम भजे राम बन जाई, ये तन कुछ काम ना आई।
पशु चमड़ी काम में आई, जानो नर केवल दुखदाई।
साहिब जी : बिन आत्म देह कुछ ना करे मेरे भाई।।

597 पाखंड से साहिबन दर्शन नाहिं, सतगुरू सेव से काम बन जाई।
''वे नाम'' दात सतगुरू सूं पावें, सुरति सब्द में आन समाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं सिमरा जाई।।

598 ग़रीब पर जो दया करे, जानो उन्हें उपकारी लोग।
सुदामा श्री कृष्ण मित्रता के प्यारो, कैसे कोई जाने योग्य।
साहिब जी : जानो इसे प्रेम प्रीत रोग़।।

599 आशिक संग डर नाहिं, आशिक संग डर जाये।
भय लज्जा दोनों गये, दोनों प्रेम में ईक हो जायें।
साहिब जी : तब पिया प्रेम सुहाये।।

600 प्रेमी सोहि निहारिये, जो सर्व सुरति का हेत।
महांचेतन सुरति चेतन का तीर चले, सब जागों में जागे हेत।
साहिब जी : प्रेम सुरति का बाण से जागन होत।।

601 प्रेम मार्ग टेढ़ा बड़ा, निरख परख के चढ़ ध्याणी।
ये खण्डे की धार प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू करें ब्खानी।
साहिब जी : सुरतिवान की बात लो मानी।।

602 तन मन लज्जा खोई के, सुरति सूं जागे प्रेम।
अंदर से विरह वैराग़ जागे, हर एक से एक सा प्रेम।
साहिब जी : जागा ही करे सब सूं प्रेम।।

603 प्रेम भक्ति जब सुरति बसे, सतगुरू चरणन अधीन।
हर ओर फूल खिल जात प्यारे, रहे चरणन लवलीन।
साहिब जी : सिमरन सुरति सब्द अधीन।।

604 सुरति रूपी धारा में प्यारो, मन मान का खेल गयो।
सुरति सब्द के जोड़ से प्यारो, पांचों चोरों का खेल गयो।
साहिब जी : काम क्रौध लोभ मोह अहंकार संग गयो।।

605 तेरे रिश्ते से है माज़ी, और इसी से मुस्तकबिल भी।
ईक चीज़ हैं दोनों, तूं समझता इन्हें दौ ही।
साहिब जी : ईक वर्तमान में रहना जानो जी।।

606 प्रेम भक्ति को पाई के, तन मन दीजै दान।
जो दान ना दे सके, सतगुरू चरणन में ध्यान।
साहिब जी : सुरत सब्द की महिमां महान।।

म नींद ना आवे विरह सतावे, प्रेम की आंच रूलावे।
बिन पिया जोत मंदिर अंधियारो, दीपक जोत ना भावे।
साहिब जी : पिया बिन कुछ और ना भावे।।

म दादर मोर पपीहा बोले, कोयल शब्द सुनाये रे।
गाजे बाजे पवन मधुरिया, मेघ अति झड़ लगाये रे।
साहिब जी : हर ओर भय आन सताये रे।।

607 प्रीत लागी मति गई मारी, कुछ समझ ना आवे जी।
किसे अपनी वेदना सुनाऊँ, कौन आन समझावे जी।
साहिब जी : मेरा पिया पुकार पे पुकार लगावे जी।।

608 प्रीत लगा कर प्यारी, मेरी मति गई है मारी।
क्या करूं कुछ समझ ना आवे, विरह नाग़िन काया डस डारी।
साहिब जी : प्रेम प्रीत में गई मति मारी।।

609 सतगुरू सुरति 'वे नाम' समाना, सिमर सिमर निजघर को जाना।
सतगुरू साधक की पहचान प्यारो, साहिब भी लेत पहचाना।
साहिब जी : हर पल सुरति सब्द में रहना।।

610 सतगुरू पारस परस हैं, आप ही अमृत महांसाग़र रे।
पल पल सुरति से संग करि, दौ से एक हो जाओ रे।
साहिब जी : सतगुरू साधक सुरति ईक हो जाये रे।।

611 सात द्वीप नौ खण्ड में, सतगुरू ते बड़ो ना कोये।
लाखों आये और गये प्यारो, 'वे नाम' सम ना कोये।
साहिब जी : वर्तमान में पूर्ण सतगुरू होये।।

612 एक बार साहिबन दर्श जो पाये, फिर पाने में देर ना लायें।
आप आवें दर्श दे जावें, संग अपने परमहंसा भी लायें।
साहिब जी : संग में अपने खेल खिलायें।।

613 ध्यान सुरति कृपा सतगुरू सूं प्यारो, आत्म को परमचेतन करती ले जान।
परम चेतना सतगुरू ना प्यारो, उनकी कृपा से अनुभूतियां होती ले जान।
साहिब जी : सतगुरू महिमां जान महान।।

614 मिटा दे मन मान को तूं अपने, अगर प्रेम भक्ति को है पाना।
ख़ाक हो जा सतगुरू चरणन में, अगर तुझे हंसा रूप को है पाना।
साहिब जी : अगर पूर्ण मोक्ष है पाना।।

615 सिद्ध साद्ध त्रिदेव भी प्यारे, दसवें द्वार तक रहें अटके।
तुरिया तुरियातीत को पार किया प्यारो, तो भी काल में ही रहे लटके।
साहिब जी : तन में ही रह गये अटके।।

616 सहज अवस्था सहज समाधि प्यारो, ''वे नाम'' सब्द बिन नाहिं बनती रे।
सहज सतगुरू 'वे नाम' प्यारो, 'वे नाम' से पाओ ''वे नाम'' दात रे।
साहिब जी : सहज सतगुरू संग सहज हो जाओ रे।।

617 तुम ही तुम्हारे हो प्यारे, जग ईक स्वपन्न जान रे।
मन मान तीन लोक विस्तार प्यारे, आशा तृष्णा मन भाव जान रे।
साहिब जी : निज को स्थिर ले जान रे।।

618 रिश्ते नाते झूठे बंधन, इनसे निज को दूर ले जान।
प्रेम की डौरी मत तुम छोड़ो, पास रह कर भी निज को दूर ले जान।
साहिब जी : निज को परिपूर्ण रखना जान।।

619 कोई ना जग में तेरा प्यारो, ना तूं किसी का रे।
ना कोई वैरी ना कोई अपना, संग रहकर भी कौसों दूर रे।
साहिब जी : सुरति चेतन से जोड़ो सुरति तान रे।।

620 संसार से मुक्त हो प्यारे, पूर्ण भक्ति का अधिकारी जान रे।
भीड़ से निज को मुक्त करना प्यारो, पूर्ण मोक्ष को पाना जान रे।
साहिब जी : निज की तूं कर पहचान रे।।

621 जग तो केवल स्वपन्न समान प्यारो, इस में कुछ सांचा मत जान रे।
भूल से फूलों को पा लिया, कृपा प्यारे की मान रे।
साहिब जी : धन्यवाद करना काम महान रे।।

622 निज आत्म का विचार है करना प्यारो, सुरति चेतन से बने सब काम रे।
जब निज पाहन प्यारो, जल में चांद समान दिखे निज अंदर आप रे।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द बने ना काम रे।।

623 आकाश समान र्निविचार बनो प्यारे, जाग कर भीतर झांक रे।
कौन हूं कहां से आया प्यारे, क्युं जग में आया तूं जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात करे सब काम रे।।

624 पूर्ण सतगुरू सूं प्यारो, निज की होत पहचान रे।
गीता कुराण पर ध्यान प्यारो, निज की ना होत पहचान रे।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा एक से जान रे।।

625 अपनी सुरति में रहना प्यारो, सतगुरू चरणों में झुकना जान रे।
शास्त्र काम भगवन का भेद देते, बस ''वे नाम'' सब्द से होत पार रे।
साहिब जी : सुरति जोत से कोई होत पार रे।।

626 सुरति में सतगुरू चेतन सुरति प्यारो, स्वांसा में डाल कर जानी रे।
विश्वास जग जाये जब प्यारो, महां चेतन रूप पास से पास रे।
साहिब जी : महांचेतन रूप साहिबन संग साथ रे।।

627 सूनी आंखों में चेतना प्यारो, सत प्रेम की जोत जग जाती रे।
आंसुओं की धारा में प्यारो, विरह अग्नि प्रेम ज्योत जगाती रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति ज्योत जगती जान रे।।

628 निराकार भगवन पिण्ड ब्रह्मण्ड, स्वर्ग नर्क दोई गांव बसाये रे।
पिण्ड में जीव का वासा प्यारो, ब्रह्मण्ड में ब्रह्म का वासा जान रे।
साहिब जी : यही औंकार भगवन की महिमां न्यारी जान रे।।

629 तेरी कल्पना प्यारे, ढूंढे कल्पनाओं की नाव रे।
ये तो कोई वस्तु नाहिं प्यारे, प्राप्त होती मत जान रे।
साहिब जी : 'वे नाम' दास ही सच्ची नाव रे।।

630 ब्रह्मण्ड में तूं ही ब्रह्म प्यारे, पिण्ड में तूं ही जीव जान रे।
स्वर्ग सुन्न तूं ही वासी प्यारे, नर्क वासी तूं ही होता जान रे।
साहिब जी : ये सब कल्पनाओं का खेल जान रे।।

631 वाणी शास्त्र पुराण उपनिष्द प्यारे, आये जाये यहीं पड़ी पड़ी जाये रे।
बिन सार सब्द की परख़ के प्यारे, सब स्वपन्न अवस्था जान रे।
साहिब जी : ये पिण्ड ब्रह्मण्ड ईक स्वपन्न जान रे।।

632 यही तन त्रिभुवन त्रिलोकि प्यारो, तन में लय–योग साधना से ब्रह्म रूप रे।
घंटा नाद अनहद ध्वणि प्यारो, तहं जीव मिले औंकार रूप रे।
साहिब जी : साधना मन को लय युक्त करे रे।।

633 धन्यवाद करने से फल मिलता प्यारो, शिकायत भूल कर मत करना रे।
मन की उपेक्षा से प्यारो, शिकायतें आती जाती जान रे।
साहिब जी : आकांक्षा ही दुख का कारण जान रे।।

634 यशु कहें, प्रभु ये क्या तुम दिखला रहे हो।
क्षमा मांगी और फिर कहा, तेरी मर्ज़ी ही पूरी हो।
साहिब जी : जो तुम कर रहे ठीक ही कर रहे हो।।

635 सुरति हटी दुर्घटना घटी प्यारो, विचारों की चट्‌टान करती अपना काम रे।
संकल्प सुरति सब्द श्वांसा से प्यारो, ज्वाला की लपटें बना देती रे।
साहिब जी : विचार ही ज्वाला लपटें उत्पन्न कर देते रे।।

636 कलह विवाद तकरार झगड़े प्यारो, मन का खेल ले जान।
सुरति सब्द की दात पा ''वे नाम'' सूं प्यारो, जाती पाती खो जाती रे।
साहिब जी : सहज होना ही काम महान रे।।

637 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, साधक सदा सचेत जान रे।
उठत बैठत दिन राती प्यारो, साधक जागा रहता जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां अति महान रे।।

638 सोया जग माया मग्न रहे, माया ही भावे दिन राती।
साधक सदा सचेत रहे, उल्टि मन की बात हो जाती।
साहिब जी : सुरति मन को मार मुकाती।।

639 काल निरंझन औंकार प्यारे, त्रिभुवन त्रिलोकि के रखवारे रे।
सतपुरूष सीमित संकुचित नहीं, वे तो चार लोकों में फैले रे।
साहिब जी : सतपुरूष सुरति कण कण में फैली रे।।

640 जोगी औष और अलष की अलख, लक्ष्य को ना पा सकें जान रे।
भगवन को सतपुरूष सम प्यारे, आकार में लाना पाप जान रे।
साहिब जी : सतपुरूष भगवन का रचियता जान रे।।

641 औंकार तीन लोक विस्तार प्यारो, सीमा में बांधना पाप आधार रे।
ना मंदिर ना मस्जिद में प्यारो, ना गिरजे ना गुरूद्वारे में जान रे।
साहिब जी : हर जीव में उसका वासा जान रे।।

642 वो रूप भी अरूप भी प्यारो, जैसे चाहो बन जाते रे।
अंदर बाहर विस्तारा उसी का, पल में अंग संग आ जाते रे।
साहिब जी : छोटे से छोटे और बड़े से बड़े बन जाते रे।।

643 मन आत्म का मेल ना, तो भी आत्म मन अधीन।
मन आत्म को रखा, लाखों जन्मों से पराधीन।
साहिब जी : मन तरंग में जग पराधीन।।

644 सतगुरू विदेह सब्द से पावे, नर साहिबन द्वार।
सुरति सूं कहें 'वे नाम' जी, सांचा विदेह सब्द हमार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति साहिबन दरबार।।

645 सब्द खुमारी ऐसे चढ़े, सुरति में आन समाये।
जन्म मरन की डौर भी टूटे, काल का संग मिटी जाये।
साहिब जी : काल का संग मिटी जाये।।

646 भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई, भक्ति आई गई बड़ाई।
सतगुरू चरण में दिन राती, तीर्थ तप व्रत छूट जाई।
साहिब जी : तीर्थ तप व्रत छूट जाई।।

647 स्वांस स्वांस निरति वासा प्यारो, उसी महांचेतन सुरति की धार जानो रे।
बिन ''वे नाम'' सब्द टूटी (नल) में, पानी किसी पल भी आना मत जान रे।
साहिब जी : सतगुरू सुरति स्त्रोत से नीर आता जान रे।।

648 अमरलोक से टूटी आई, हर तन में जल ले आई।
हर पल जल है बहता प्यारो, ज्योत को संग रखता जलाई।
साहिब जी : अमरलोक से अमर ज्योत हंसा आई।।

649 सतगुरू टूटी में बहते जल से भाई, ''वे नाम'' सब्द संग ज्योत जगा ले।
सुरति में चेतन जल धारा प्यारो, हर एक टूटी जल अमृत बना ले।
साहिब जी : अमृत जल से ईक्कतर पीढ़ियां अमर बना ले।।

650 टूटी जल–स्त्रोत से जुड़े बिन, जल कबहु ना देती जान रे।
''वे नाम'' सब्द की दात पाये बिन, मोक्ष ना कबहु मिलता जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द मोक्षदायी जान रे।।

651 व्याकुल स्वरों में प्यारो, व्याकुलता सुरति में रागनी जान रे।
ह्वदय में वेदना आंसुओं में प्यारो, कण्ठ से रूक रूक रागनी बहती जान रे।
साहिब जी : विरह में आंसू प्रेम धारा बनती जान रे।।

652 साहिबन सुरति स्वांसों का स्पर्श प्यारो, अपने स्वांसों में आ रहा रे।
पर दर्श इस प्रकार कहां प्यारो, ये ''वे नाम'' सब्द की धार में बहा रे।
साहिब जी : वो तो सुरति की धार की धार में रे।।

653 दास भक्त और सेवक, परम तत्व पा जाई।
तजि अभिमान आया मेटे, पपील चाल पा जाई।
साहिब जी : पपील चाल पा जाई।।

654 ''वे नाम'' सब्द निज औषधि, काटे मन माया के विकार।
'वे नाम' सतगुरू मिले तां पाईये, सच्ची भक्ति भेद अपार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जगावे सुरति अपार।।

655 'वे नाम' लिया तब जानिये, जे सुरति निरति में समाये।
स्वांस स्वांस में एक रस, सुरति सब्द में समाये।
साहिब जी : सुरति सब्द में समाये।।

656 कर्म भरम जग बांध्यो, छूटे ''वे नाम'' सब्द के मांहि।
सतगुरू कृपा से जागी मति, विष अमृत हो जाई।
साहिब जी : विष अमृत हो जाई।।

657 साहिबन अनन्य भक्ति मिली, पांचों अवगुण बह गयो।
काम क्रोध मद लोभ मोह की, पल पल पूजा भेद गयो।
साहिब जी : पल पल पूजा भेद गयो।।

658 हरिजन हरि प्रेम की जोत सूं, सच्ची भक्ति में होत प्रवेश।
कहे 'वे नाम' सोई जन निर्मल भयो, निस दिन अनुराग में प्रवेश।
साहिब जी : निस दिन अनुराग में प्रवेश।।

659 भक्ति ऐसी प्रिति रे, आई भक्ति गई बड़ाई हार ।
भक्त नाचे अरू गाये रे, गया सुरति सब्द सूं पार।
साहिब जी : गयो सुरति सब्द सूं पार।।

660 जा की भक्ति सतगुरू चरणों में, बड़े भाग ताई के जान।
तजि अभिमान मेटि आपा, पिपिल सम्मान चुनि खाता जान।
साहिब जी : पिपिल सम्मान चुनि खाता जान।।

661 जग में कीचड़ संग अमृत जल, जलहि सुद्ध होई जाये।
कमल खिला हर ओर है, सागर भी सुद्ध होई जाये।
साहिब जी : सागर भी सुद्ध होई जाये।।

662 तजि अभिमान आपा मिटे, हरि प्रेम से पार।
जप तप अजापा गया, पाप पुत्र संसार।
साहिब जी : पाप पुत्र संसार।।

663 जन्म जन्म हरि ठगया, मारना काटना रक्षा करना जान।
शोक त्याग धोखा बड़ा, ताई से अभिमान।
साहिब जी : ताई से अभिमान।।

664 सतगुरू को पल पल दण्डवत करो, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू कर ले आप समान।
साहिब जी : सतगुरू कर लें आप समान।।

665 साहिबा हरि के रूठते, गुरू की शरणी जाये।
कहें साहिब गुरू रूठते, प्रभु नहीं होत सहाये।
साहिब जी : प्रभु नहीं होत सहाये।।

666 गुरू गुरू में भेद है, गुरू गुरू में भाव।
सोई सतगुरू नित्य बंधिये, सब्द बतावे दाव।
साहिब जी : सब्द बतावे दाव।।

667 सतगुरू मोर शूरमा, कसकर मारा नाम का बाण।
नाम ही सुरति समा गया, पाये पूर्ण मोक्ष का दान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष का दान।।

668 सतगुरू बड़े सत्यपुरूष सूं, सुरति का खेल ले जावे पार।
साहिब सुमिरे सो वार है, सतगुरू सुमिरे सो पार।
साहिब जी : सतगुरू सुमिरे सो पार।।

669 शिष्य तो ऐसा चाहिये, सतगुरू को सुरति देय।
सतगुरू भी ऐसा चाहिये, शिष्य को ना धोखा देय।
साहिब जी : शिष्य को ना धोखा देय।।

670 सुरति उसको देनी चाहिये, सत्यपुरूष को देखा हो।
सत्यपुरूष की दात को, सुरति सूं पाई हो।
साहिब जी : सुरति सूं पाई हो।।

671 निंदा अस्तुति नांहि जिन, बैरी सतगुरू समान।
कहे 'वे नाम' सुरति जाना, ''वे नाम'' सब्द की कर पहचान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की कर पहचान।।

672 चकवी बिछुड़ी सांझ की, आन मिले प्रभात।
जो जन बिछुरे साहिबन से, दिवस मिलें नांहि रात।
साहिब जी : दिवस मिलें नांहि रात।।

673 मुझ पे कर्में नज़र हर पल रखो, दया की नज़र के लिये।
सतगुरू सुनो फरियाद मेरी, चरणों में सदा के लिये।
साहिब जी : चरणों में सदा के लिये।।

674 दिवस बीते सांझ पड़े, चकवी दोनों रोये।
चल चकवी के देश को, जहां रैन ना होये।
साहिब जी : जहां रैन ना होये।।

675 भाव सागर है अगम का, डूब रयो संसार।
पार लगन को चाह चाहें सब, सतगुरू बिन एक ना पार।
साहिब जी : सतगुरू बिन एक ना पार।।

676 ईड़ा पिंगला सुषुम्ना सम करो, अर्द्ध और उर्द्ध बीच ध्यान।
वह साधक निर्भय हुआ, निजघर पहुंचा जान।
साहिब जी : निजघर पहुंचा जान।।

677 पवन पलट सुन्न में घर किया, घर में अधर भरपूर किया।
कहें 'वे नाम' संत की मेहर से, सुरत कमल में दीदार किया।
साहिब जी : सुरत कमल में दीदार किया।।

678 ध्यान सुरति सब्द स्वांसा संग, पाया अमृत प्याला।
सुन्न महल की फेरी देहि, पाई पक्की बैराग़ी माला।
साहिब जी : पाई पक्की बैराग़ी माला।।

679 साहिब प्रकटाये भाग्य रे मेरे, कर्म धर्म का संग छूटा जाई।
चेतन सुरति सूं अधियारी मिटी, काल जाल सब छूटा जाई।
साहिब जी : पांचों चौर कलश फूटा जाई।।

14 'मै' (मन मान)

680 खाक से रहकर खाक से खेले, खाक ही तन खाक ही रिश्ता जान।
खाक से खाक वस्त्र मिले, खाक सम जग रिश्ता नाता जान।
साहिब जी : झूठे लोक से नाता ले जान।।

681 झूठा राजा झूठी प्रजा, झूठा व्योवहार हमारा।
झूठ ही लेवे झूठ ही देवे, झूठा देवन हारा।
साहिब जी : सच्चा बस अमरपुर देस हमारा।।

682 महल माड़ियां खाक से खाक हैं, खाक मोतियों की माला।
खाक से आये खाक में जाना, काल का मुख है काला।
साहिब जी : बिन प्रेम प्रीत काल का काम सब काला।।

683 स्वांस स्वांस 'वे नाम' सुमिर ले, व्यर्थ स्वांस ना खोये।
स्वांस स्वांस जो सुमिरता, ईक दिन मिलिये आये।
साहिब जी : ईक दिन मिलिये आये।।

684 मानस सबे एक हैं, अनेक का भ्रम महान।
पूजा निवान एको जानिये, आत्म ज्ञान महान।
साहिब जी : आत्म ज्ञान महान।।

685 एके नैन एके कान, एके देह एके मुख महान।
एके से सब आये है, देश विदेश एके जान।
साहिब जी : देश विदेश एके जान।।

686 प्राणों का संग थोड़ा है, सम्भलि बुक भरो।
जीवा प्राण अनमोल है, सब्द में सुरति भरो।
साहिब जी : सब्द में सुरति भरो।।

फ फरीदा जानिया दुख मुझे, दुख तो सबाइये जगि।
उंचे चढ़ि के देखिया, ता धरि धरि एहो अगि।
साहिब जी : ता धरि धरि एहो अगि।।

फ फरीदा चित खटोला, बाणु दुख विरह विछावणु लेफु।
एह अमारा जीवणा, साहिब सच्चे वेखु।
साहिब जी : साहिब सच्चे वेखु।।

फ फरीदा दरि दरवाजे जाई के, किउ डिठी घड़ीआल।
एह निदोसा मारीये, हम दीसा का किया हाल।
साहिब जी : हम दीसा का किया हाल।।

687 जब मैं था तब साहिब नहीं, अब साहिब है मैं नांहि।
सहज भक्ति अति झीनी प्यारो, जा में दो ना समाहिं।
साहिब जी : जा में दो ना समाहिं।।

688 आशा तजि मन माया तजि, सुरति स्वांस में 'वे नाम'।
भरम शोक निंदा तजि, सतगुरू चेतन सुरति में पायो नाम।
साहिब जी : चेतन सुरति में पाओ नाम।।

689 जग में सब जीव स्वार्थी, संग किसका करे कोये।
मेरा संगी साथी ''वे नाम'' सब्द, सतगुरू सूं जोड़े सोये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से साहिबन मेल होये।।

690 मैं मेरी ममता संसार है, पूर्ण मोक्ष में बाधा जान।
ममता पग़ की बेड़ी है, यही गले की फांस जान।
साहिब जी : मोह माया फांस भक्ति बाधा जान।।

क माली आवत देख के, कलियां करें पुकार।
फूली फूली चुन लई, कल हमारी बार।
साहिब जी : अगली हमारी बार।।

691 दोष पराया मत जानिये, निज की कर पहचान।
अपनी सुरति चेतन सुरति में रहे, निजघर की कर पहचान।
साहिब जी : निजघर की कर तूं पहचान।।

692 तिनका कबहु ना निंदिये, पांव तले जो होये।
ईक दिन उड़ आंख पड़े, निज की भूल पे जा रोये।
साहिब जी : नीचा किसी को ना कहिये।।

693 हर तन क्रौध की आग़ का, पवन भी संग साथ।
पवन भरौसे सो जति मरे, पूर्ण संत ही देते साथ।
साहिब जी : सतगुरू निभायें संग साथ।।

694 दसों दिशाओं में क्रौध की, मन माया भड़काई आग़।
शीतल 'वे नाम' का संग करि, शांत कर ले अंदर की आग़।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द शांत करे मन माया आग़।।

695 पूजा पाठ नेम व्रत्त, सबै धोखा ले जान।
जब लग चेतन सुरति परसे नांहि, तब लग धोखा जान।
साहिब जी : सतगुरू सब्द जान महान।।

696 निर्मल सतगुरू सब्द सूं, निर्मल सुरति जान।
निंदक होये ना उझला, दुख में डूबा जान।
साहिब जी : निंदक दुख में डूबा ही जान।।

697 हर ह्रदय में सुरति वास, बिन सब्द ना देखा जाये।
ताको तब ही देखिये, जब चेतन सुरति से सुरति जग जाये।
साहिब जी : चेतन सुरति से सुरति लौ लगायें।।

698 तन धोये क्या भये, जे मन मान मैल ना जाये।
मीन जब प्राण तजे, धोये बास कहां जाये।
साहिब जी : महां चेतन सुरति सूं सुरति जग जाये।।

699 पूजा पाठ दिन रात करि, मन माया का संग ना जाये।
शीतलता का संग नांहि, पूर्ण सतगुरू मिलें बात बन जाये।
साहिब जी : सतगुरू दात कोई बिरला पाये।।

700 तन मन से भक्ति लाभ ना, सच्ची प्रेम भक्ति का जानो मोल।
सुरति से तराजू तोल ले, पल में दे दो मोल।
साहिब जी : संत का तराजू करे तोल।।

701 धन रहे ना योवन रहे, सुरति की महिमां जान।
मन मान से बात बने नांहि, चेतन सुरति का पाना जान।
साहिब जी : चेतन सुरति महिमां महान।।

702 मन की मृत्यु होती नहीं, वे ही आप औंकार।
मान की मृत्यु जाग कर, जब प्रेम खोले भक्ति द्वार।
साहिब जी : जब प्रेम खोले भक्ति द्वार।।

703 काम बर्फ सम्मान है, मन भाव ले जान।
आत्म हंसा रूप है, साहिबन अंश ले जान।
साहिब जी : साहिबन अंश ले जान।

704 काम प्रेम भक्ति में प्रवेशा, बिन सार सब्द मत ले जान।
भक्ति अति प्रेम रूप है, महां चेतन सुरति में समाना जान।
साहिब जी : महां चेतन सुरति में समाना जान।।

705 मोत कभी होती नहीं, मान की टूटे तान।
तन पांच तत्व का बना, उन्हीं में समाना जान।
साहिब जी : उन्हीं में समाना जान।।

706 आत्म मन बंधन में पड़ी प्यारो, वासनाओं में उलझा हर नर जान।
मन से छूटना कठिन प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से बंधन छूटे ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा की कर पहचान।।

707 सहजे मार 'वे नाम' की प्यारो, सुरति से देत गिरा दे जान।
हर पल ''वे नाम'' सब्द में प्यारो, सुख दुख जान एक समान।
साहिब जी : सुरत सब्द में रहना जान।।

708 जिस साधक पर दया सतगुरू की प्यारो, सोहि जाने सच्चा भेद रे।
लघुता सूक्ष्म ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, जब सुरति निरति सब्द समाई जान रे।
साहिब जी : दीन भाव आता जान रे।।

709 दीन भाव के आते ही प्यारो, सब घट आत्म दिखे ईक समान रे।
दुविधा भाव का संग गया प्यारो, सतलोक को पाया जान रे।
साहिब जी : सहज होना जानो काम महान रे।।

710 विश्वास आना सहज नहीं प्यारो, काल भगवन पाखंडी कर्मों में उलझाये रे।
''वे नाम'' सब्द पर विश्वास प्यारो, कठिन लाना जान रे।
साहिब जी : हृदय पाखंडी कर्मों में उलझाता जान रे।।

711 संशय हर जीव को जग में प्यारो, मृत्यु लोक पाखंड धर्म में उलझाता रे।
पाखंडी शिष्य माया ना तजता प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांसा में डाल रे।
साहिब जी : सत्य सब्द की महिमां अति महान जान रे।।

गौरख नाथ
ग मरो हे योगी मरो, मरो मरन है मीठा।
तिस मरनी मरो, जिस मरनी मरि गौरख दीठा।
साहिब जी : जीते जी मरना लागे मीठा।।

712 पाखंडी जीव की मुक्ति कैसे प्यारो, यत्न उपाये से बनें ना काम रे।
जप तप नेम धर्म ज्ञान में प्यारो, जीव अति लिपटा जान रे।
साहिब जी : पाखंडी को मुक्ति ना मिलती जान रे।।

713 सार सब्द ज्युं सुरति बसे प्यारो, नेम धर्म ज्ञान पाखंड छूटे जान रे।
पाखंड भरम सुरति मत लाओ, छूटे नर्क जब सत सब्द सुरति धार रे।
साहिब जी : हृदय से भक्ति पाखंड जान रे।।

714 पाखंडी जीव नर्क ठिकाना प्यारो, मुक्ति पाना मत जान रे।
जाकि सुरति सार सब्द वासा, निर्वाण पद प्राप्ति करता जान रे।
साहिब जी : हृदय में भक्ति काल भगवन की जान रे।।

715 हृदय में भक्ति दान देना प्यारो, भव पार होना मत जान रे।
योग यज्ञ तीर्थ आदि प्यारो, पाखंडी का कहीं नहीं ठिकाना रे।
साहिब जी : सत्य सब्द सुरति से पार होना जान रे।।

716 सत्य सब्द मान से प्यारो, आन छूटती जान रे।
''वे नाम'' सब्द मूल सब्द प्यारो, खर अक्षर से पार रे।
साहिब जी : निःसब्द सब्द का भेद रे।।

717 इस जन्म को सार्थक कर प्यारे, पूर्ण सतगुरू जग में आये रे।
ऐसा अवसर दौबारा कैसे प्यारो, व्यर्थ मत इसे गंवाओ रे।
साहिब जी : सुनहरी अनमोल मौका मत गंवाओ रे।।

718 'वे नाम' सतगुरू प्रसन्न प्यारो, जब शब्दों के पत्थर बरसे रे।
महांचेतन सुरति सुरति को प्यारो, बार बार पुकार साहिबन की रे।
साहिब जी : यही सच्चा स्वागत जान रे।।

719 जीवन का मैं सौंप दिया रे, सब भार सतगुरू के हाथों में रे।
संत चिंताओं आशा तृष्णाओं से प्यारे, पार हो गया रे।
साहिब जी : सतगुरू संग किसकी चिंता कैसी चिंता रे।।

720 फूलों से नहीं प्यारो, कांटों समान शब्दों से सच्चा नाता रे।
''वे नाम'' सब्द से प्यारो, कठौर शब्द भी फूलों सा करते काम रे।
साहिब जी : कठौर शब्द जगाते आन रे।।

721 ''वे नाम'' सब्द पर चलते चलते प्यारो, सुख दुख एक समान दिखते रे।
सुरति जगाओ प्यारो, सब प्रश्नों के उत्तर पल में मिलते रे।
साहिब जी : सुरति चेतन से साहिबन संग संग मिलते रे।।

722 खुली और बंध आंख में प्यारो, स्वपन्न बिन कुछ और मत जान रे।
सत्य तो चेतन सुरति धार में प्यारो, खुली और बंध आंख से पार रे।
साहिब जी : सत्य प्रेम आनंद महांचेतन सुरति साग़र धार रे।।

723 खुली और बंध आंख ही प्यारो, काल का खेल महान रे।
तीन लोक से पार प्यारो, महांचेतन सुरति महांसाग़र द्वार रे।
साहिब जी : सत्य प्रेम आनंद ही सतपुरूष दरबार रे।।

724 खुली बंध आंख से प्यारो, तीन लोक का विस्तार जान रे।
इन दोनों से पार प्यारो, साहिबन सच्चा दरबार रे।
साहिब जी : साहिबन दरबार पूर्ण मोक्ष द्वार रे।।

725 खोजो खोजो पूर्ण सतगुरू प्यारो, जिस जाना अमरलोक दरबार रे।
खोजते खोजते प्यारो, मन मान का खोना जान रे।
साहिब जी : यही निज की सच्ची पहचान रे।।

726 ''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, निज की पहचान मत होती जान रे।
'मै' का संग तीन लोक में प्यारो, बंधन का कारण जान रे।
साहिब जी : 'मै' मेरा मेरी नहीं तेरी पहचान रे।।

727 निःअक्षर भेद जिन पाया प्यारो, निःअक्षर माहिं जाये समाये।
जो नहीं जाने निःअक्षर भेद प्यारो, काल जाल में रहयो समाये।
साहिब जी : सारा जग काल जाल में जा समाये।।

728 यज्ञ दान पुण्य कैता करो प्यारो, ये सब काल पसारा रे।
काल गति संसार है भाई, बिरला कोई सतगुरू प्यारा होत पार रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से पार रे।।

729 बुद्धि सूं काल को जाना जाये प्यारो, यज्ञ दान आदि जो भी करो रे।
''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, काल से जीता कबहु ना जाये रे।
साहिब जी : यज्ञ तप दान सब काल का व्योवहार रे।।

730 बुद्धि से काल ना जाना जाये, कभी सुख कभी दुख देता रे।
नर सुख प्रभु की देन है कहता, परमार्थ की ओर ना लगता रे।
साहिब जी : दुख सुख में भेद काल पसारा रे।।

731 सब जग काल पसारा प्यारो, जो विनसे काल आहारा रे।
''वे नाम'' सब्द सुरति सूं प्यारो, मन बुद्धि चित्त स्थिर जान रे।
साहिब जी : तां से जानो मन का भेद रे।।

732 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, मन बुद्धि चित्त का स्थिर करना जान रे।
बिन ''वे नाम'' सब्द दात के प्यारो, काल से बचे ना कोई एक रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द के भेद को जानो रे।।

733 ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष ही प्यारो, 'वे नाम' बिन सब जग सूना जान रे।
''वे नाम'' सब्द बिन प्यारो, किसी और सब्द को सत्य मत जान रे।
साहिब जी : सत्य सब्द सतपुरूष ही जान रे।।

734 ''वे नाम'' सब्द अदभुत प्यारो, कहने सुनने बोलने लिखने में ना आवे रे।
बिन सतगुरू नाम के प्यारो, थाह सब्द की कोई ना पावे रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब्द की थाह कोई ना पावे रे।।

735 ''वे नाम'' सब्द पारस परस प्यारो, सुरति स्वांसा में समावे रे।
काग़ा से हंसा रूप को पाता प्यारो, अमरलोक में सिधावे रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द अमरलोक ले जावे रे।।

736 पारस नाम भेद को जानो प्यारो, जीव का कल्याण कर जावे रे।
पारस नाम सुरति जब पाओ प्यारो, काल जाल छुट जावे रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द काल जाल छुड़ावे रे।।

737 मुख से नामों का जो सिमरन प्यारो, काल शब्द ले जान रे।
जग में जो धर्मी प्यारो, काल में अटका जान रे।
साहिब जी : जगत भक्तियां काल की भक्ति जान रे।।

738 सहज मार 'वे नाम' सतगुरू की, सुरति सूं तोड़े तार रे।
सुरति सूं गिरते ही प्यारे, सतलोक सूं टूटे तार रे।
साहिब जी : सतगुरू महिमां अपरम्पार रे।।

739 चेतन सुरति का महरमी ईक सतगुरू प्यारे, साधक कोई कोई जाने रे।
मन पसारा तीन लोक प्यारो, ये भ्रम सब घट में समाया जान रे।
साहिब जी : मन ही वेद पुराणों की कथा जान रे।।

740 मन ही शुभ घड़ा आदि का प्यारो, विचार करता ले जान रे।
मन ही योग जप तप भाव लाता प्यारो, मन ही यज्ञ दान कर्म धर्म कराता जान रे।
साहिब जी : मन ही कर्म काण्ड और फल जान रे।।

741 सतगुरू प्राप्ति से प्यारो, मन के कर्म छूटे ले जान रे।
सतगुरू कृपा बिन प्यारो, सुरति चेतन मत जान रे।
साहिब जी : सुरति चेतन से साधक जागा जान रे।।

742 प्रेम सत आनंद की प्यारो, चाह ही काल में रखती जान रे।
चाह मन बुद्धि चित्त की प्यारो, खेल जग में महान रे।
साहिब जी : चाह गई चिंता गई जान रे।।

743 चाह गई चिंता गई प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति सूं जोड़ो तार रे।
जीवन को जिओ प्यारे, लक्ष्य पर पल पल जोड़ो सुरति तार रे।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति सूं जोड़ो सुरति तार रे।।

744 बिन सतगुरू कुछ भी करना प्यारो, बंधन का कारण जान रे।
जो करता सो सतगुरू करता, ''वे नाम'' सब्द से सुरति चेतन करना जान रे।
साहिब जी : तन मन कुछ करने योग्य मत जान रे।।

745 जब कुछ ना रहेगा प्यारो, महांचेतन सुरति लोक रहेगा रे।
हो आवेगा जो वहां से प्यारो, सब को भेद बतावे रे।
साहिब जी : अपना बन नर को पार करावे रे।।

746 सतगुरू सब्द सिमरन ध्यान से प्यारो, छूटे मन मान का अनंत विघ्न रे।
सुरति सब्द स्वांसा कर एक प्यारो, छूटे आशा तृष्णा का संग रे।
साहिब जी : सुरति का महांचेतन सुरति में समाना जान रे।।

747 जो ''वे नाम'' सब्द ना माने प्यारे, नर्कों में वासा जान रे।
नाम पाई सतगुरू ना माना प्यारो, कपट करे निरंझन फंद में फंसा जान रे।
साहिब जी : जग में हर ओर धोखा जान रे।।

748 सच्चा सतगुरू शिष्य समझावे प्यारो, सच्ची राह दिखावे पार लगावे रे।
सच्चा शिष्य सतगुरू में प्यारो, पल पल सुरति डाले रे।
साहिब जी : शिष्य सतगुरू में सुरति डाले रे।।

749 सतगुरू कृपा से प्यारो, सुरति में ज्ञान प्रकाशा जान रे।
'वे नाम' सतगुरू प्यारो, अमरलोक के वासी जान रे।
साहिब जी : जीव को पार कराने जग में आये रे।।

750 काल रूपी तो भगवन प्यारो, हर पल देता धोखा जान रे।
सतपुरूष जग में भेजा 'वे नाम' प्यारो, निरंझन से जीव छुड़ाने रे।
साहिब जी : मेरा साथ निरंझन भगवान भी देते जान रे।।

751 निरंझन भेद पूर्ण सतगुरू जाने प्यारो, दोनों करते अपना अपना काम रे।
सब्द नाम अति बलशाली प्यारो, काल के काटे बाण रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द काटे बाण रे।।

752 क्रौध को देखो प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से क्रौध वाष्पिभूत हो जाता जान रे।
जैसे ही देखने वाला आया प्यारो, क्रौध का संग छूटा जान रे।
साहिब जी : मूर्छा में क्रौध जाता जान रे।।

753 बाहिर क्या दिखलाईये प्यारो, अंदर जपें नाम रे।
सतगुरू में डूबो प्यारो, जिसने पाया उसी में डूबो रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति में डुबकी लगाओ रे।।

754 मन शक्ति मन ही अवतारा प्यारो, मन ही औंकारा जान रे।
ये मन पांच तत्व का जीव प्यारो, पंच तत्व पसारा जान रे।
साहिब जी : सुश्मिन मध्य औंकार पसारा जान रे।।

755 मन वासना को त्याग प्यारे, मन वासना को एको जान रे।
तन मन मान भी एको प्यारो, औंकार भगवन भी इसे जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से पार होना जान रे।।

756 संसार में सब क्षण भंगुर प्यारो, पकड़ो तो क्या पकड़ो रे।
जो कुछ भी पाप प्यारो, धारणाओं में सब पाप जान रे।
साहिब जी : निज को भूलों में फंसा जान रे।।

757 सतगुरू मुख जो वचन उच्चारे, उसे सुरति सूं पी लो रे।
सारे तीर्थ सतगुरू की प्यारो, वाणी में गिरते जान रे।
साहिब जी : सतगुरू पा लिया तो सब पा लिया जान रे।।

758 चाह गई चिंता गई प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति सूं जोड़ो तार रे।
अब कोई चिंता वाद विवाद नहीं, सब छूट गया संसार रे।
साहिब जी : एक ताल में सतगुरू चरणों में शिष डाल रे।।

759 निज चंग तो कठोती ही गंग रे, आनंदमयी होना जान रे।
सतगुरू साहिब मिलें तो, सारा जगत चेला रे।
साहिब जी : साहिब सतपुरूष मिलें तो सब पाया रे।।

15 कौरा पत्र

760 अनुराग़ में औंकार भगवन ने, मुझ दास को कौरा पत्र दिया।
दास के हाथ सतपुरूष हाथों में, दोनों हाथों में पत्र दिया।
साहिब जी : सहस्त्रसार लोक में निरंकार पत्र मुझ दास को दिया।।

761 मेरी सुरति की आंखों ने उनको देखा, फिर पत्र पे दृष्टि पड़ी।
मेरी आंखें सहज सुरति धारा से, कौरे पत्र को देखती रही।
सतपुरूष की ओर सुरति सूं देखा, उनकी सुरति खामोश रही।
साहिब जी : पत्र कौरे का कौरा पर सुरति धार भरी रही।।

762 दास निज सुरति में उलझा प्यारो, सतपुरूष भी मौन रहे।
अपने सतगुरू सूं भेद को खोला प्यारो, पर वो भी खामोश रहे।
साहिब जी : सुरति सूं सब भेद पाया पर मुख मौन रहे।।

763 जब फेरा किया निजधाम का प्यारो, सतपुरूष ने सच्चा भेद दिया।
तेरा लेखा काल भगवन से टूटा, उसी का प्रमाण पत्र औंकार दिया।
साहिब जी : कौरे पत्र सूं जन्म मरन से मुक्ति का भेद दिया।।

764 पत्र में सब कुछ प्यारो, औंकार भगवन ने कह दिया।
तेरा डेरा अब अमरलोक प्यारा, तूने उसे अब पा लिया।
तेरा जन्म मरन अब छूटा, त्रिलोकि भव पार किया।
साहिब जी : सुरति संदेस सूं भवसाग़र पार किया।।

765 अब टूटे ना ये बंधन प्यारा, तुझे साहिबन संग संग जाना है।
तूं डौर ते पतंग मैं, साहिबन संग संग अब रहना है।
साहिब जी : साहिबा तेरा मेरा संग पुराना है।।

766 सतगुरू तनाव मेरी जिन सुरति चेतन की, सतपुरूष सूं ''वे नाम'' दात को पाया।
जग में फेरी का काम दिया, जो आया संग में प्यारो उसी को भव पार किया।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' जीवों को निजघर ले जाने आया।।

767 जो मुझको सुरति संग जोड़े प्यारो, उसी का कल्याण किया।
खाली को भरता ''वे नाम'' सब्द प्यारो, पल में माला माल किया।
साहिब जी : जो भी 'वे नाम' शरणी आया भवसाग़र को पार किया।।

768 हर एक की ईक्कत्तर पीढ़ियों को, सब्द सुरति सूं पार किया।
करता केवल सतपुरूष प्यारा, पर दास को सम्मान दिया।
साहिब जी : जो साधक साहिबन प्यारा उसने सारा कुल तार दिया।।

769 प्रेम पत्र लिखने में कहां आता है, वह लिखा कहां जाता रे।
कौरा पत्र कौरा दिखता प्यारो, पढ़ा लिखा जाता रे।
साहिब जी : सुरति प्रेम पत्र निःसब्द संदेसा रे।।

770 उसमें जो कुछ भी है, तुम्हारे चित्त में चलता रे।
पढ़ने वाला भी प्यारो, कहां उत्तर दे पाता रे।
साहिब जी : कौरे पत्र का उत्तर निःसब्द सुरति संदेसा रे।।

771 प्रेम आंसुओं की धारा में, पत्र लिखा जाता रे।
पर पढ़ने वाला भी उत्तर, कभी ना दे पाता रे।
साहिब जी : प्रेम संदेस सुरति की बहती धारा रे।।

772 निज को समर्पित करने पर, दुख कष्ट सब खो जाता रे।
स्वयं ही सब दुखों का, नाष हो जाता प्यारे रे।
साहिब जी : समर्पण से मेरी तेरी तरंग मिट जाती रे।।

773 'वे नाम' शरणागत के काज सवारें, वह दासों के दास कहलाते रे।
सतगुरू जैसा प्रेमी कहां मिलता प्यारो, महांचेतन सुरति साग़र कहलाते रे।
साहिब जी : सतगुरू हर पल साध संगत की सेवा में रहते रे।।

774 उसकी महांचेतन सुरति, सब मन का मैल धो देती रे।
नया चोला पहन कर जग में, वह भव से पार हो जाता रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति निर्मल कर देती रे।।

775 अंधे की अनयास प्यारो, आंखों का मिल जाना काम महान रे।
कौरा पत्र ''वे नाम'' सब्द का प्यारो, अंदर चेतन सुरति करता महान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द भी कौरा पत्र महान रे।।

776 चलते उठत बैठते सोते प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा ईक करना जान रे।
स्वांस अंदर जाये बाहर आये प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा ईक धार रे।
साहिब जी : सुरति बौद्य स्वांसा बाहर भीतर साथ रे।।

777 सिमरन की गति तेल धार प्यारो, ईक पल को भी टूटी मत जान रे।
विचारों का पल में संग गया, सुरति ध्यान सब्द में तोड़े मन मान तार रे।
साहिब जी : सुरति स्वांसा में तोड़ो विचारों की तार रे।।

778 चेतन सुरति की शक्ति महान प्यारो, मनन विचारों की टूटी तार रे।
विचार दबाने से प्यारो, विचारों से संबंध टूटा जान रे।
साहिब जी : चेतन सुरति का खेल महान रे।।

779 विचारों से कोई लेन ना देन, सुरति ''वे नाम'' सब्द से चेतन करना जान रे।
हर पल स्वांस सुरति पर प्यारो, ध्यान रखना जान रे।
साहिब जी : स्वांसा सब्द सुरति ध्यान रे।।

780 मस्तिष्क स्थिर ना रहता प्यारो, नींद टूट जाती ले जान रे।
तनाव विश्राम और चिंता से प्यारो, नींद खो जाती ले जान रे।
साहिब जी : चिंता चिता समान ले जान रे।।

781 सब्द सुरति स्वांसा मध्य में प्यारो, कबहु ना टूटे तार रे।
मन माया मान जब गया, सुरति निरति सूं हंसा रे।
साहिब जी : सब कुछ छूटा जान रे।।

782 चांद चकौर सी प्रीति से प्यारो, सुरति ध्यान करना जान रे।
स्वांस सब्द सुरति ईक जब प्यारो, अमृत वर्षा होती जान रे।
साहिब जी : तुरिया अवस्था में तन सहज होता जान रे।।

783 जिन खोजा तिन सतगुरू पाया, अनुराग़ी ही करता पहचान रे।
जाग्रत अवस्था से पार है जाना, दुर्लभ तन को पाना ही पार रे।
साहिब जी : जाग्रत अवस्था में सपना देखना मत जान रे।।

784 स्वांसा सब्द सुरति से प्यारो, सिमरन में दिव्य अनुभूतियां संग साथ रे।
जप तप संयम साधना सिमरन, सिमरन सम कुछ और ना रे।
साहिब जी : अपने अस्तित्व की होत पहचान रे।।

785 खावत पीवत सोवत जागत प्यारो, सिमरन में रहना जान रे।
'वे नाम' सतगुरू भेद हैं देते, सिमरन भक्ति की तान महान रे।
साहिब जी : स्वांस स्वांस में सिमरन सुरक्षा बाण रे।।

786 बेग़मपुर देस के वासी हम हंसा प्यारो, सच्चा आनंदमयी देस प्यारा रे।
गुरूआ जन पार ना पावत, कहन सुनन से न्यारा रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति धारा रे।।

787 वस्तु सतगुरू 'वे नाम' पास प्यारो, मन मान तजने से आवे हाथ रे।
'वे नाम' सतगुरू सांचा भेदी प्यारो, सुरति सूं आवे हाथ रे।
साहिब जी : सुरति चेतन का कर लो संग साथ रे।।

788 मस्तिष्क आत्मां पर प्यारो, आंखों में मोतियाबिंद समान जान रे।
सुश्मिना से तन सुन्न करना प्यारो, जाग्रत में भी सुन्न होना जान रे।
साहिब जी : सुश्मिना धीरे धीरे खुलती जान रे।।

789 स्वांसा सीधी प्यारो, सुश्मिना से नाभी तल में आती जान रे।
तन की ऊर्जा स्वांसा प्यारो, कर्म ज्ञान ईन्द्रियों को चेतन करती जान रे।
साहिब जी : नाभी में दस वायुओं में बदलती जान रे।।

790 चेतन सुरति का समाना शिष्य में, महां प्रेम रस पाना जान।
सुरति को मथ चेतन करें, महां प्रेम सुरति संग महान।
साहिब जी : दो से एक होना ले जान।।

791 दृढ़ता से ''वे नाम'' सब्द जो पकड़े, सतगुरू चरणन में सुरति ध्यान।
सतगुरू आज्ञा में रह हर कार्य करे, झुकना जानें काम महान।
साहिब जी : सतगुरू का प्यारा उसे जान।।

द दरिया सतगुरू सब्द सूं, मिट गई खींचा तान।
भ्रम अंधेरा मिट गया, परसा पद निर्वाण।
साहिब जी : प्रेम सूं परसे पद निर्वाण।।

द लख चौरासी भुगत कर, मानुष देहि पाई।
राम नाम ध्याया नहीं, तो ही चौरासी आई।
साहिब जी : बिन नामे चौरासी ना जाई।।

794 बंधे को बंधा मिला, छूटन का कौन उपाये।
कर सेवा 'वे नाम' सतगुरू की, पूर्ण मोक्ष दे जायें।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द अमरपुर ले जाये।।

795 वे नाम सुरति तो एक है, निज घर से आई ले जान।
पार होना तो सतगुरू भक्ति करो, सब्द का पा लो दान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की दात महान।।

796 प्रेम लगन छूटे नांहि, मीठा दिखता अंगार।
जीव चौंच झरि जाये रे, चकौर चभाये अंगार।
साहिब जी : प्रेम रस चकौर चभाये अंगार।।

797 काया सब्द सबहि गुण गावें, ''वे नाम'' सब्द कोई बिरला ले जान।
''वे नाम'' सब्द पावे सोहि, जो निज में जागा ले जान।
साहिब जी : निज में कोई बिरला जागा ले जान।।

द ध्यान मूलम सतगुरू रूपम, पूजा मूलम सतगुरू पाद्‌कम।
मंत्र मूलम गुरू वाक्‌यम, मोक्ष मूलम सतगुरू कृपा।
साहिब जी : मोक्ष मूलम सतगुरू कृपा।।

द देवी दयाल जगत में, कौटिक पूजे कोये।
सतगुरू की पूजा किये, सब की पूजा होये।
साहिब जी : सतगुरू सेव साहिबन भक्ति होये।।

द रामकृष्ण से कौ बड़ा, तिन भी तो गुरू कीन।
तीन लोक के नायका, गुरू आगे अधीन।
साहिब जी : साध गुरू चरणन अधीन।।

798 सतगुरू प्रेम भक्ति का सूरमा, प्रेम भरा फैंके बाण।
चेतन नाम सुरति में समा गया, काल का संग छूटा जान।
साहिब जी : प्रेम ज्योति जगाना काम ले जान।।

799 प्रेम सत्त आनंद एक है, नारी में प्रेम ज्योत महान।
''वे नाम'' सब्द भक्ति करे, वह कैसे खावे नारी प्रेम बाण।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द प्रेम भक्ति की खान।।

800 प्रेम कर्म धर्म से पार है, ''वे नाम'' सब्द प्रेम भक्ति स्वरूप।
प्राकृति पार वह सब्द है, देवे पुरूष अनूप।
साहिब जी : प्राकृति पार वह रूप।।

801 सुरति निरति जब ''वे नाम'' सब्द में, स्वांस संग ईक हो जाई।
जग दृष्य भावे नांहि, प्रेम भक्ति भेद पा जाई।
साहिब जी : प्रेम ज्योत जग जाई।।

802 मन माया फिरे चहुँ ओर रे, बिन जागे नज़र ना आये।
कहे 'वे नाम' सब्द स्वांस सुरति संग, मन माया से साध बचा ले जाये।
साहिब जी : पारस सुरति निजघर ले जाये।।

803 मन वाणी से पार है, सत्त आनंद सब्द स्वरूप।
बिन भाव जाग्रत अवस्था में, सत्त प्रेम आनंद स्वरूप।
साहिब जी : संग उड़ावे साहिबन रूप।।

804 मूल सब्द से छल कपट गया, सुरति निर्मल भयी ले जान।
मन मान बिमारी तेरी, ''वे नाम'' सब्द से छूटी जान।
साहिब जी : सुष्मिन सम तो पार ले जान।।

805 नाम होये तो प्रेम भक्ति आवे, चेतन सुरति करे सेवा का काम।
ये सब सार सब्द से प्यारो, प्रेम प्रीत की ज्योत जगाने का काम।
साहिब जी : प्रेम प्रीत ज्योत जगाने का काम।।

806 दीपक उल्टा जलता दिखा, सुरत कमल भयो उजियार।
साहिबन तो पार रहे खड़े, सुरति सूं करे पुकार।
साहिब जी : सुरति ले जावे उस पार।।

807 सब्द किया प्रकासा है, चेतन सुरति में सुरति समाई।
दसों दिसा उजियारा भया, मानसरोवर उपर सुरति समाई।
साहिब जी : सुरति सांची निर्मल हो जाई।।

808 संत बड़े परमार्थी, शीतल मन माया का संग।
तपन बुझाये हर जीव की, दे दे चेतन सुरति का रंग।
साहिब जी : दे दे चेतन सुरति का रंग।।

809 अनुभव सुरति ध्यान का, जो कोई पूछे बात।
सो गूंगा गुड़ खाईके, कैसे कहे सुरति की बात।
साहिब जी : कैसे कहे सुरति की बात।।

810 सदगुरू से चूकी सुरति जो, उस का बड़ा दुर्भाग्य।
सतगुरू से जो आत्म चूक गई, उस के फूटे भाग्य।
साहिब जी : उस के फूटे भाग्य।।

811 'वे नाम' वाणी सत्यपुरूष की, निजघर से आई जान।
उस का जग कोई काट ना, सत्यपुरूष का संदेश जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष का संदेश जान।।

812 शीतल जल शीतल चंदन, शीतल चंद्रमां जान प्यारा।
पर सतगुरू सा शीतल एक ना, सीतल हो सुलाता जान प्यारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सीतल की धारा।।

813 धीरज शील स्वभाव क्षमा, संतन की सुरति जान।
कोमल अति मधुर सब्द हैं देते, चेतन सुरति से सुरति चेतन जान।
साहिब जी : दुख सुख ईक समान ले जान।।

814 'वे नाम' जो कहते प्यारो, वही करते सुरति से जान रे।
जो कहते वो होता प्यारो, सतपुरूष का कहा ही जान रे।
साहिब जी : सतगुरू सतपुरूष का कहा ईक जान रे।।

815 जो सुख दुख में ईक समान है, हर्ष शौक स्नेह से पार।
वह महां कर्ता कहलाता, आसक्ति रहित कार्य से पार।
साहिब जी : साध आसक्ति रहित कार्य से पार।।

816 क्रौध द्वैष अभिलाषा से पार जो, निष्कर्मी कर्म करे।
सतगुरू आज्ञा में रहे, हक की कमाई करे।
साहिब जी : हक की कमाई से जीव तरे।।

817 रात दिन प्रेम भक्ति भजन लिखुं, आप में समावे सुरति धार।
हर सब्द में निःसब्द समा गया, हर ओर ''वे नाम'' सब्द की धार।
साहिब जी : सुरति सूं देखो ''वे नाम'' सब्द की धार।।

818 छूटी आशा भक्ति–मुक्ति की, परम तत्व जोड़ी सुरति की धार।
जब सुरति मिली महां चेतन सुरति सूं, तब से उठी पुकार।
साहिब जी : खुल गया अमरपुर मोक्ष द्वार।।

819 छूटि आशा निराशा जगत की, जब परम पद पग़ पग़ संग साथ।
सुख शांति का भेद मिला, जब परम तत्व दिया संग साथ।
साहिब जी : जब प्रेम भक्ति संग साथ।।

820 ''वे नाम'' सब्द कोई कोई पावे, सेवा में रहे साध।
भक्ति भेद कोई कोई पावे, रहे सतगुरू चरणन का दास।
साहिब जी : दासापन ही बनावे साध।।

821 अंदर जागे परम वैराग़ जब, प्रेम भक्ति जगावे भाग।
सब्द सुरति की डौरी जोड़ी, बिन प्रेम भक्ति ना जागें भाग।
साहिब जी : सार सब्द ही जगावे भाव।।

822 सतगुरू सेव मोक्ष भक्ति द्वार रे, प्रेम भक्ति डौर संग साथ।
भरम करि सुनि कर्म किये, वेद क्तेव संग साथ।
साहिब जी : सुरति स्वांसा का कर साथ।।

823 ''वे नाम'' सब्द में जो खो गया, शांत सुरति वाणी संग साथ।
प्रेम भक्ति संग साथ में, सतगुरू चेतन सुरति संग साथ।
साहिब जी : सतगुरू चेतन संग सुरति साथ।।

824 फूल खिलने का भेद कहां, सतगुरू ज्ञान फूल समान।
भीतर ही ज्ञान का स्त्रोत है, छिपा स्त्रोत फूट पड़ता जान।
साहिब जी : सतगुरू सुरति स्त्रोत समान।।

825 सार सम नहीं है कोई दात, सुरति से करो सब काम।
सांच में रहना मत छोड़ना, मन मान सूं करो मत काम।
साहिब जी : मन मान को छोड़ो सुरति सूं करो काम।।

826 जब अंदर जागे परम वैराग़, प्रेम भक्ति बिन साध अभागा।
सब्द सुरति की डौरी लागी, बिन प्रेम भक्ति नर जान अभागा।
साहिब जी : बिन प्रेम भक्ति नर जान अभागा।।

827 भरम सेवा दान प्यारो, भरम जप तप ज्ञानी।
भरम करि करि कर्म किये, भरम के वेद और वाणी।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात ही सुरति वाणी।।

828 जो ''वे नाम'' सब्द में खोया प्यारो, शांत सुरतिवान सत्तपुरूष।
आनंद ही आनंद में पासा प्यारो, हर एक को जाने सतपुरूष।
साहिब जी : हर जीव में महान सतपुरूष।।

829 नाम से प्रीत ऐसी करो, जैसे फूल और पात।
प्रेम भक्ति ना छोड़िये, भावें हार होवे या जीत।
साहिब जी : सतगुरू चरणों से जोड़ो प्रीत।।

830 पांच चौर निःअक्षर सब्द से मरें, मूल सब्द का करो विचार।
सुरति ध्यान में हद होये, घट जावे नींद आहार।
साहिब जी : चेतन सुरति ही करावे भव पार।।

831 मोहे ''वे नाम'' सब्द सत्तपुरूष दिया, महांचेतन सुरति का बीज।
सत्त प्रेम आनंद का अंक मिला, जब पाया सच्चा बीज।
साहिब जी : मैने पाया सांचा बीज।।

832 झूठ मन मान मर्म छुड़ाये के, चेतन सुरति से दिया प्रेम सब्द।
मृतक का सा रूप देकर, पकड़ाया ''वे नाम'' सब्द।
साहिब जी : प्रेम प्रीत भरा ''वे नाम'' सब्द।।

833 बिन बादल जहां बिजुरि चमके, बिन सूरज हर ओर उजियारा।
बिन सीप के मोती मिलें, हर ओर दिखे परम पुरूष प्यारा।
साहिब जी : सुरति में दिखे परम पुरूष प्यारा।।

834 पुरूष शक्ति समाई ''वे नाम'' सब्द में, निरंकार भी तहं मथ नवाई।
सुन रे साध बात हमारी, ''वे नाम'' सब्द निजघर ले जाई।
साहिब जी : ईक ''वे नाम'' सब्द ही पार कराई।।

835 सब में सुरति रम रही, क्या राजा क्या रंक।
सतगुरू 'वे नाम' से सुरति जगे, जो सतगुरू चरणों में रंक।
साहिब जी : सतगुरू चरणों में राजा रंक ईक समान।।

836 फूल में ज्युं बास है, काठ में अग्नि छुपि ले जान।
''वे नाम'' सब्द दात को पा ले, कर अंदर बैठे का संग महान।
साहिब जी : साहिबन संग महान।।

837 सत्संग में आई कर, सुरति को चेतन करना जान।
वैराग़न प्रेम की धार में, सतगुरू चरणन में ध्यान।
साहिब जी : सतगुरू चरणों में रहे ध्यान।।

838 सत्संग में जो खोवे आप को, तब ही मिले चेतन सुरति संग।
जो कोई चाहे मोक्ष पद को, स्वांस स्वांस में 'वे नाम' सुरति संग।।
साहिब जी : करो स्वांस स्वांस में 'वे नाम' सुरति संग।।

839 काल छुड़ाई हंसा कर दीना, ऐसा नाम साहिबन मोहे दीना।
संत मत्त सुरति चेतन करे, प्रेम भक्ति का दान मोहे दीना।
साहिब जी : प्रेम भक्ति का दान तूने मोहे दीना।।

840 सतगुरू सब्द सहाई रे, पाप ताप मिट जाई।
दासापन सुरति रहे, निखट्टूपन खो जाई।
साहिब जी : पारस सब्द खोट मिटा जाई।।

841 दास कहावन कठिन है, मैं दासन का दास।
अब तो ऐसा होई रहा, जैसे पांव तले की आस।
साहिब जी : बन के रहुं पांव तले की आस।।

842 साधना से सेवा उत्तम जानिये, सतगुरू आज्ञा ले आवी।
निज को चरणों में डाल दो, सतगुरू आज्ञा में ले जावी।
साहिब जी : सतगुरू आज्ञा में सदा रहावी।।

843 'वे नाम' सशंय छुटि गया, मिलया प्रेम भक्ति का यार।
दुखिया अपने ख़्याल में, छूटा पूर्ण मोक्ष द्वार।
साहिब जी : मन माया से छूटे मोक्ष द्वार।।

844 साहिबा शुभ दिन शुभ घड़ी, जब जागे प्रेम भक्ति की प्यास।
लगन मुहूरत झूठ सब, जगा ले ''वे नाम'' सब्द की प्यास।
साहिब जी : रख ''वे नाम'' सब्द की प्यास।।

845 जो सतगुरू सेवा में स्वांस स्वांस रहे, सेवक कहावे सोये।
कहे संत सेवा बिना, साध ना कहावे कोये।
साहिब जी : सेवा से साध कहाये।।

846 पल सुमिरे पल बिसरे, निज संग धोखा जान।
आठों पहर सुरति सब्द स्वांसा ईक करे, साध कहावे महान।
साहिब जी : स्वांस स्वांस में लें नाम।।

847 जैसे दूध में घी छिपा, मैहंदी में छुपी लाली।
ऐसे चेतन सुरति सूं, तिल भर भी नहीं खाली।
साहिब जी : सुरति सूं नहीं कोई खाली।।

848 लोक लाज कुल त्याग के, चली बुझाने सुरति प्यास।
सतगुरू दरबार में पहुंच गई, उज्जवल हुई प्रेम भक्ति की प्यास।
साहिब जी : सतगुरू शरणी बुझे प्रेम भक्ति की प्यास।।

849 मगन रहो सतगुरू सब्द में, संसार भी अपना जान।
सुरति सूं हर एक से बात कर, क्या पता कौन बने महान।
साहिब जी : कौन बने महान।।

850 रख प्रेम ज्योत जगाई के, कब प्यारा कर ले संग साथ।
क्रौध निंदा का संग छोड़ कर, कर सब्द सुरति स्वांसा का साथ।
साहिब जी : जग छोड़ सुरति का कर साथ।।

851 प्रेम आया संशय गया, जब पाया सतगुरू यार।
मगन हुआ चेतन सुरति में, लेन देन का झूठा संसार।
साहिब जी : जग लेन देन का व्योवहार।।

852 आरती सत्संग से वैराग़ उठे, सुरति सब्द में जाग।
साधक खोवे सुरति में, जागा हर अंग लाग।
साहिब जी : सुरति सूं जागा हर अंग लाग।।

853 वैराग़न खोई वैराग़ में, जागी सच्ची खोज।
फूल मांहि सब बास है, तुझ में ही तेरी खोज।
साहिब जी : निज में सत्त की खोज।।

प पल्टु खोवे आप को, तब लागेगा रंग।
जो कोउ चाहे अभय पद, जाई करै सत्संग।
साहिब जी : अभय पद पाई जा सत्संग।।

प खोजा चढ़ि खूंट, कुछ नज़र ना आवे।
कतहु सुधि आई नहीं, कोउ भेद बतावे।
साहिब जी : सतगुरू आन भेद बतावे।।

प जप तप तीर्थ व्रत किया, बहु नेम उच्चारा।
खोजे वेद पुराण सबै, सत्संग सुरति पुकारा।
साहिब जी : बिन सत्संग पाओ ना सुरति धारा।।

854 संतन के सत्संग में काग़ा, हंसा होई घर जाई।
जो जो 'वे नाम' सत्संग में, पूर्ण मोक्ष पा जाई।
साहिब जी : रमो सत्संग 'वे नाम' मोक्ष पा जाई।।

855 पूर्ण सतगुरू सब्द देई, काटे चौरासी का फंद।
सार सब्द मिलने से, पावें परम आनंद।
साहिब जी : सतगुरू सब्द पूर्ण परमानंद।।

856 तेलवत्त सुरति धार लागी, ज्योति निरंतर जल रहियो।
मन मान का संग गया, हर पल उजियाला होई रहियो।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं हर पल उजियाला रहियो।।

857 साहिबन सत्संग में बैठ कर, करि ले प्रेम भक्ति का काम।
पूर्ण सतगुरू पास में, चेतन सुरति सूं कर ले चेतन सुरति काम।
साहिब जी : चेतन सुरति से कर सुरति जगाने का काम।।

858 फूल फूल के संग रहे, वासना तिल तेल में समाये।
पारस लोहा जब संग में, लोहा पल में कंचन हो जाये।
साहिब जी : सतगुरू लोहा कंचन कर जाये।।

859 पारस के परस से, लोहा मंहगा ले जान।
छूने से लोहा मंहगा हुआ, कीमत निखरी जान।
साहिब जी : सतगुरू पारस खेल महान।।

860 गंग में सुभगंग मिली, महां चेतन गंग होई।
पड़े सीप स्वाती बूंद में जब, पल में मोती होई।
साहिब जी : जैसा संग वैसा ही होई, संतन संग संतन सा होई।।

861 'वे नाम' संग सत्संग मिला, प्रेम भक्ति में जी लो दिन चार।
फिर कब मेला होई, सुरति ज्योत जगाओ ईक बार।
साहिब जी : सुरति ज्योत जगाओ ईक बार।।

862 साहिब साहिब क्या रट रहा, साहिब हर ईक के पास।
सब्द सुरति स्वांसा की रगड़ से, ज्योत स्वरूप हर पल पास।
साहिब जी : सतगुरू ज्योत स्वरूप पल पल पास।।

863 सुरति में आवे हर पल नज़र, ''सार सब्द'' दात संग साथ।
तूं सच्चे मालिक का नूर है, सुरति सब्द में पाओ साथ।
साहिब जी : सतगुरू सब्द में साहिबन साथ।।

864 ''वे नाम'' सब्द पाने से, सुरति को भयो आनंद।
महां चेतन सुरति सूं सुरति मिली, पाया प्रेम भक्ति आनंद।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम भक्ति आनंद।।

865 'वे नाम' सतगुरू प्यारे, काटी मेरी जन्मों जन्मों की फंद।
निःअक्षर सब्द को पाने से, मोरी सुरति भयी आनंद ।
साहिब जी : संतन संग सुरति भयी आनंद।।

866 सुरति में कई बार भाव आवे है, महां चेतन सुरति का नूर।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने नांहि, महां चेतन सुरति से आवे नूर।
साहिब जी : महां चेतन सुरति सूं सब्द प्रकटावे नूर।।

867 प्रेम नेड़े सांच के, झूठ से कोई लेन ना देन।
सब्द सुरति में ध्यावे साध जो, चेतन सुरति बिन लेन ना देन।
साहिब जी : चेतन सुरति बिन कुछ लेन ना देन।।

868 खोजत खोजत हारी गये, बाहर ना प्रेम प्यार एक।
निज अंदर सुरति लागी, अंदर में बैठा एक।
साहिब जी : खाली में ही आता वो एक।।

869 ''वे नाम'' सब्द बिन भाव ना उपझे, भाव बिन भक्ति ना होई।
जिस जन सतगुरू संग प्रेम ना, पूर्ण मोक्ष मिले ना कोई।
साहिब जी : बिन सतगुरू पावे ना मोक्ष कोई।।

870 शबरि देखा श्री राम कुटि आये, मंत्र मुग्ध होई जान।
प्रेम भाव में भांवरि हुई, प्रभु चरणन में नमन महान।
साहिब जी : शबरि आनंदमयी ले जान।।

871 चरणन पखारी मुख वचन ना, सादर जल ले चरण पखारे।
अश्विन की धारा बह उठी, आन आसन पठारे।
साहिब जी : प्रेम से साहिबन आन पठारे।।

872 प्रेम पूर्वक कंद मूल फल, राम जी को सब स्वीकार।
प्रभु प्रेम सहित खाया सबहि, कहत अधम जाती जड़मति भार।
साहिब जी : अधम ते अधम, अधम अति भारी।।

873 अर्पण किया कंद मूल फल, राम जी प्रेम पूर्वक खाया स्वीकारी।
शबरि कहत प्रभु अधम जाति मेरी, प्रभु कृपा करि अति भारी।
साहिब जी : प्रेम भाव विभौर डूबी शबरि अति प्यारी।।

874 कह रघुपति सुन मामिनी, मेरा ईक प्रेम भक्ति का नाता।
जाति पाति से लेन देन ना, सच्ची प्रेम भक्ति से नाता।
साहिब जी : सांचा प्रेम ही भक्ति का नाता।।

875 सब्द निरंतर डोले सुरति में, त्यागी मली वासना जाई।
जगत त्यागा तारी लागी, कष्ट क्लेश दूर हो जाई।
साहिब जी : प्रेम में कष्ट क्लेश सबै मिट जाई।।

876 अंदर नयन खुले साहिबन दरशे, महां चेतन सुरती निहारूं रे।
जो देखा कैसे कहुं, हर ओर रूप निहारूं रे।
साहिब जी : महां चेतन ज्योत ना भूल पाऊँ रे।।

877 स्वांस स्वांस मूल सुरति में समा रही, सुरति जुड़े ताड़ी लागी रे।
आंख ना मूंदो कान ना रूंदो, आज्ञा चक्र में सुरति लागी रे।
साहिब जी : आज्ञा चक्र में सुरति लागी रे।।

878 पवन खींचे ध्यान गगन गुफ़ा में, सुरति निरति का खेल न्यारा रे।
सूर्य चंद्र नाड़ी से सुश्मिन खोल, उनमुनि तारि से मन भागा रे।
साहिब जी : सुरत सब्द से मन माया भागे रे।।

879 सब्द सतगुरू सुरति साधक में, सुरत कमल मिली पहचान।
स्वांसा आकाश में उल्टा कुआं, सुरति सब्द में समाती जान।
साहिब जी : साहिबन सुरति खेल महान।।

880 सुरति निरति निज नैन कर, जहाज का भी करे काम।
सतगुरू मार्ग में मिलें, फूलों की सेज बनावे काम।
साहिब जी : फूलों की सेज बनावे काम।।

क दुनियां ऐसी भांवरी, पत्थर को पूजन जाये।
घर की चक्की कोई ना पूजे, जा से पीस के खाये।
साहिब जी : घर की चक्की में जग पीसा जाये।।

क परम पुरूष जहां आप विराजे, हंसा करत विलास।
अमृत भौजन हंसा करि, बैठ परमपुरूष के पास।
साहिब जी : हंसा सुरति साहिबन संग साथ।।

881 ज्युं ज्युं सैल करे नभ उपर, आत्म हल्की होती जान।
ईक ईक कर शरीर छूटता, शुद्ध हंसा रूप ले जान।
साहिब जी : अमरलोक में प्रवेश ले जान।।

क तिल भर मछली खाई के, कौटि गौ करे दान।
कासी करवट ले मरे, तो भी नर्क निदान।
साहिब जी : सार सब्द से पार ले जान।।

882 सुरति 'वे नाम' में जोड़ते, खुलें सुरत कमल किवाड़।
उल्टि स्वांसा का भेद ले, साहिबन खोलें किवाड़।
साहिब जी : सुश्मिन सुरति खोले किवाड़।।

883 श्रद्धा विश्वास दृढ़ पग़ राखो, खुले सुश्मिना द्वार।
औंकार का संग गया, खुले गगन किवाड़।
साहिब जी : सुश्मिना खुले तो प्रलयः पार।।

884 प्रेम नेड़े सांच के, झूठ से लेन ना देन।
सुरति में ध्यावे साध जो, साहिबन नूर बिन लेन ना देन।
साहिब जी : 'वे नाम' सब्द सूं ही लेन देन।।

885 खोजत खोजत हार गये, मिला ना प्रेम भगत प्यारा एक।
अपने आप में चेतन सुरति जगाई, अंदर देख बैठा एक।
साहिब जी : संकरी गली में एक।।

886 सुरति दान मोहे दीजिये, सतगुरू महां देवन के देव।
अंदर दर्शन पल पल दीजिये, पल पल तेरी सेव।
साहिब जी : सुरति से चेतन सुरति की सेव।।

887 साहिबा योग जप दान तप, मुख से कहो ना नाम।
साहिबन कृपा नहीं करहि, जिस सतगुरू संग झूठा प्रेम।
साहिब जी : विशुद्ध महां प्रेम से प्रेम।।

888 ज्ञान योग वैराग़ में निपुणता, कर्म धर्म व्रत्त दान प्रेम जगावे महान।
सतगुरू चरणों में प्रेम ही, कल्याण का मार्ग ले जान।
साहिब जी : सुरति में श्रद्धा भक्ति महान।।

889 सुश्मिन घाट पर सहजता जब, सुरत सब्द में आसन धरो।
कर्म धर्म भाव गये, अंदर सतगुरू संग आसन करो।
साहिब जी : सतगुरू संग आसन करो।।

890 सुश्मिन में ईंगला पिंगला स्वांसों को, सहजता से सम कर डाल।
स्वांसों को नाभी से उपर, रखना ही है खेल कमाल।
साहिब जी : स्वांसों को उपर रखना ही खेल कमाल।।

891 सतगुरू और साधक का मिलन, हंसा और मोतियों का मिलना जान।
मोती सार सब्द की दात प्यारो, मंगल मांहि सुरति जान।
साहिब जी : सार सब्द मंगल मांहि जान।।

892 जैसे बेल वृक्ष लिपटाई, मन माया तजि ना जाई।
माया त्यागी सुरति जागी, जब सब्द में सुरति समाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में सुरति समाई।।

893 जब से प्रेम वर्षा भयी सतगुरू की, सुरति में प्रेम ज्योत लिपटाई।
स्वांस स्वांस बनी परिक्रमां, जो करूं पूजा कहलाई।
साहिब जी : वासना का खेल छूटा जाई।।

894 सुरति सुरत कमल चढ़ाई के, तहं देखा साहिबन रूप महान।
यही विधि कईं बार मिले, खेला संग खेल महान।
साहिब जी : उपर फैंक फैंक कर पकड़ा जान।।

न आठ अटा की अटारी नज़ारा, तहं देखा पुरूष न्यारा।
निरंकार ज्योति औंकार ना, नांहि वहां वेद विचारा।
साहिब जी : नहीं वहां काल पसारा।।

न वह साहिब सब संत पुकारा, और सब पाखंड है पसारा।
सतगुरू चीन्ह दीन्ह यह मार्ग, नानक नज़र निहारा।
साहिब जी : नानक देखा यह नज़ारा।।

895 अपनी जागी प्रीत याद करे हर कोये, मेरी अर्ज़ी प्रेम की प्यास में ही रह जाये।
भक्ति प्रेम का समर्पण किया, कोई प्यारा ही पढ़ पाये।
साहिब जी : लिखाने वाला निज में आ खो जाये।।

क अपनी अपनी गरज़ को, अर्ज़ करे सब कोये।
मेरी अर्ज़ी है यही, तेरी जो मर्ज़ी होये।
साहिब जी : मन मान मिटे तो सुरति जागन होये।।

896 जब लग नाता मन मान सूं, तब लग झूठ सब जान।
सुरति जागे वैराग़ संग, सब जग प्यारा जान।
साहिब जी : सारा जग न्यारा जान।।

897 संत बड़े परमार्थी, साधक में शीतलता भर दें।
तपन बुझायें साधक की, साधक को शीतल कर दें।
साहिब जी : साधक को प्रेम–रंग रंग दें।।

क संत बड़े परमार्थी, शीतल इनके अंग।
तपन बुझायें ओरन की, दें चेतन सुरति से सुरति रंग।
साहिब जी : प्रेम प्रीत जोड़े भक्ति संग।।

898 कहे 'वे नाम' सोहि संत जागा प्यारो, नाम दान अधिकारी।
सबै जग शब्द का बना, सुरति विदेह सब्द डारी।
साहिब जी : सुरति निःअक्षर सब्द में डारी।।
899 नहीं मोहताज आभूषण का, जिसे महां चेतन सुरति साहिबन दी।
अज्ञात शाश्वत अमर देश की, अमर दात साहिब दी।
साहिब जी : अमर दात साहिब दी।।

900 रेगिस्तानों में भी कभी कभी, बूंदा बान्दी हो तो जान।
ता से कहीं पर जल के, अखंड स्त्रोत भी पाये जान।
साहिब जी : अखंड स्त्रोत भी पाये जान।।

901 यह भरोसा सतगुरू दिया, अमर लोक पास मान सरोवर भी जान।
संसार में सच्ची किरण आनंद की, दुखों के बीच ले जान।
साहिब जी : दुखों के बीच ले जान।।

902 जगाओ आस विश्वास सतगुरू पर, क्षण भंगुर सुख की खोज करी।
बूंदा बांदी में कब तक रहें, निज में भरोसे की आस करी।
साहिब जी : निज में भरोसे की आस करी।।

903 इस संसार में छिपा संगीत है, संगीतज्ञ की खबर भी संग साथ।
सदगुरू सब्द साहिबन सब्द हैं, दोनों का संग साथ।
साहिब जी : साहिबन दुल्हनिया संग साथ।
कबीर साहिब की राम दुल्हानियां संग साथ।।

904 स्वर्ग में भी सुख कैसे प्यारो, ईष्या द्वैष भय का संग छूटा मत जान।
जो भोगों सो पाया प्यारो, मालाओं का मुर्झाना संग ले तूं जान।
साहिब जी : मालाओं का मुर्झाना संग जान।।

905 सुख दुख अपनी राह पर, सुरति की ना की पहचान।
सुरति सब्द को पा कर, सुख दुख एक सम्मान।
साहिब जी : सुख दुख एक सम्मान।।

906 दुख सुख दोनों हैं परीक्षा, सुख बिन परीक्षा मत जान।
सुख दुख से बड़ी परीक्षा, सुख की पकड़ महान।
साहिब जी : सुख की पकड़ महान।।

907 सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोये।
कहे कबीर सेवा बिना, सेवक कबहुं ना होये।
साहिब जी : सेवक कबहु ना होये।।

908 दो नैन महां झरना बने, उठी विरह विराग की प्यास।
साहिबन दास कहये उसे, छोड़े मन मान की प्यास।
साहिब जी : छोड़े मन मान की प्यास।।

909 संगीत में प्रेम की ज्योत जगे, डूबने की महिमां जान।
वे ही संगीतज्ञ संगीत में, उस की कर पहचान।
साहिब जी : उस की कर पहचान।।

910 अमृत भावता तृप्ति भावती, निज की कर पहचान।
ऐसी साधना जब करो, बीज वृक्ष फूल बने महान।
साहिब जी : बीज वृक्ष फूल बने महान।।

911 सतगुरू सब्द सत्यपुरूष हैं, मन के पार से आये जान।
दिखने में तो मनुष्य हैं, सत्यपुरूष तदरूप ले जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष तद रूप ले जान।।

912 मन ही औंकार शक्ति प्यारो, यही तीन देव भी ले जान।
मन ही पांच तत्व का तन प्यारो, मन ही तीन लोक का राजा जान।
साहिब जी : ये सारा खेल मन का ले जान।।

913 'वे नाम' मारा प्रीत से, ''वे नाम'' सब्द का बाण।
मेरा मारा जीवित मरे, सतपुरूष सूं पाया बाण।
साहिब जी : प्रेम भक्ति का अति न्यारा बाण।।

914 सतगुरू चरण कमल की वंदना करो, नर रूप में कृपा साग़र जान रे।
वह तो सतपुरूष रूप हैं, जा सूं वचन पत्थर की लकीर जान रे।
साहिब जी : सतगुरू वचन निःसंकोच मान रे।।

तु राम चरित मानस में, गोस्वामी तुलसीदास कहें।
बांधऊ गुरू पदकंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महां मोह तप पूजुं, जा सूं वचन रविकर निकर।।

915 'वे नाम' सुरति मणि, सुरति चेतन सैल लोक लुकांत्तर जानी।
अंत वाहक तन पाया, पूर्ण चेतना लेई जानी।
साहिब जी : साहिबन दर्श सूं पूर्ण चेतन लेई जानी।।

म रे दास संत मिले मोहे सतगुरू, दीन्ही सुरति सही दानी।
मैं मिली जाई पाई पिया अपना, तब मोरी पीर बुझानी।
साहिब जी : मीरा ख़ाक ख़लक सिर डारी तब अपना घर जानी।।

स मुरली धुन बाजा, सूर सुरति सर साज़ा।
घट घट कुण्झ पुण्झ तहं छाजा, पिण्ड ब्रह्मण्ड विराजा।
फौड़ी आकाश अनल पछ भाजा, उल्टि् के आपु समाजा।।

916 प्रेम भक्ति कमाई विरह वैराग़ की, कबहु ना निष्फल जाये।
संगि साथी सब गये, हर ओर उसी को पाये।
साहिब जी : हर ओर उसी को पाये।।

917 लेखा मिटा ले कर्म का, ''वे नाम'' सब्द सूं नाता जोड़।
प्रेम भक्ति मार्ग नित चलें, सतगुरू सूं नाता जोड़।
साहिब जी : सतगुरू सूं प्रीत नाता जोड़।।

918 जो कोई निंदे सतगुरू को, उस में भूख और प्यास।
नर्क जाये जन्मे मरे, पूर्ण मोक्ष की ना जागे प्यास।
साहिब जी : हर पल मन माया की प्यास।।

919 निज को रंक ना कहिये, छोड़ मन माया की आस।
पूर्ण सतगुरू पाई के, चलो साहिबन के पास।
साहिब जी : हर पल सतगुरू पे राखिये आस।।

920 दुख देई मन मान चाहे, कैसे हाथ में आये।
कर्म भ्रम सब त्याग के, सतगुरू चरणन में आये।
साहिब जी : सतगुरू शरणी पार कराये।।

921 ''वे नाम'' – साहिब को एको जानिये, इन दौ में भेद कुछ नांहि।
मैहंदी पात में लाली छिपी, दूध बिन घी नांहि।
साहिब जी : बिन बास फूल नांहि।।

922 मृत्यु पाने के बाद प्यारो, माया से बाहर मत जान।
मुक्ति मिल नहीं पाती प्यारे, फिर माया में फैंक दिया जान।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द पार मत जान।।

923 सोह्म शब्द का बंकनाल में प्रवेश, बंकनाल में विराट जगत ले जान।
अनहद नाद उठत है प्यारो, मर्मात्म मत ले जान।
साहिब जी : जपा अजपा संग अनहद मरना ले जान।।

924 नाम निःअक्षर ''वे नाम'' सब्द, तांहि में रहो सुरति समाई।
निःअंक्षर दात करावे भव पारा, जा ते हंसा लोक सधाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में रहो समाई।।

925 जब अमर सब्द सुरति में समावे, अमर काया संग मिल जावे।
ताहि महिमां सतगुरू बतावे, अपने संग निजघर ले जावे।
साहिब जी : सतगुरू अपने संग निजघर ले जावे।।

क सुरति सब्द में जोड़ते, खुले गगन किवाड़।
जगमग जगमग हो रहा, सतपुरूष द्वार।
साहिब जी : सुरति सूं पहुंचो सतगुरू द्वार।।

क सतगुरू सब्द निष्चय सत्त मानें, तब बृहंगा सब्द सुरति पा जावी।
जग की सब आस तजि, काग़ा हंस करि जावी।
साहिब जी : सतगुरू संग घर जावी।।

926 ''वे नाम'' सब्द की दात जो पाये, हर पल सतगुरू संग सहाये।
शीष कटि भुवें धरें, सतगुरू चरणन में रख पायें।
साहिब जी : तां से ही निजघर जायें।।

927 सतगुरू मिले सब्द पाईये, मिट जाये सब संदेह।
साध पावे सुरति सूं, जन्मों जन्मों का मिटे संदेह।
साहिब जी : सब्द ही मिटावे सब संदेह।।

928 मन गयो जो हरि का रूप, सुरति होई मन अधीन।
चाह गई थिरता भई, सार सब्द किया मन अधीन।
साहिब जी : सुरति चेतन सुरति अधीन।।

929 सतगुरू 'वे नाम' मिले साहिब मिले, अंदर जागी प्रतीत।
सूरज उगा धूप ऊर्जा बनी, वायु जान प्रेम प्रतीत।
साहिब जी : सतगुरू मिले तो जागी प्रीत।।

930 चार मुक्ति से पार कोई एक ना, ये सब दुख की रीती।
जो कोई आवे संत सत्संग में, जाने प्रेम भक्ति की रीती।
साहिब जी : सत्संग प्रकटावे प्रेम प्रतीती।।

931 मैला कुचैला जल भी प्यारो, सतगुरू चरणों में सुगंग होये।
'वे नाम' संगति संतन की, काग़ा से हंसा हो जाये।
साहिब जी : 'वे नाम' संगति काग़ा से हंसा करि जाये।।

932 जन्म जन्म का फेरा मिटा, सतगुरू सब्द दे किया उपकार।
सतगुरू का होई रे, वह ही पार लगावनहार।
साहिब जी : सतगुरू का मान उपकार।।

933 भेस देख सुरति भरमी, बुझा लीजिये ज्ञान।
बिन कसौटि होत नांहि, कंचन की पहचान।
साहिब जी : सुरति में डारो सार सब्द बलवान।।

934 सब्द भेद निःसब्द बताऊं, कर निष्कर्म हंसा निज जाने।
निर्लम्भ अवलम्भ ना जाने, सब्द निरंतर भेद ब्ख़ाने।
साहिब जी : सब्द की महिमां सुरति सूं जानें।।

935 मुक्ति चार से पार कोई एक ना, ये सब दुखों की रीती।
जो कोई आवे संतन सत्संग में, जाने प्रेम भक्ति की रीती।
साहिब जी : सत्संग प्रेम भक्ति की रीती।।

936 सुरतिवान होते हुऐ भी प्यारो, अपने आप को अज्ञानी समझ रे।
शक्ति सम्पन्न होते हुऐ भी, शक्तिहीन समान निज समझ रे।
साहिब जी : अपने आप को अज्ञानी समझो रे।।

क मक्खी गुड़ में गड़ रही, पंख रहयो लिपटाये।
हथ मैले और सिर घुने, लालच बुरि बलाये।
साहिब जी : लालच तजा ना जाये।।

क दोष पराया देखि कर, चले हसत हसत।
अपने याद ना आवही, जिनका आदि ना अंत।
साहिब जी : दूसरों के गुण देखे अपनों का नांहि अंत।।

क योग यज्ञ जप तीर्थ, ये सब यम के जाल।
कहे कबीर सत्तनाम बिन, कबहु ना छूटे मन मान जाल।
साहिब जी : बिन सब्दै ना छूटे मन माया जाल।।

क यही बड़ाई सब्द की, जैसे चुम्भक भये।
बिन सब्द नहीं उभरे, कैता करो उपाये।
साहिब जी : सब्द बिन ना कोई उपाये।।

937 काया नाम सभी गुण गावें, ''वे नाम'' सब्द कोई बिरला पावे।
''वे नाम'' सब्द पावे वोहि, जो कोई सांचा साध होवे।
साहिब जी : सांचा सब्द ही काया भेद मिटावे।।

938 तीन लोक से उपर, 'वे नाम' सतगुरू नाम।
एक बार नर को पुकार है, पा लो सांचा नाम।
साहिब जी : पा लो निजघर निजधाम।।

939 साहिब सत्त तो 'वे नाम' प्यारो, निज को सत्य करना ही सच्चा काम।
तीन सत्य के मेल सूं, ईक में समाना ही सांचो काम।
साहिब जी : तीन मिले तो बने काम।।

940 सतगुरू मेल सा तप नांहि, झूठ के संग से पाप।
जिस ने निज को निज में पा लिया, छूटा पाप संताप।
साहिब जी, सतगुरू मिटावें पाप संताप।।

941 जा सतगुरू से निजघर का पता ना मिले, ''वे नाम'' सब्द दात ना पाये।
सो तो सतगुरू है नांहि, उस दर फिर कबहु ना जायें।
साहिब जी : बिन सतगुरू किसी ओर ना जायें।।

942 अमर लोक में अमर काया, परमहंस कहलाये।
कहे 'वे नाम' तहं वास हमारा, परमपुरूष देस कहलाये।
साहिब जी : परमपुरूष देस कहलाये।।

943 'वे नाम' साहिब के रूठते, सतगुरू को शीष चड़ायें।
पर सतगुरू के रूठते, साहिबन संग छूटा जाये।
साहिब जी : बिन सतगुरू साहिब ना सहाये।।

944 मन मान का मिटना ही, ख़ाक समान बनाता ले जान।
ख़ाक बन सतगुरू चरणन में, तोही मंज़िल मिलना जान।
साहिब जी : सतगुरू चरणन ही मूल लक्ष्य ले जान।।

945 निज को मिटाना ही सतगुरू को पान, शब्द पाने से आता अहंकार।
जब तक चेतना चेतन नांहि, कुछ भी पाना देता अहंकार।
साहिब जी : सतगुरू सेव ही मिटावे अहंकार।।

946 बिन सतगुरू संग प्रीत के, काम क्रोध का ना छूटे संग।
तां से सार सब्द सुरति नांहि, फिर सार सब्द से कैसा संग।
साहिब जी : प्रेम भक्ति से जुड़ता संग।।

947 बिन नामे प्रीती जागे नांहि, फिर भक्ति कैसे आवे हाथ।
भक्ति बिन मन मान शांत नांहि, फिर मन कैसे निवावे माथ।
साहिब जी : सतगुरू चरणन में निवावें माथ।।

948 सतगुरू समर्थ जीहिं संग में, कोई ना बिगड़े काज।
आत्म ज्ञान सुरति में चले, सतगुरू सवारें काज।
साहिब जी : सतगुरू सवारें बिगड़े काज।।

क काम प्रबल अति भंयकर, महां दारूनल काल।
गंण गंधर्व यक्ष किन्नर, सबहै कीन बेहाल।
साहिब जी : काल अधीन सबै बेहाल।।

949 मन दुविधा मन स्वभाव प्यारो, उसे मिटाना भी दुविधा जान।
सुरति को सतगुरू चेतन सुरति से, चेतन करना मिटावे मन मान।
साहिब जी : दुविधा को रहने देना सच्चा ध्यान।।

950 जीवन असुरक्षा का दूसरा नाम प्यारो, कर इससे सत्य की पहचान।
सत्य पहचान से अकांक्षा विलीन प्यारो, असुरक्षा से मुक्ति जान।
साहिब जी : सतगुरू शरणी सुरक्षा महान।।

951 सपने मात्र तीव्रता विक्षप्ता प्यारो, सपनों की शुन्यता स्वस्थ ले जान।
कल्पनाओं में खोया हर नर प्यारो, उसी में सोया ले जान।
साहिब जी : बिन सार सब्द नर सोया ही जान।।

952 पागलखाने हर ओर प्यारो, विकसत सम्पन्न देश पागलखाने महान।
स्वयं का पागलपन प्यारो, स्वयं को दिखाई देता मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन छूटा ईक मत जान।।

953 जब ही स्वयं पर संदेह प्यारो, पागलपन की होत पहचान।
उसी के पागलपन के टूटने का प्यारो, समय आया ले जान।
साहिब जी : सतगुरू शरणी छुड़ावे पागलपन आन।।

954 प्रत्येक मन अपना जगत प्यारो, चारों ओर फैला ले जान।
देत है सपने दिन रात प्यारो, हर पल खेल दिखाते ले जान।
साहिब जी : चित्त को सब कुछ याद ले जान।।

955 विक्षप्ता बोध से विक्षप्ता मिट जाती, अज्ञान बोध से अज्ञान खो जाता ले जान।
स्वपन्न के बोध से स्वपन्न खो जाते, शेष प्रेम सत्य भक्ति रह जाती ले जान।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम भक्ति की खान ले जान।।

956 साधना में ''वे नाम'' सब्द में जाना, उसी में डूबा जागना ले जान।
सार सब्द चेतन सुरति प्यारो, निज की करावे पहचान।
साहिब जी : निज स्वभाव की पहचान ले जान।।

957 सतगुरू की आंख में आंख को डारो, क्रौध मोह अहंकार छूटा ले जान।
गहरे और गहरे अति गहरे प्यारो, मोन के ये पल महान।
साहिब जी : सुरति चेतन से प्रेम प्रकटा ले जान।।

958 खोज खोज के भी प्यारो, क्रोध मोह कहीं दिख ना पाये।
स्वभाव जो होता प्यारो, सदा साथ रहता ले जान।
साहिब जी : मरने पे भी ये सब संग साथ ले जान।।

959 विरह वैराग़ से प्रेम भक्ति फल प्यारो, पांच चोरों का संग छूटा साथ।
सुरति सब्द स्वांसा हों एक जब, मिले सतगुरू का संग साथ।
साहिब जी : सुरति से मिलें सतगुरू संग साथ।।

960 भूख प्यास मन मान की उकसावे, करावे निंदा सतगुरू आन।
हाथ में कुछ आवे नांहि, काल का देश महान।
साहिब जी : जन्म जन्म हों स्वान।।

961 रंक निज को मन मान करे, सतगुरू सब्द महिमां जान।
जो सतगुरू को सुरति में देखता, उसकी महिमां महान।
साहिब जी : सतगुरू महिमां मान।।

962 हर जीव को दुख दर्द देई, मान बड़ाई से दान।
निज को धोखा दे रहा, मोक्ष मिले ना दान।
साहिब जी : मन मान सूं मिले ना मोक्ष दान।।

963 कर्म धर्म भरम सब कारण दुख के, 'वे नाम' का ना पकड़ा हाथ।
संतन की महिमां जानी ना, प्रेम भक्ति कैसे आवे हाथ।
साहिब जी : सतगुरू बिन प्रेम भक्ति ना आवे हाथ।।

964 परम तत्व अजर अमर प्यारो, छूट गयो मन माया जंजाल।
'वे नाम' कहे दूर गुप्त घर मेरा, भेद पाये छूटे जंजाल।
साहिब जी : सतगुरू आन छुड़ावे जंजाल।।

965 सदा आनंद उस देस में, परमहंसा कबहु ना होत उदास।
सत्यपुरूष का पल पल संग मिले, तहां हंसों का वास।
साहिब जी : सतलोक में हंसन वास।।

966 सोते जागते हर पल ही, पूर्ण सतगुरू आगे करो समर्पण।
सुन्न में सुरति का वास जब, ध्यान अनुभव भी ईक समर्पण।
साहिब जी : समर्पण समर्पण और समर्पण।।

967 दीन दुखी को दीन बंधु करे, जे तूं उसी का होये।
जो प्रेम प्यारा अंतरदृष्टि् से देखता, बच के निकलना ना होये।
साहिब जी : प्यारे का प्यारा जा होये।।

क जब घट मोह समाया, सबै भया अंधियार।
निर्मोहि ज्ञान विचारि के, कोई साधु उतरे पार।
साहिब जी : कोई प्यारा ही उतरे पार।।

क कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजनी येह।
साहिब जी : मन मान तजना दुर्लभ नेह।।

क माया तजे तो क्या भया, मान तजा ना जाई।
मान बड़े मुणिवर गले, मान सबन को खाई।
साहिब जी : सार सब्द बस पार लगाई।।

968 जो आंखे सतपुरूष को देखें, उनकी आंखों में देख।
उनकी आंखों में परम जोत जलत, ता ज्योति से सुरति चेतन देख।
साहिब जी : सतगुरू आंखें सुरति चेतन देख।।

969 ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष सूं आयो, निःअक्षर सब्द चेतन सुरति धारा।
इस दात से पक्का साध कहलाये, जागे सुरति की धारा।
साहिब जी : बहे चहुं ओर 'वे नाम' सुरति धारा।।

970 कहन सुनन से बात बने ना, सुरति दात पाई काम बन जाये।
सतगुरू की सुरति में सुरति समावे, रोम रोम जग जाये।
साहिब जी : सतगुरू सब्द रोम रोम जगाये।।

971 सतगुरू दर्शन बारंबार कीजिये, स्वांस स्वांस संग साथ।
हर दरस की महिमां महान, दौ का संग ईक साथ।
साहिब जी : उपकार पे उपकार ईक साथ।।

972 प्रेम से भक्ति प्रेम से दर्शन, दर्शन से मुक्ति द्वार।
ये सब ''वे नाम'' सब्द से, चलो संग साहिबन दरबार।
साहिब जी : आओ चलें उस पार।।

973 प्रेम सत्संग भक्ति, चौथा अमरपुर देस।
दात पाओ प्रकटे भक्ति, संग सतगुरू निज देस।
साहिब जी : प्रेम भक्ति से जाओ अमरपुर देस।।

974 तीन लोक न्यारो प्यारो, पंच तत्व से पार है देस।
अमरलोक सतगुरू सब्द का, सुरति चेतन से पाओ देस।
साहिब जी : प्रेम भक्ति से पाओ साहिबन देस।।

975 प्रेम भक्ति होत उस घर में, कोई ना रहता उदास।
तहं जाये कोई 'वे नाम' सा प्यारा, फिर जगाने आये इस देस।
साहिब जी : सतगुरू आन जगायें इस देस।।

976 धर्म अधर्म की तहं बात कुछ नांहि, नांहि पाप पुण्य विस्तार।
शांत सहज आनंद मांहि, तीन लोक से न्यार।
साहिब जी : सच्चा पिता हमार।।

977 मुक्ति देते मुक्त रहते, संत जगाते आकर इस देस।
सतगुरू शरणी जो आवही, जाग कर जावे निज देस।
साहिब जी : सतगुरू संग जाओ निज देस।।

978 जहां प्रेम सत्संग तहं भक्ति है, सतगुरू कृपा उस देस।
''वे नाम'' सब्द से सब होत है, जाओ 'वे नाम' संग उस देस।
साहिब जी : आओ चलें उस देस।।

979 प्रेम सत्त शुभ गुणों से भरा, सत्य प्रेम भक्ति में समाया 'वे नाम'।
अब कुछ पाना रहा नांहि, साहिबन रूप 'वे नाम'।
साहिब जी : साहिबन रूप 'वे नाम'।।

980 कोन नाम अनामी कहिये, किस को कहिये संत न्यारा।
''वे नाम'' सब्द सतपुरूष सूं आयो, तीन लोक से न्यारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जग से न्यारा।।

981 सुरति मस्तानी ''वे नाम'' सब्द समानी, सतगुरू संग निजघर जावे।
कोटि ज्ञान से पार सब्द वह, चेतन सुरति निजघर ले जावे।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं निजघर जावें।।

982 त्रिगुणि ईश्वर को सब भजें, निःअक्षर सच्ची दात दी विसार।
गुप्त ''वे नाम'' सब्द सतगुरू सूं पावें, नहीं तो फिर फिर भव साग़र द्वार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही करावे पार।।

983 सुरति भ्रम जाल में अटकी, मन माया रचियो ये जाल।
जिन जिन ''वे नाम'' सब्द महिमां को जाना, हंसा हो तोड़ा मन माया जाल।
साहिब जी : हंसा हो तोड़ो मन माया जाल।।

984 निर्गुण से औंकार का उत्पन्न होना, जासे तीन गुणों का विस्तार।
प्रेम भक्ति से हंसा उभरे, चेतन सुरति से हंसा उस पार।
साहिब जी : चेतन सुरति करावे भव पार।।

985 सर्गुण निर्गुण से परे प्यारो, सतलोक का भेद 'वे नाम' सार।
सतपुरूष पांच तत्व तीन गुणों से न्यारा, माया सृष्टि् से पार।
साहिब जी : सतपुरूष माया सृष्टि् से पार।।

986 'वे नाम' में गोता सुरति पवन संग खायें, मन माया से उपर सुरति धार।
महां सुरति सार सब्द में, गोता मार सुरति की धार।
साहिब जी : हर जीव संग सुरति की धार।।

987 बाजीगर हर मानवा, जीवे मन के हाथ।
भांति भांति के नाच करे, बंधे मन के साथ।
साहिब जी : जीव रमयो मन साथ।।

क बाजीगर का बांधरा, ऐसे जीव मन साथ।
नाना नाच नचाई के, राखे अपने हाथ।
साहिब जी : जीव बसयो मन साथ।।

988 'वे नाम' विलम्भ ना कीजिये, ऐसे अवसर फिर जीवन नांहि।
इसी समय 'वे नाम' दास को पा लो, बार बार ऐसो अवसर नांहि।
साहिब जी : जागे बिन कोई जाने नांहि।।

989 संतन सेव करि नांहि, नांहि पाया सच्चा नाम।
कंई जन्म ऐसे बीत गये, कब पाओगे सांचो नाम।
साहिब जी : कब सुमिरोगे नाम।।

990 लाखों जन्म मजे की खातिर कटे, करि ना निज पहचान।
सिर पर है खड़ी मोत, सतगुरू सूं ना पाया सब्द का दान।
साहिब जी : पायो नांहि सब्द का दान।।

991 ज्युं ज्युं सूखें तालाब रे, त्युं त्युं मीन मलीन।
हर एक का तालाब सूख रहा, त्युं त्युं आत्म मलीन।
साहिब जी : माया में आत्म मलीन।।

992 बीते बरस मास दिन पहर प्यारो, घड़ी घड़ी पल पल जान।
मिला ब्याज ना मूल है, पायो ना ''वे नाम'' सब्द का दान।
साहिब जी : पाओ ''वे नाम'' सब्द का दान।।

993 प्रेम भक्ति को जानो, और झूठा मन मान।
झूठ सुने और बात करे, अंदर भरे झूठ अज्ञान।
साहिब जी : जग में फैला झूठ अज्ञान।।

994 पवन सुरति निरति को पलट कर प्यारे, गंग यमुना के घाट है लाना।
सुश्मिन द्वार चेतना प्यारो, सुरति पवन सब्द में समाना।
साहिब जी : उल्टा जाप जपा तब जाना।।

995 हीरा जन्म अनमोल प्यारो, मनुष्य का तन पाना।
दिवस ध्यान रात ध्यान प्यारो, तभी होत निज में जाना।
साहिब जी : साहिबन देस को पाना।।

996 आकाश तत्व ही निरंकार प्यारो , उस से भिन्न मत जान।
पहला तत्व आकाश प्यारो, और सृष्टि विनाष में अंतिम ले जान।
साहिब जी : औंकार भक्ति से पार मत जान।।

997 वेद कुरान बाईबल आदि प्यारो, निरंकार को परमात्मां मानते जान।
भिन्न भिन्न जीव का होना प्यारो, निरंकार का काम ले जान।
साहिब जी : आत्म तत्व को जानना काम महान।।

998 कुल पुत्र से चलता प्यारो, जैसा बीज पृथ्वी में डालो वैसा ही रूप आ जाता।
पृथ्वी माता कहलाती प्यारो, माता में सब ही आ समाता।
साहिब जी : माता में सब समाता।।

999 मेरी सुरति में समा गये, प्यारे के मीठे बोल रे।
पिया के मीठे बोल सुनत, पकड़ी महांचेतन सुरति बिन बोल रे।
साहिब जी : पकड़ी पिया की महांचेतन सुरति बिन बोल रे।।

1000 भंवर गुफा से उपर चलो प्यारो, सुरत कमल दरबार।
महांचेतन पाया रूप पिया का, संग चली साहिबन दरबार।
साहिब जी : संग संग चलो साहिबन दरबार।।

1001 सतगुरू कृपा से कोई साध प्यारो, अनिल पक्षी सुरति से निजघर वासा।
अति दूर सुन्न में वासा करे, चेतन सुरति सूं करता सुन्न में वासा।
साहिब जी : पवन सुरति में करता वासा।।

1002 हर कार्य में सुरति नितांत आवश्यक, सुरति ध्यान में आत्म जान।
जहां ध्यान वहीं है वासा, ध्यान में सब संभव ले जान।
साहिब जी : ध्यान बिन तन मेला जान।।

1003 ध्यान हटते दुर्घटना घटी, सुरति हर पल करती काम।
जग में अटक गई है प्यारो, इसी सूं होता हर काम।
साहिब जी : सुरति सूं बनें सब काम।।

1004 सुन्न में जावे महासुन्न में जावे, सतगुरू दात बिन नहीं पार रे।
''वे नाम'' सब्द ख़र अक्षर से पार प्यारो, जो पावे बने साहिबन का रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुन्न महांसुन्न से पार रे।।

1005 सुन्न महांसुन्न से भिन्न पसारा, अमरलोक सच्चे पिता का न्यारा रे।
प्रेम भक्ति आनंद से भरा प्यारो, भिन्न ''वे नाम'' सब्द कोई नहीं पारा रे।
साहिब जी : साहिबन देस न्यारा रे।।

1006 पंच तत्व गुण तीन तहां ना, नांहि तहां सृष्टि् विस्तारा रे।
ऊंच नीच का भेद तहां ना, नांहि पाप पुण्य विस्तारा रे।
साहिब जी : शीतल शांत आनंदमयी देस हमारा रे।।

1007 संत हैं आते जीव जगाने, निजघर ले जाना काम रे।
मुक्ति उनकी चेरी प्यारो, भक्ति का सच्चा लक्ष्य मोक्ष जान रे।
साहिब जी : भक्ति का लक्ष्य मोक्ष ले जान।।

1008 सतगुरू शरणी जो आवे प्यारो, पूर्ण मोक्ष पा जावे रे।
मन मान का संग गयो, अमर देस का वासी कहावे रे।
साहिब जी : जन्म मरन से पार हो जावे रे।।

1009 सतगुरू शरण ना आवहि, जन्म मरन संग साथ।
ये तो सच्चा जीवन नांहि, रहे काल का जाल संग साथ।
साहिब जी : काल का जाल रहे संग साथ।।

1010 पांच तत्व तीन गुण का सकल पसारा, ''वे नाम'' सब्द साहिबन सुरति धारा रे।
''वे नाम'' सब्द सतपुरूष सूं पायो, महांचेतन सुरति की धारा रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द चेतन सुरति की धारा रे।।

1011 सत्य सब्द पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा, देखन में कैसे आवे रे।
''वे नाम'' सब्द गुप्त प्यारो, सतगुरू सूं पा जाओ रे।
साहिब जी : सतगुरू सूं सब्द पाओ रे।।

1012 सुरति भव सागर भ्रमजाल में भटकी, सतगुरू सब्द पार करावे रे।
सब्द पाये हंसा बने, पल में प्रेम प्रीत उभर जावे रे।
साहिब जी : सब्द पल में उभारे रे।।

1013 सतगुरू सेवा में रहें, साधक भी सेव कमाये।
जग में जग की सेवा बिन, सत्यपुरूष का प्यारा कैसे होये।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सेव करने को आये।।

1014 मानस जन्म अनमोलक प्यारो, पूर्ण मोक्ष पाने को आयो।
जो यह अवसर हाथों से गया, जग में आने का भेद ना पायो।
साहिब जी : मानस जन्म बारम्बार ना पायो।।

1015 सतगुरू महिमां अनंत अनंत प्यारो, सब पर करे अनंत उपकार रे।
सत्य सब्द आवर्णिय प्यारो, मन वाणी से पार रे।
साहिब जी : अक्का सब्द मन वाणी से पार रे।।

1016 देवी देव गुरूआ जगत में, पूजा करें सब कोये।
सतगुरू सब्द में ध्यान धरें, सच्चे साहिबन की पूजा होये।
साहिब जी : इस विध हर एक की पूजा होये।।

1017 प्रेम दुख सुख वाचा वृत्तियां प्यारो, सब में एक ले जान।
काम क्रौध आदि में भी प्यारो, वृत्तियां सब में एक सी जान।
साहिब जी : सार सब्द से वष में सबै होत जान।।

1018 तीन लोक स्वपन्न रूप प्यारो, आत्म परमात्म गुरू शिष्य भी स्वपन्न ले जान।
चंद्र सूर्य वाचा अवाचा स्वपन्न रूप, पिण्ड और ब्रह्मण्ड भी स्वपन्न ले जान।
साहिब जी : परमात्म भी स्वपन्न ही ले जान।।

1019 सतगुरू दाता दुख भंजन, सब की करो सम्भार।
तुम केवट अति न्यारे, सबै कराओ भव पार।
साहिब जी : दृढ़ करि पकड़ो कराओ भव पार।।

1020 सतगुरू दीन दयाल जी, तुम संग लागी प्रीत हमारी रे।
प्रेम भक्ति के महांसागर साहिब जी, तुमहि ले चलो उस पार रे।
साहिब जी : साहिब ही ले चलें उस पार रे।।

1021 आत्म ज्ञान रूपी हीरा मन सहज से, जब आशा तृष्णा का संग जाये।
मन का समुन्दर कैसो, सतगुरू सब्द सूं बात बन जाये।
साहिब जी : चंचल मन शांत हो जाये।।

1022 मनवा पंछी की तरहं, ऊंची ऊंची उड़ान करता जान।
''वे नाम'' सब्द की दात सूं, उड़ान के पंख कटे जान।
साहिब जी : सब्द सूं मन अधीन ले जान।।

1023 प्रेम भजन करने में आलसी, उड़ान भरने को तैयार।
ये मन सतगुरू को सौंप दे, पल में जागे प्यार।
साहिब जी : सब्द ले चले भव पार।।

क ये मन नीचा मूल है, नीच कर्म सुहाये।
अमृत छोड़े मान करि, विषहि प्रीति करे खाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही पार कराये।।

क ऐसा कोई ना मिले, जैसो कहुं दुख रोये।
जैसो कहिये वेद को, वो फिर वैरी होये।
साहिब जी : सारा जग वैरी होये।।

क चल हंसा सतलोक को, छोड़ ये संसारा।
ये संसार काल का देस, कर्म जाल पसारा।
साहिब जी : त्रिलोकि कर्मन जाल पसारा।।

1024 दान दिये मन मान बड़े, सुरति सूं कौसों दूर।
सुरतिधारा देख लो, सतलोक सूं कौसों दूर।
साहिब जी : जग जीव सतलोक सूं कौसों दूर।।

क दान दिये धन ना घटे, नदी ना घटे नीर।
अपनी आंखों से देख लो, ये कथि कहि कबीर।
साहिब जी : सच्च से कौसों दूर।।

1025 सर्गुण निर्गुण भक्ति से कोई पार ना, परा भक्ति का भेद महान।
निःसब्दी मोल में आते नहीं, पूर्ण 'वे नाम' सतगुरू की कर पहचान।
साहिब जी : सहज भक्ति सूं पार ले जान।।

1026 सर्गुण भक्ति में संसार पड़ा, निर्गुण भक्ति में योगी योगेश्वर पड़े ले जान।
परा भक्ति दोनों के पार प्यारो, सच्चे पिता की होत पहचान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू की करो पहचान।।

1027 कोई सर्गुण कोई निर्गुण भक्ति करे, इनसे एक ना पार।
परा भक्ति दोनों से पार प्यारो, तीन लोक से पार।
साहिब जी : अमरलोक उस पार।।

1028 आये जाये सो माया प्यारो, सच्चे साहिब का अमरपुर देस।
आत्म ज्ञान से बात बने, तबहि पाओ सच्चा देस।
साहिब जी : अमरपुर साहिबन सांचा देस।।

1029 आत्म ज्ञान बिन कोई पार ना प्यारो, बंधन से मुक्ति पाना सच्चा काम।
सत्य प्रेम की ज्योत जगाओ, सुरति जगाना सच्चा काम।
साहिब जी : सत्य को पाना ही सच्चा काम।।

1030 सुरति डालो 'वे नाम' में, और ना चितावे दास।
जो कुछ चितावे नाम बिन, जानो जन्म मरन की फांस।
साहिब जी : बिन नामे सबै काल की फांस।।

1031 तन स्थिर मन भी स्थिर प्यारे, सुरति निरति भी स्थिर होये।
ऐसी अवस्था जब मिले, आत्म साक्षात्कार हो जाये।
साहिब जी : निज की पहचान हो जाये।।

क मरते मरते जग मुआ, मरन ना जाना कोये।
ऐसी मरनी ना मरा, बहुरि ना मरना होये।
साहिब जी : जग में बारम्बार जमना मरना होये।।

1032 बिन प्रेम नहीं भक्ति है, प्रेम भक्ति का प्राण।
बिन प्रेम भक्ति ना उपझे, सो नर बिन प्राण।
साहिब जी : भक्ति बिन जीव बिन प्राण।।

1033 आत्म ज्ञान बिन बात बने ना, चाहे जाओ मथुरा काशी कैलाश रे।
मृग की नाभी मांहि बसे कस्तूरी, बन बन ढूंढन जाये रे।
साहिब जी : जल में मीन प्यासी रे।।

1

034 पित्तरों की भक्ति से प्यारो, पित्तर लोक में वासा ले जान।
देवताओं की भक्ति से प्यारो, देव लोक में वासा ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की भक्ति महिमां तूं जान।।

1035 जैसा जैसा सामर्थय प्यारो, उतनी सहायता कर पाये रे।
गाये बछड़े की मुर्गी अपने बच्चे की, सुरक्षा करते जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां जान रे।।

1036 मन की तरंग से प्रेम तरंग निथार लो, तो निज की होत पहचान।
सार सब्द की दात जब पास में, तो मन माया की होत पहचान।
साहिब जी : बुरी आदतों से छुटकारा पाये ले जान।।

1037 ''वे नाम'' सब्द हीरों की पौटली, बारम्बार खोलना नहीं काम।
बिन पारखी के खोलना, गाली समान है काम।
साहिब जी : कुंजड़न का हीरा रत्न से क्या काम।

1038 सत्य पाना साधन से ना होई प्यारो, सतगुरू कृपा पावे कोई कोई।
ये जग अंधों का देस प्यारो, बिन सतगुरू कृपा जागे ना कोई।
साहिब जी : बिन सतगुरू कृपा जागे ना कोई।।

1039 खाक हो सतगुरू चरणन में प्यारो, तो ही मोक्ष मिले।
बिन सतगुरू के कोई पार ना, चाहे लख गुरू जा मिले।
साहिब जी : बिन सतगुरू सत्य भेद ना मिले।।

1040 पाप कर्मों से रहता प्यारो, जिस का मन मलीन।
उस के सपनों में भी कभी, साहिबन संग नहीं।
साहिब जी : सुरति निरति सूं परे वह दीन।।

क गारी आवत एक है, उलटत होती अनेक।
कहे साहिब ना पल्टिये, रहे एक की एक।
साहिब जी : एक को पकड़ो ना कि अनेक।।

पंच तत्व, रंग व स्वाद

1041 काला रंग आकाश का, फीको इसका स्वाद जान।
काला रंग 92 प्रतिशत अंधकार में, आकाश का रंग ले जान।
साहिब जी : भौतिक तत्व ही इसे ले जान।।

1042 पीला रंग जानो धरती का, मीठा इसका स्वाद।
श्वेत रंग जानो नीर का, खारा जिसका स्वाद।
साहिब जी : सागर नीर खारा स्वाद।।

1043 लाल रंग हर अग्नि का जानो, तीखो चटपटो स्वाद।
नीला रंग है वायु का, खटटो जिसका स्वाद।
साहिब जी : रंगों के जानो तुम स्वाद।।

1044 आत्म पंच तत्व से दूर प्यारो, किसी भी देस काल और अवस्था में ना जान।
आत्म अपने आप में पूर्ण प्यारो, बिन सहारे इसे ले जान।
साहिब जी : आत्म अजर अमर तूं ले जान।।

1045 काला रंग भय का, अंधेरा करे भयभीत।
काम आग ना बुझे जब, अंधेरे से जागे प्रीत।
साहिब जी : सतगुरू आन मिटावे भय प्रतीत।।

1046 मन का खेल रंग बिरंगा, ना ना नाच नचाये।
काम करे आत्म सुरति से, उसी को दे भरमाये।
साहिब जी : भ्रम दूर भगायें।।

1047 तन मोह माया से मलीन प्यारो, मन उपझाये नेह।
आत्म मन से मलीन प्यारो, सतगुरू सब्द उतारे खेह।
साहिब जी : सतगुरू सब्द उतारे खेह।।

1048 शोख रंग रंगी त्रिलोकि प्यारो, काम मोह वासना खेह।
सतगुरू चढ़ावे सुरति रंग प्यारो, तांहि उतरे खेह।
साहिब जी : सतगुरू संगति जगाये प्रीत प्रेम नेह।।

1049 मन रंग में रंगा जीव, तन मन हो मलीन।
बिन सतगुरू सब्द के, जीव यमों के अधीन।
साहिब जी : जग जीव मन अधीन।।

1050 आत्म के भेद बिन प्यारो, भटक रहा हर एक नर ले जान।
भूख प्यास इसे लागे नांहि, बिन आत्म निर्जीव तन ले जान।
साहिब जी : सुरति निरति के रूप में इसे ले जान।।

1051 तन का आत्म से मेल ना, तन मरता पर आत्म अमर ले जान।
ईन्द्रियां भी आत्म से भिन्न प्यारो, निज को आत्म बिन मत कुछ जान।
साहिब जी : आत्म ही सत्यपुरूष अंश ले जान।।

1052 मुख प्यास सुकड़ना पसरना प्यारो, शरीर से जुड़े ले जान।
शब्द रस आदि का भेद भी प्यारो, शरीर से जुड़े ले जान।
साहिब जी : आत्म से तन का लेन ना देन।।

1053 भवसागर कर्मन की धारा, कहीं दिखता नहीं किनारा।
जहां तक बावन अक्षर की धारा, कर्म लेख की धारा।
साहिब जी : वेद क्तेव सब कर्म अनुसारा।।

1054 हर कोई कर्मन जाल फंसा प्यारो, बिन सार नहीं पारा रे।
कर्म फांस छूटे नांहि प्यारो, जन्म मरन से नहीं पारा रे।
साहिब जी : कर्म बतावें निष्कर्म की धारा रे।।

1055 कर्म फांस से जग छूटे नांहि, लख करो उपाये।
''वे नाम'' सब्द से बात बने, जब चेतन सुरति में दियो पठाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं बात बन जाये।।

1056 सार सब्द प्रेम प्राण को जोड़े, सब सब्दों का सुरति बाण।
प्राकृति पार सब्द यह, सत्यपुरूष महां सुरति का बाण।
साहिब जी : साहिब सत्तपुरूष ही सब्द सुरति का बाण।।

1057 मन वाणी से पार प्यारो, सुरति महान सब्द स्वरूप।
सत्त प्रेम भक्ति ईक संग है, महां चेतन सुरति स्वरूप।
साहिब जी : 'वे नाम' सुरति धारा महां चेतन स्वरूप।।

1058 स्वपन्न जाग्रत के मध्य में, निज का बोध महान।
महां सुन्न पार से आता, महां चेतन सुरति सब्द महान।
साहिब जी : चेतन सुरति कराये निज बोध महान।।

1059 ज्युं ही निज को भूल गये प्यारो, सब्द का पाया साथ।
वह ईक डौर प्यारी प्यारो, काया बाहर ये डौर संग साथ।
साहिब जी : साहिबन पाये प्रेम डौरी संग साथ।।

1060 जाग्रत जब हो जायें प्यारो, निज का पाओ संग साथ।
सब्द जान गयो जब प्यारो, काया डौर का छूटा साथ।
साहिब जी : मन माया तरंग छूट गयो सब साथ।।

1061 आत्म रूप हर हंसा प्यारो, अमरलोक से आया जान।
औंकार भगवन से मन माया मिली, दोनों से पार होना ले जान।
साहिब जी : निज की कर पहचान।।

1062 अपने मन को देख लो, भाव पे भाव देता ले जान।
सुरति को चैन लेने देता नहीं, भजन में कैसे लागे ध्यान।
साहिब जी : आओ चलें निजधाम।।

1063 योग मत में पांच मुद्राओं की ध्यान साधना प्यारो, संत मत आगे और अलग ले जान।
चाचरी भूचरी अगोचरी प्यारो, उनमुनि खेचरी मुद्रा ले जान।
साहिब जी : पंच तत्वों की उत्पत्ति ले जान।।

1064 जैसे रूई लिपटी आग में, मन मान सुरति को लपेटा ले जान।
भजन चिंतन कैसे करें, जब मन के हाथ कमान।
साहिब जी : मन मान की छोड़ो कमान।।

1065 बिन सुरति काज करे, फिर पछतावा होत।
विचार से बात बने नांहि, दुख से और दुख होत।
साहिब जी : मन से बने ना बात।।

1066 आंसुओं की लहर का प्यारो, अंत कब आया जान रे।
वैराग़ से अनुराग़ प्यारो, अनुराग़ से प्रेम में उत्तर ले जान रे।
साहिब जी : प्रेम मन की सीढ़ी का अंतिम पायदान रे।।

1067 डगर भीतर से मिलती प्यारो, विचार वासनाऐं कामनाऐं कल्पनाऐं संग साथ रे।
स्मृतियां भविष्य के सपने प्यारो, पल पल चलते संग साथ रे।
साहिब जी : निज की तूं कर पहचान रे।।

1068 जग में दौ प्रकार के लोग प्यारो, धन के यात्री और पद के यात्री ले जान रे।
दोनों पंच तत्व के प्यारो, मन मान 'मै' मेरी में रहते जान रे।
साहिब जी : मन से ही बिगड़ें सब काम रे।।

क जहां जाना तहां निकट है, रहा सकल भरपूर।
बाड़ी गर्व गुमान की, तां ते पड़ गया दूर।
साहिब जी : मन मान से पड़ गया दूर।।

क जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के मांहि।
साहिब जानें संत जन, सुमिरन सम कुछ नांहि।
साहिब जी : सुमिरन सम कुछ नांहि।।

1069 काया मध्य सार प्यारो, स्वांसा जान महान।
सुन्न से स्वांसा उठत है, नाभी दल में आना जान।
साहिब जी : नासिका से नाभी दल में आना जान।।

1070 हाथ पांव स्वांसा के नांहि, सुरति सूं पकड़ी जाये।
सुरति सब्द से प्यारो, मन पवन को घेरा जाये।
साहिब जी : चेतन सुरति सब काम कर जाये।।

1071 ज्ञान भूमि के बीच में, स्वांसा उल्टि चलती जान।
फेरा उल्टा हो गया, धर अधर ध्यान लगाना जान।
साहिब जी : सुश्मिना का खेल महान।।

1072 गगन में स्वांसा नाम एक कर, गगन गुफ़ा को पवन से करो साफ़।
सुश्मिना चेतन हो गई, जब सब्द पवन से सुश्मिन साफ़।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से सुश्मिन साफ़।।

1073 बंकनाल में कफ़ पिघलता प्यारो, टिक टिक की आवाज़ ले जान।
तहां सिलसिली गै़ल प्यारो, चढ़े तो गिर गिर पड़ना जान।
साहिब जी : चढ़ुं तो गिर गिर पड़ना जान।।

1074 सूली उपर स्वांसा उरदमुखि प्यारो, सतगुरू की याद महान।
चेतना पल पल कम होती प्यारो, तन से निज को पार ले जान।
साहिब जी : त्रिकुटि मध्य दिदार महान।।

1075 निरंझन ही माया जान प्यारे, हर जीव ठगा ले जान।
पार किसी को होने ना देता, 'वे नाम' से भेद ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' कहत चलते फिरते पार ले जान।।

1076 अंकुरी सुरति चेतन धार से, सुरति चेतन ले जान।
हंसा रूप सतगुरू 'वे नाम' सूं, भवसागर से पार ले जान।
साहिब जी : जन्म मरन से मुक्त ले जान।।

1077 सुन्न आकाश में जो कुछ आवे, सो सब मन की धार।
''वे नाम'' सब्द बोलन में नांहि, वह जान महान चेतन सुरति धार।
साहिब जी : अक्षर शब्द कबहु करावे ना पार।।

1078 खावत पीवत सोवत जागत, रहे हर पल सुरत सब्द की धार।
साहिबा सुरति जग गई, मन माया की टूटी तार।
साहिब जी : स्वांस स्वांस में सुरत सब्द की तार।।

1079 सांचा घर तो निकट है, सतगुरू की महिमां महान।
''वे नाम'' सब्द में वासा है, सुरति सब्द महान।
साहिब जी : आओ चलें निजधाम।।

1080 दिव्य आंतरिक शरीर से, नभ की सैल करो महान।
दिव्य दृष्टि् संग साथ चले, अरबों मील सुरति सैल महान।
साहिब जी : ध्यान करें खेल खेल महान।।

1081 मोह सब्बन दुखों का कारण प्यारो, रूई लिपटी आग।
इसी कारण परलोक बिगड़े, अंत काल पाई काल की आग।
साहिब जी : हर ओर काल की आग।।

क खोद खाद धरती सहे, काट कोट बनराये।
कुटिल वचन साधु सहे, और से सहा ना जाये।
साहिब जी : साध सब कुछ सह जाये।।

1082 भूल रहा हर जीव भ्रम में, सब्द ''वे नाम'' कोई पावे नांहि।
पांचों शब्द ब्रह्म रूप प्यारो, तीन लोक के मांहि।
साहिब जी : निरंकार भक्ति तीन लोक के मांहि।।

1083 पानी में मीन प्यासी, नर का भी यही हाल ले जान।
सुरति निरति अंदर तेरे, ''वे नाम'' सब्द से हंसा करना जान।
साहिब जी : हंसा करना तेरा काम।।

क आत्म ज्ञान बिन सब सूना, क्या मथुरा क्या कासी।
कहे साहिब सुनो भाई साधो, सहज मिलें अविनासी।
साहिब जी : प्रीत से सहज मिले अविनाशी।।

1084 सच्चे घर की सुधी 'वे नाम' सतगुरू बतावे, जहां से हंसा जग आयो।
आत्म में दिव्य शक्तियां प्यारो, सिद्ध लोक ईष्ट की सिद्धियों से पायो।
साहिब जी : आत्म दिव्य शक्तियों की खान पायो।।

1085 भरौसा विश्वास ध्यान प्यारो, शुद्धि का करें सब काम।
ध्यान शुद्ध से ज्ञान शुद्ध प्यारो, ज्ञान शुद्धम से बनें सब काम।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं बनें सब काम।।

1086 पाप कर्मों से रहता जब प्यारो, मन बुद्धि चित्त मलीन।
उसकी सुरति का संग गया, सब कुछ हुआ मलीन।
साहिब जी : अब आत्म भी जानो मलीन।।

1087 देवी देवों की पूजा जगत में, कुछ करे ना काम।
सतगुरू की जो पूजा किये, काल भी दास बन करे काम।
साहिब जी : काल जाल छुड़ावें सतगुरू 'वे नाम'।।

1088 आसथा आधार भक्ति का, पहले उपझे प्रेम।
सतगुरू बिन बात बने नांहि, भरौसा विश्वास जगावे प्रेम।
साहिब जी : भरौसा विश्वास जगावे प्रेम।।

क ना कुछ किया ना कर सका, ना करने योग्य शरीर।
जो कुछ किया साहिबन किया, जाना संत कबीर।
साहिब जी : जानो संत कबीर।।

1089 कर सुमिरन विश्वास करि, डौरी पकड़ ले भाई।
द्वार धनी के पड़े रहो, निजघर संग ले जाई।
साहिब जी : सतगुरू निजघर संग ले जाई।।

1090 जो सतगुरू सीढ़ी से उतरे, सब्द की टूटे तार।
काल घर छूटे नांहि, जन्म मरन की ना टूटे तार।
साहिब जी : काल की छूटे ना मार।।

1091 सतगुरू आज्ञा सर पर राखें, निजघर दूर मत जान।
कहे 'वे नाम' तां दास संग, सतपुरूष खड़े ले जान।
साहिब जी : सतगुरू सत्तपुरूष रूप महान।।

1092 द्वार सतगुरू के पड़े रहो, जो देवें सो खाओ।
स्वांस स्वांस में 'वे नाम' रहे, सुरत कमल में आसन लगाओ।
साहिब जी : सतगुरू सुरत कमल में आसन लगाओ।।

1093 सुमिरन सतगुरू सब्द का करो, सुरति दियो पटाये।
विश्वास उर में धारी के, सुरत कमल जा समाये।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष पा जायें।।

1094 वेद शास्त्र भागवत गीता, हर कोई पड़े जग मांहि।
मन का खेल सब जान ले, सुरत सब्द बिन पार जग नांहि।
साहिब जी : सतगुरू सब्द कराये पार सब जाहीं।।

1095 मन बुद्धि चित्त से सभी क्रियायें प्यारो, अनित्य स्वपन्नवत ले जान।
सुशुप्ति अवस्था प्यारो, निष्क्रीय जैसी अवस्था ले जान।
साहिब जी : मन बुद्धि से बने कभी ना काम।।

1096 जग में हर कोई शब्द जाल में फंसा, पर सब्द की नांहि पहचान।
जिस शब्द की आराधना करें, तिन का वोही ठिकाना जान।
साहिब जी : शब्द ना छूड़ा पाये मन मान।।

1097 सुरति से देख सखी रे, साहिबन का वह देस।
जगमग जगमग हो रहा, हंसों का प्यारा देस।
साहिब जी : सतलोक हंसों का न्यारा देस।।

1098 आत्म शक्ति से तन कार्य करे, पर आत्म बंधी ले जान।
तुरिया अवस्था पाने पर, स्वांसा प्राण का भेद ले तूं जान।
साहिब जी : स्वांसा प्राण का भेद महान।।

1099 परम पुरूष दर अगम तार है, अगम तार के आगे।
उसके आगे 'वे नाम' ब्खान, पंच शब्द से नहीं कोई आगे।
साहिब जी : पंच शब्द से कोई ना जागे।।

1100 तीन लोक से भेद सतपुरूष का, जाने कोई 'वे नाम' सतगुरू साध प्यारा।
काल के गुण सभी जन गावें, सतगुरू से पाओ भेद प्यारा।
साहिब जी : सतगुरू सूं पाओ सब्द भेद प्यारा।।

1101 जो रक्षक तहां सुरति नांहि, मन माया का ध्यान लगाहिं।
जग जीवों की अनूठी रीति, तजे सांच झूठ से प्रीति लगाहिं।
साहिब जी : झूठ ही सबै भरमाहिं।।

1102 समर्पण और निज की पहचान प्यारो, प्रेम ज्योत जग जाती ईक साथ।
सत्य शांति सूं सुरति जगी, जब ''वे नाम'' सब्द संग साथ।
साहिब जी : भय मान क्रौध सूं छूटा साथ।।

1103 ये जग रूई लिपटी आग प्यारो, प्रेम शांति सूं बनती बात।
मन तरंग मार सार सब्द सूं प्यारो, बुरी आदत छूटे बने अब बात।
साहिब जी : प्रेम प्रीत से बने बात।।

1104 आया कहां से जाना कहां, जानो तो बात बन जाये रे।
ये संसार फूल सुमेर का, रूई सा बिखरा संसार रे।
साहिब जी : काल का जाल संसार रे।।

1105 सार नाम सूं अपनी हस्ती मिटा, जागे सुरति तान।
अहम जब खाक में मिले, निखरे सुरति तान।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं निखरे सुरति तान।।

1106 जिनके हित निज को बिगाड़ा, सार नाम बिन नांहि कोये।
अपनी अपनी धुन में सभी, सच्ची चेतन सुरति संग ना कोये।
साहिब जी : सच्ची चेतन सुरति संग सतगुरू होये।।

1107 खावता पीवता मांगता प्यारो, निज की ना करता पहचान।
समर्पण की बात माने नांहि, प्रेम भक्ति की नांहि पहचान।
साहिब जी : गुले गुलज़ार की नांहि पहचान।।

1108 ज्ञान चदरिया सतगुरू सूं पाई के, मैल का ना धरा ध्यान।
कैसे निजघर जायेगा, जब निज की ना की पहचान।
साहिब जी : समर्पण का खेल महान।।

1109 कांटा बोने वालों का संग मत छोड़ो, काम पड़े संग पायें।
फूल ही फूल हर ओर खिलें, हर कोई अपना हो जाये।
साहिब जी : प्रेम से हर कोई अपना हो जाये।।

1110 तन मन वचन थिर प्यारो, सुरति निरति ''वे नाम'' सब्द से स्थिर जान।
ऐसी अवस्था जब ध्यान में, स्वांसा उरदमुखि ले जान।
साहिब जी : स्वांसा उरदमुखि अवस्था महान।।

1111 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, मन और हंसा अलग अलग पहचान।
मन को काम क्रौध लोभ आदि से प्यारो, सुरति में ले आना जान।
साहिब जी : सुरति प्रकाशित ले जान।।

क निर्बंधन बंधा रहे, बंधा निर्बंध होये।
कर्म करे कर्ता नांहि, सच्चा दास कहावे सोये।
साहिब जी : साधना से सेवा उत्तम होये।।

1112 सतगुरू की प्रसन्नता प्यारो, सतपुरूष की प्रसन्नता ले जान।
विषय विकारों का नाश प्यारो, मन तरंग से दूर ले जान।
साहिब जी : कहने से करना काम महान।।

द आप अकेला सब करे, औरों के सिर देई।
दादू शोभा दास की, अपना नाम ना लेई।
साहिब जी : सतगुरू चरणों का ध्यान कर लेई।।

क लगा रहे सत्त ज्ञान सों, सबही बंधन तोड़।
कहे साहिब वा दास सों, काल रहे हथ जोड़।
साहिब जी : साधक रहे हथ जोड़।।

च आज्ञाकारी पीव की, रहे पिया के संग।
तन मन से सेव करे, और ना दूजो रंग।
साहिब जी : साधक की सेवा ही सच्चा रंग।।

क सतगुरू सामर्थ सिर पर खड़े, क्या कमी तोहे दास।
रिद्धि सिद्धि सेव करे, भक्ति का छोड़े ना साथ।
साहिब जी : भक्ति सूं सुरति संग साथ।।

1113 खोटे लोहे का सोना ना बने, भावें पारस भी संग होये।
सतगुरू खोटे साधक का क्या करे, दाग़ ना उतरे कोये।
साहिब जी : खोटे की सुरति कबहु चेतन ना होये।।

1114 जब लग आशा मन मान की, दास उसे मत जान।
सतगुरू सबके दास रहें, सेवक ना करे पहचान।
साहिब जी : सतगुरू की महिमां अति महान।।

1115 मन केवल ईच्छा करता प्यारो, आंख कान हाथ से आत्म लेती काम।
चौर चौरी आत्म सहायता से प्यारो, बिन आत्म सहयोग बने ना काम।
साहिब जी : आत्मां बिन बने ना काम।।

1116 आत्म हंसा सहज सरल प्यारो, आत्म स्वयं मन बंधन में जान।
आपा आप को बांध्यो प्यारो, अभी भी सहज सरल ले जान।
साहिब जी : मन भ्रम ने डाला पर्दा ले जान।।

1117 मन ने भ्रम में डाला आत्म को प्यारो, तन के काज करवाने।
तन की आवश्यकता है सुरति से प्यारो, शरीर को जीवित रखाने।
साहिब जी : आत्म सूं काया जीवित प्यारो।।

1118 सुखमन मध्य औंकार का वासा प्यारो, ईक दिन मिटाना जान रे।
निज को बचाने की ख़ातिर प्यारो, आत्म शक्ति बिन मन लंगड़ा जान रे।
साहिब जी : आत्म शक्ति बिन मन असहाय जान रे।।

1119 आत्म आप को आपे बांध्या प्यारो, आत्म सभी गुणों से संपूर्ण रे।
संशय भ्रम की औढ़नी औढ़ी प्यारो, आत्म का ढका रूप जान रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से सब आवरण मिटे जान रे।।

1120 चिकित्सिक रोगों का निधान करता प्यारो, रोगों के लक्ष्ण देखता जान।
नाम महां मंत्र सतगुरू देते, मन मान की टूटे कमान।
साहिब जी : बिन नामे नर भेद ना पाये महान।।

1121 गयो जिन पाया नांहि, आन से गयो दूर।
गावन में ही रोवना, रोवन में ही वैराग़।
साहिब जी : रोवन में ही वैराग़।।

1122 जिन गाया विरह वैराग़ में, विश्वास की जागी प्यास।
जिन गाया विश्वास करि, साहिबन भुजावें प्यास।
साहिब जी : साहिब भुजावें साध की प्यास।।

1123 चिंता तो मन चित्त करे, चिंता से क्या होये।
चिंता तो हरि करे, चिंतन में जावे ना कोये।
साहिब जी : सुरति भेद ना जाने कोये।।

1124 हरि संग गांठ ना बांधहि, बिन मांगे सब देई।
आगे पीछे हरि खड़े, प्रेम संग साथ दे देई।
साहिब जी : प्रेम संग सबै साथ दे देई।।

वे नाम कहें
हरी तो अंधकार प्यारो, ओम प्रचंढ ज्योति प्रकाश।
अंधकार प्रकाश का मेल ना, द्वंद ही तीन लोक प्रकाश।
साहिब जी बस वे नाम सब्द चेतन प्रकाश।।

16 मृत्यु के बाद का सफ़र

1125 शीष्ण द्वार से जीव निकासा, जलचर योनि पाये वासा ले जान।
प्राण सुरति निकलते ही प्यारो, जलचर योनि में वासा ले जान।
साहिब जी : मरने पर मूत्र बाहर आता ले जान।।

1126 मल द्वार से जीव निकासा, नर्क लोक वासा ले जान।
इस द्वार से प्राण निकलते ही, जीवात्मां नर्क में प्रवेशा ले जान।
साहिब जी : मृतक का मल बाहर आये ले जान।।

1127 मुख द्वार से जीव जब जाई, अन्न योनि में वासा ले जान।
मुख से प्राण सुरति बाहर निकले, जीव अन्न कीट बना ले जान।
साहिब जी : मृत्तक का मुख खुला ले जान।।

1128 स्वांस द्वार से जीव जब जाई, अण्डज खानी में वासा ले जान।
इस द्वार से जब प्राण सुरति निकासा, पक्षी योनि में वासा ले जान।
साहिब जी : नासिका से द्रव बाहर बहे ले जान।।

1129 नेत्र द्वार से जीव जब जाई, मक्खी मच्छर आदि तन पाता ले जान।
इस द्वार से जब प्राण निकासा, आंखें खुली रहती ले जान।
साहिब जी : विक्राल आंखे खुली रहती ले जान।।

1130 श्रवण द्वार से जीव जब जाई, प्रेत देहि तत्काल पाई लेत जान।
प्राण सुरति कानों से निकले, प्रेत आयु ईक हज़ार वर्ष से अधिक ले जान।
साहिब जी : कान विशाल आकृति वाले होते ले जान।।

1131 दसम द्वार से जीव जब जाई, सत स्वर्ग लोक वासा ले जान।
जब प्राण दसवें द्वार से निकलें, स्वर्ग लोक में वासा ले जान।
साहिब जी : जीव स्वर्ग में वासा ले जान।।

1132 ग्याहरवें द्वार से जीव जब जाई, अमरलोक में वासा ले जान।
इस द्वार में सुरति निरति का मेल, हंसात्मां रूप ले जान।
साहिब जी : हंसा जन्म मरन से पार होता ले जान।।

1133 सुरति ''वे नाम सब्द में ज्युं धरो, जैसे फनि मणी के संग।
वह ग़ाफ़िल मत जान प्यारे, हर पल मणी सुरति के संग।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा के संग।।

1134 ''वे नाम'' कारज सुरति करे, सुरति धारा एक संग।
ईक पल को भी दृष्टि् ना हटे, सुरति सब्द का ऐसा संग।
साहिब जी : सुरति सब्द का ऐसा संग।।

1135 जैसे कामी का चित्त कामिणी में, कामी का चित्त उसी में जान।
तन मन धन को वार दे, काम कामिणी में बटा जान।
साहिब जी : काम कामिणी में रमया जान।।

1136 मुक्ति चाहिये दुख दर्द से, तो उदगम उनका जान।
मन चित्त स्त्रोत है दुख दर्द का, सुरति सूं चेतन करना जान।
साहिब जी : सुरति सूं बनें सब काम।।

1137 परिवर्तन चिंता कारण दुख दर्द का, सुरति चेतन सूं कर ध्यान।
अतीत का अनुभव कारण दुख दर्द का, मन घड़ी (पैण्डुलम) समान जान।
साहिब जी : मन को स्थिर कभी ना जान।।

क चलती चक्की देख कर, दिया कबीरा रोये।
दौ पाटन के बीच में, साबुत बचा ना कोये।
साहिब जी : आवागमण से बचा ना कोये।।

1138 भविष्य का चिंतन अतीत की यादें, कुछ खोया खोया जान।
इस ओर कुआं प्यारो, उस ओर खाई ले जान।
साहिब जी : इसी पल में रहना तूं जान।।

1139 आत्म निज को चित्त है जानत, इसे दुख का कारण जान।
साक्षी चेतन का भेद ना, कारण भ्रांति जान।
साहिब जी : निज की कर पहचान।।

1140 ध्यान सुन्न बनाता प्यारो, मिटा जान झूठ संताप।
'वे नाम' दात सुरति चेतन सूं, मिटे क्लेशों का ताप।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द मिटावे रोग संताप।।

1141 साक्षी भाव बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सुरति धारा बनती मत जान।
''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन धारा प्यारो, मन मान सूं पार ले जान।
साहिब जी : सुरति चेतन से पार ले जान।।

1142 मन नहीं सांचा द्वार प्यारो, सतगुरू चेतन जान द्वार।
जो ''वे नाम'' सब्द पा जाता, सतगुरू संग करे द्वार को पार।
साहिब जी : सतगुरू संग करे भव पार।।

1143 तीन गुण पांच वृत्तियां प्यारो, छूटे एक ना जान।
सार सब्द जब पास में, पाये सच्चा देस महान।
साहिब जी : अमरपुर साहिबन देस महान।।

1144 परख़नहारा घट घट बसे, वह चित्तवत है तोये।
तूं चित्तवत मन मान को, कैसे मिलना होये।
साहिब जी : देख हर ओर साहिब ही साहिब होये।।

1145 तूं साहिब कहां ढूंढ रहा, वह तो 'वे नाम' सुरति की ज्योत।
ध्यान औरों से जब हटे, देख ले हर ओर ज्योत ही ज्योत।
साहिब जी : देख ले हर ओर जगमग साहिबन ज्योत।।

1146 बूंद गिरी समुंद में, गिरते ही उसी रूप मिल जात।
चेतन सुरति सुरति में समाते ही, पल में बात बन जात।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं पल में बात बन जात।।

1147 अंधी सुरति नामवीर जानो, बने ना सच्चा काम।
''वे नाम'' सब्द सूं मन मान गया, सुरति चेतन करे सब काम।
साहिब जी : सुरति चेतन आप करे सब काम।।

1148 सत्यपुरूष ना आवें जग में, जन्म मरन से पार।
सतगुरू का पल पल संग करें, वो ही करावें भव पार।
साहिब जी : सतगुरू साहिब पार करावनहार।।

1149 शुद्ध मूल स्वभाव सुरति का, अशुद्धि बाहरी प्रभाव ले जान।
निज को भूल बाहर हैं चलते, सच्ची भूल के प्रभाव से अनजान।
साहिब जी : साहिबन सुरति से आत्मां शुद्ध ले जान।।

1150 'वे नाम' चेतन सुरति सब्द मोहे दिये, सतपुरूष दीन दयाल।
पल पल सुरति सब्द स्वांसा में रहे, हर पल दीन दयाल।
साहिब जी : आप ही सब्बन के दीन दयाल।।

क भक्ति दान मोहे दीजिये, सतगुरू देवन के देव।
और कुछ ना चाहिये, निस दिन आप की सेव।
साहिब जी : दास को दीजिये सेव।।

1151 योग ज्ञान वैराग़ सबन सूं, प्रेम भक्ति जानो न्यारी।
प्रेम उपझे घृणा जाये, भक्ति सुरति सूं उपझे न्यारी।
साहिब जी : हर ओर देखूं सूरत तुम्हारी।।

1152 सतगुरू प्रेम से भर पाते ही, बिजली कुंद गई अंग अंग।
बंद कली खिली जान प्यारो, खिला फूल लिये प्रेम रंग।
साहिब जी : हुआ चारों ओर उजाला ईक संग।।

द देह प्राणता दादू कहे, सौ वर्ष ईक संत।
रहन नगर में प्रकटे, तारें जीव अनंत।
साहिब जी : सतगुरू तारें जीव अनंत।।

1153 प्रेम बराबर योग ना, प्रेम बराबर ना कोई ज्ञान।
प्रेम भक्ति बिन जान लो, सबहि थोथा ज्ञान।
साहिब जी : ज्ञान ध्यान से परे प्रेम ले जान।।

1154 प्रेम श्रद्धा विश्वास प्यारो, सब साधनाओं से पार।
सतगुरू चरणों में जो रहे, जानों साध तीन लोक से पार।
साहिब जी : सतगुरू शरणी मांहि सुन्न महांसुन्न पार।।

1155 सबै ढंग 'मैं' किये, प्रेम समान ना कोये।
सब्द सुरति चेतन करे, तन मन भी चेतन होये।
साहिब जी : महांचेतन सुरति संग घर जायें।।

1156 प्रेम छुटावे जगत, प्रेम मिलावे निर्लम्भ।
प्रेम जाप उल्टा करावे, ले चले निजघर निजधाम।
साहिब जी : प्रेम भक्ति सीढ़ी मिलावे चौथा राम।।

1157 कर्म फल तथा आवागमण से मुक्त जो, हर आत्म बंधन से मुक्त ले जान।
मन माया का संग साथ जब, सुरति चेतन मत ले जान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति का संग महान।।

संत जलालुदीन जी
ज राम दिलदार यार प्यारे, गलियों में मेरी आ जा।
अंदर की आंखे तरस रही, सुरत मुझे दिखला जा।
अवध धाम में बाबर मस्जिद में उतरे, ईष्ट देव प्यारे।।

पंडत टेक चन्द जी
ट रंग पीले पड़ गये, जिन के लिये।
वे शाह जी आये ना, दम भर के लिये।
राम प्यारे आये ना, दम भर के लिये।।

ट प्रेम में वैराग़ प्यारो, वैराग़ में जानों प्रेम।
दोनों प्रेम भक्ति को जन्म देते, धारा एक करता चेतन प्रेम।
साहिब जी : सहज दया प्रेम वैराग़ से भक्ति प्रेम।।

1158 जगत में सुमिरन करें, सुरति में प्रेमी बन जाये।
'वे नाम' सुरति चेतन में रहे, तार जुड़ी रह जाये।

साहिब जी : तार टूट नहीं पाये।।

1159 प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकनाचूर।
सुरति ''वे नाम'' सब्द से जगी, हर ओर साहिबन नूर।
साहिब जी : हर ओर चेतन सुरति नूर।।

संत सहजो बाई

स नाहिं सयम नांहि साधना, नांहि तीर्थ व्रत्त दान।
मात भरौसे रहत है, ज्युं बालक नादान।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात महान।।

स दया प्रेम उन्मत जे, तन की तनिक सुधि नांहि।
झुके रहे हरि रस छके, थके नेम व्रत्त नांहि।
साहिब जी : सतगुरू बिन बात बने नांहि।।

संत सुन्दर दास

स द सीस नवावे तो तुम्ही को, तुम्ही सूं भीखू दीन।
जे झगरूं तो तुम्ही सूं, तुम चरणन अधीन।
साहिब जी : सतगुरू चरणन अधीन।।

1160 विरह वैराग़ की अग्नि से प्यारो, अंदर का दीप जला लो रे।
तांहि से जागे प्रेम प्यारो, भक्ति की ज्योत जगा लो रे।
साहिब जी : निजघर को अपने जाओ रे।।

1161 जा घट विरहा ना जागे, सो घट जान मसान।
विरहन का दुख प्रेमी जानता, उपचार ''वे नाम'' सब्द में ध्यान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में धरो ध्यान।।

1162 ''वे नाम'' सब्द में औषधि, सतगुरू सब्द उपचार।
सब्द बिन सब दुख झूठ, पकड़ो चेतन सुरतिधार।
साहिब जी : पकड़ो चेतन सुरतिधार।।

1163 चातक मन अकुलाता प्यारे, स्वाति बूंद के लिये ले जान।
पिया पिया पुकारता हर पल, जैसे वैराग़ी सतगुरू बिन ले जान।
साहिब जी : सतगुरू बिन जग जानो शमशान।।

1164 सब जग मिथ्या कांटों से भरा, कोई प्रेमी जाने भेद।
मीरां के सर्वस्व सतगुरू रविदास जी, हर हाल में सुख का भेद।
साहिब जी : सतगुरू संग परम सुख का भेद।।

1165 मेरा सांवरिया परदेस में, गया फिर मिलना ना होई।
संदेसा कोई भेज ना पाया, सुरति में नाम रटते रटते मग्न होई।
साहिब जी : सुरति में संग खोई।।

1166 ''वे नाम'' सब्द साहिबन दात मुक्ति की, डौरी सुरति निरति जान।
चाह गई संशय मिटा, अब मन बंधन छूटे जान।
साहिब जी : वैराग़ी की महिमां महान जान।।

1167 अब ईच्छा कुछ ना रही, माया वैरन का छूटा साथ।
शांति संयम साध कर, प्राण अपान सधे ईक साथ।
साहिब जी : सब्द सुरति सधाये सातों पवन ईक साथ।।

1168 धनवंत नेता जन दुखी, निर्धन लाचार दुख रूप।
साधु संत दोनों सुखी, पायो ''वे नाम'' दात अनूप।
साहिब जी : सुरति निरति करे हंसा रूप।।

1169 राजा रंक दोनों दुखी, दुखी हर नारी नर जान।
साध साधक संत संग सुखी, पायो सुश्मिन भेद महान।
संत का प्यारा हर ईक सुखी, सतगुरू सूं पायो सुख भेद महान।
साहिब जी : सतगुरू संगति सुख जान।।

1170 साधक सुरति सूं भेद गहै, छूटे ईन्द्रियों का साथ।
अंदर प्रेम ज्योत जलती रहे, कर सब्द स्वांसा सुरति ईक साथ।
साहिब जी : सुरति का टूटा मन साथ।।

1171 सम–दृष्टि् जोड़ो चेतन सुरति सूं, समझे रंक ना भूप।
सुरति नहीं व्योवहार में, अमृत पावे ना रंक ना भूप।
साहिब जी : चहुं ओर साहिबन रूप।।

1172 दुर्जन सज्जन है कोई नहीं, नाहिं वैरी नाहिं मीत।
सकल संसार हंसा रूप है, सतगुरू सूं कर ले प्रीत।
साहिब जी : प्रेम प्रीत ही सच्ची रीत।।

1173 साधक साधु संग तजें, असंगी हो सुरतिवाण के संग।
सुमिरन में सुरति रहे, रंगे दोनों 'वे नाम' के रंग।
साहिब जी : साध रंगे 'वे नाम' के रंग।।

1174 सतगुरू गुरू सूं न्यारे प्यारे, अंग अंग में चेतन सुरति संग।
जैसे को वैसा मिले, करे सतगुरू चेतन सुरति का संग।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति रंग।।

1175 बृहंगी सब्द से कीट बृहंगा बन, बृहंगा संग ले उड़ाई।
सुरति करती सब काम, समर्पण से बात बन जाई।
साहिब जी : समर्पण से ही बात बन जाई।।

1176 उल्टि समझी बात से, अति बुरा क्रौध का क्रौध ले जान।
अपने पराये को कष्ट दे, वचन भी घात ले जान।
साहिब जी : अंदर प्रकटी अग्नि ले जान।।

1177 लोभ मोह, मृग काया बसे, कैसे उभरे सुरति धार।
जो बौवे सोहि चरे, कैसे पावे चेतन सुरति धार।
साहिब जी : सतगुरू भक्ति प्यार।।

1178 स्वार्थ कारण सब से मिले, अंदर ना जागी प्रीत।
अभिमानी मुख धूल भरा, चाहे बड़ाई बिन प्रीत।
साहिब जी : स्वार्थ कारण ना जागे प्रीत।।

1179 सूर्य चन्द्र तारे सभी सुखी, गहे सुख के गीत।
साधु संत चाहें दीनता, हर जन उनका मीत।
साहिब जी : गहे प्रेम प्यार का गीत।।

1180 मन मान में शीष कान मुख नासिका, ऊंचे ऊंचे नाम और काम।
ना ना कारणे 'वे नाम' मिले, सतगुरू चरणों में सब धाम।
साहिब जी : सतगुरू चरणों में सब धाम।।

1181 चेतन सुरति संग जो सुरति जोड़ी, प्रेम धार संग बहति जान।
शुन्य से चेतन सुरति फैलती, महां चेतन सुरति पास से पास ले जान।
साहिब जी : सुरति हर जीव पास ले जान।।

1182 सतगुरू जब संग में, सतपुरूष महां चेतन सुरति साथ।
स्वपन्न अवस्था का संग गया, महां चेतन सुरति जब संग साथ।
साहिब जी : महांचेतन सुरति संग साथ।।

1183 जागे तो कंकड़ भी हीरा बने, जागे तो सब जागे ले जान।
वासना के प्रति मरना ही, मृत्यु से संग छूटा ले जान।
साहिब जी : जागा मृत्यु के पार ले जान।।

1184 जागते सोते उठते बैठते, 'मै' के प्रति सजग होना जान।
सतगुरू के चरणों में सुरति रहे, उन्हें देख पहचान सुरति ध्यान।
साहिब जी : निज को उनका अंग ही जान।।

1185 निज की पहचान सत्य प्रेम प्रकटाये, स्वपन्नों का संग टूटा ले जान।
जो है ही नहीं प्यारो, उसे पकड़ना ही दुख का कारण जान।
साहिब जी : दुख का कारण तूं जान।।

1186 पद पाते ही मन मान प्यारो, ओछे लोगों की पहचान।
अब आकाश की ओर हैं देखते, प्रेम भक्ति की टूटी तान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति की टूटी तान।।

1187 जानो जपो ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सतगुरू बिन नहीं कोई पार।
तीर्थ व्रत्त सभी तज डालो, अमर होये अमर पद से पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात करावे पार।।

1188 सतगुरू वचन मानी के प्यारो, गुण प्रकटें अपार।
सतगुरू सब्द बिन सुरति चेतन नाहिं, फिर कैसे उतरोगे पार।
साहिब जी : सतगुरू कृपा करावे पार।।

1189 प्रेम भजन ध्यान विचार, सज्जन दुर्जन सभी गये ले जान।
आवें एक ही सुरति धारा में, उसी से पार ले जान।
साहिब जी : सुरति धारा से पार ले जान।।

1190 सतगुरू वचन की टेक रख, अधर्म को दे त्याग।
अपने हाथ कुछ है नाहिं, कर सभी विचारों का त्याग।
साहिब जी : जीते जी कर सभी विचारों का त्याग।।

1191 बुद्धिमान होते हुऐ प्यारो, निज को अज्ञानी समझे महान।
शक्ति सम्पन्न होते हुऐ भी प्यारो, आचरण शक्तिहीन ले जान।
साहिब जी : संवेदनशील होना ले जान।।

संत फरीद जी

फ फरीदा दर दरवेसी गारवाड़ी, चला दुनियां मत्ति।
बन्नी उठाई पोटली, कित्थे वाजां देती।
साहिब जी : कित्थे वाजां देती।।

ॅफ मत्ति होंदे होई स्याना, ताण होंदे होई निताना।
प्यारो अनहोंदे आप बड़ाऐं, कोई ऐसा भगत कहलाये।
साहिब जी : कोई बिरला ही भगत कहलवाये।।

1192 राबिया बंसरी की तरहं, ईश्वर प्रेम में लीन महान।
लोगों के प्रति उदासीन नाहिं, मन्सूर के समान तादात्मय मत जान।
साहिब जी : साहिब नाम से चहुं ओर सुगंधि ले जान।।

क सब ते लगुताई भलि, लगुता ते सब होये।
जैसे दूधिया का चन्द्रमां, सीस नवाये सब कोये।
साहिब जी : लगुता से सब होये।।

क ऊंचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराये।
नीचा होये सो भरि पावे, ऊंचा प्यासा जाये।
साहिब जी : मानी अभिमानी प्यासा ही रह जाये।।

1193 सतगुरू पाने से प्यारो, पूरी हुई जन्म मरन की आस।
प्रेम भक्ति का भेद मिला, मिटी जन्मों जन्मों की प्यास।
साहिब जी : सतपुरूष का संत संग में वास।।

1194 विषय वासनाओं के रस को त्याग दे, विषय रस बड़ावे हर पल।
निज भेद पाये बिना मरि जायेगा, सतगुरू 'वे नाम' संग कर हर पल।
साहिब जी : 'वे नाम' का संग कर हर पल।।

1195 आदर मान बड़ाई प्यारो, मन मान मांगो हर पल।
सार नाम दात जो पायेगा, पल में जाने मन का खेल।
साहिब जी : सुरति सूं जानो मन का खेल।।

1196 प्रेम उपझे सत्संग भावे, सतगुरू संग जागे प्रीत।
साध संगति साहिब मिलें, हर ओर फैले प्रीत।
साहिब जी : साध संगति से जागे प्रीत।।

1197 काम वासना काला चोर है, पल पल खाता जाये।
अज्ञान निंद्रा से जागना कठिन है, सार नाम दात ही जगाये।
साहिब जी : सार नाम दात से जीव जाग पायें।।

1198 कहें 'वे नाम' नर नार को, बृहंगा मत्ता निज देस हमारा।
जो पावे साहिबन नाम को, ले नाहिं जग अवतारा।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष उस पारा।।

1199 सब्द ''वे नाम'' जगत से पार करे, ये दात कोई कोई पाये।
''वे नाम'' सब्द से मन मान मिटाओ, तां से जीव अमरलोक को जाये।
साहिब जी : करोड़ों युगों की साधना कुछ काम ना आये।।

1200 नाम विदेह से ध्यान विदेहि, तब ही मिटे संदेह।
ऊंची तान सुरति की, तहां देखो पुरूष विदेह।
साहिब जी : सुरति तान सूं देखो पुरूष विदेह।।

1201 ''वे नाम'' सब्द तीन काज करे, बिन मन आत्म से अलग करने का काम।
निज क्रिया से ये काम ना, सुरति को प्रकाशित करने का काम।
साहिब जी : एक ताकत सूं निजघर ले जाने का काम।।

1202 ''वे नाम'' सब्द मूल सुरति को जगाता, सब जग स्वपन्न समान।
ये सब पूर्ण सतगुरू सूं, करें साहिबन के दर्श महान।
साहिब जी : साहिबन के करो दर्स महान।।

1203 ''वे नाम'' सब्द की दात जो पाये, संग हर पल सतगुरू को पाये।
शीष कटाई भुवें धरे, सतगुरू चरणन में रख पाये।
साहिब जी : तां से ही निजघर जाये।।

1204 सतगुरू दरबार में संगत साध की, फैले आनंद ही आनंद हर ओर।
सतगुरू चेतन सुरति हर ओर, सुरति बास सुबास हर ओर।
साहिब जी : सत्संग में सुरति बास सुबास हर ओर।।

1205 सतगुरू चेतन सुरति में वास करें, जो जागे सब कुछ पा जाये।
कहे 'वे नाम' तां संतन की, चरणन धूलि भव पार कराये।
साहिब जी : सतगुरू चरणन धूलि भव सागर पार कराये।।

क कबीरा संगत साध की, ज्युं गंधि की बास।
जो कुछ गंधि दे नाहिं, तो भी बास सुबास।
साहिब जी : सतगुरू चरणी फैलाये बास सुबास।।

1206 सुरतिवान नर जगत में, कुसंग प्रभाव से दूर।
चंदन विष पकड़े नाहिं, भुजंग विष से दूर।
साहिब जी : भुजंग विष से रहो दूर।।

1207 जिन सतगुरू सब्द को पा लिया, सहते नैन बाण की चोट।
सुरति सब्द की ओट में, सहते चोट पे चोट।
साहिब जी : साध धीर धरे सहे चोट।।

1208 ओछा नर पद प्रतिष्ठा में फूलता, मन मान में रहता जान।
धन संपत्ति पद को पाकर, निज को जाने महान।
साहिब जी : ओछा नर स्वयं को जाने महान।।

1209 सुत सपूत के जग आते, सपुत्र की महिमां महान।
चेतन सुरति की गति, उज्जवल करे जहान।
साहिब जी : दीपक की लौ महान।।

1210 प्रीतम छवि नैनन बसी, और कैसे मन भाये।
सब घट में प्रीतम बसें, आ जो आवे सो जाये।
साहिब जी : प्रीत प्रेम में साध बस जाये।।

1211 ''वे नाम'' सब्द वाचना चंदन प्यारो, अंग संग सब वृक्ष सुगंधित ले जान।
महांचेतन सुरति साहिबन की, हर सुरति चेतन ले जान।
साहिब जी : जग में हर कोई चेतन सुरति ले जान।।

1212 पारस परसा तब जानिये, जो चेतन करे अंग अंग।
सुरति चेतन हो गई, तो ही है सच्चा संग।
साहिब जी : चेतन सुरति ही सच्चा संग।।

1213 सगुण निर्गुण चक्की चलती, क्या दिवस क्या रात।
ये दौ चक्की के पाट प्यारो, तामे हर नर पिस जात।
साहिब जी : जगत चक्की में हर कोई पिसा जात।।

1214 सतगुरू सरंक्षण ईक निष्ठा से प्यारो, कभी नष्ट मत जान।
किल्ली से जुड़ा रहे, दौ पाटन का काम महान।
साहिब जी : जग दौ पाटन का काम महान।।

1215 जो उदय होता प्यारो, उस का अस्त होना भी जान।
जो भी फूल खिलता प्यारो, उस का कुम्लाना भी ले जान।
साहिब जी : मृत्यु का होना निष्चित ले जान।।

1216 चौरासी लख योनियों में प्यारो, मनुष्य जन्म अनमोल रे।
डाली से पत्ता झरे, बहुरि ना डाल पर लागे रे।
साहिब जी : कैसे नर के भाग्य रे।।

1217 सिंह साधु का ईक मत्त, जागे ही को पार लगाये।
प्रेम भक्ति बिन मृत्तक सदा, ताके पास ना जाये।
साहिब जी : चेतन सुरति बिन कोई पार ना जाये।।

क अति का ना बोलना, अति की भलि ना चुप।
अति का भला ना बरसना, अति की भलि ना धूप।
साहिब जी : अति हर ईक की कुरूप।।

1218 साध सोया ना रहे, जागन की पकड़ो डौर।
हर पल हीरा लाल संग में, उसी की पकड़ो डौर।
साहिब जी : सुरति सूं पकड़ो डौर।।

1219 प्रेम का साबुन नाम का पानी, पल पल में धोवे भाव की मैल।
इन दोनों का संग ना छूटे, छूटे नाता संग मैल।
साहिब जी : भक्ति ही धोवे मन माया मैल।।

1220 निज को चेतन सुरति में खो कर प्यारो, करो प्रेम नगर की सैल।
खोजत कुछ ना मिले अपना, ना सिर संग ना अपना पैर।
साहिब जी : प्रेम भक्ति घर उस पार।।

1221 निज को खोजो ढूंढो अंदर प्यारो, अहंकार गया 'मै' होने का भाव।
अस्तित्व सतगुरू में विलीन हुआ, जब पाया 'वे नाम' चेतन सुरति भाव।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द कराये चेतन सुरति का भाव।।

1222 अब विजाति का संग गया प्यारो, र्निवैर हुआ सुरति का द्वार।
मेरा मेरी गई प्यारो, पहचाना सच्चा प्रेम भक्ति का द्वार।
साहिब जी : पहचानो जग में सहज भक्ति दरबार।।

1223 सतगुरू द्वार जागे का घर प्यारो, हर पल पाओ खुला द्वार।
सतगुरू पास निशंक जाओ, संकोच भय की तोड़ो तार।
साहिब जी : संकोच भय की तोड़ो तुम तार।।

1224 भक्ति को सुरति प्रेम से, सतगुरू पर न्योछावर करो।
आदर भाव से पूर्ण अर्पित करो, फिर कृपा प्राप्त करो।
साहिब जी : समर्पण से ही कृपा प्राप्त करो।।

1225 काज पड़े तो प्रेम दिखावे, काज सरे कुछ और।
प्रेम गया संगि गया, नदी का जल कुछ और।
साहिब जी : तन भी हुआ अब और।।

1226 'वे नाम' सुरति सूरज उगया, नैनन खुले भरपूर।
अंधे संसार देखा नाहिं, साहिबन उनसे दूर।
साहिब जी : साहिबन कृपा सूं अंधा जग दूर।।

1227 'वे नाम' चेतन सुरति पाये कर, किया प्रेम भक्ति का काज।
विश्वास करि बहुते तारे, जब पाया नाम जहाज।
साहिब जी : 'वे नाम' सब्द ही नाम जहाज।।

1228 ज्युं कठपुतली नचाई जात है, कमर नचावे हर जीव।
अपने हाथ कुछ है नाहिं, ''वे नाम'' सब्द सूं तरें सब जीव।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही तारे सब जीव।।

1229 जो गरीब निर्धन से प्रेम करे, अति महान कहलाये लोग।
सुदामा कृष्ण संग मित्रता के योग्य कहां, पर कृष्ण जाना मित्रता योग्य।
साहिब जी : सतगुरू ही बनावें मित्रता योग्य।।

क धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होये।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होये।
साहिब जी : भारत देस में ही जागना होये।।

र मांगे घटत रहीम पद, कितौ करो बढ़ि काम।
तीन पग वसुधा करि, तऊ बावने नाम।
साहिब जी : तऊ बावने नाम।।

1230 कर्म धर्म जप तप जग फंद, सच्ची भक्ति की ना की पहचान।
बिन सार सुरत नाम मुक्ति नाहिं, जग ग़ाफ़िल सोया जान।
साहिब जी : मुक्ति चैरी खड़ी द्वार पे ले जान।।

गुरू अर्जुन देव जी
अ जीवत जीवत जीवत रहुं, राम रसायनु नित उठि पिउं रे।
सतगुरू देता हर नर को हैला रे, आओ राम रसायनु पल पल पीहो रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द रसायनु पल पल पीहो रे।।

साहिब दादू जी
द रज्जब तैने गज़ब किया, सिर पर बांधा मौर।
आया था हरि भजन को, करे नर्क की ठौर।
साहिब जी : सुरति निरति हंसा बनन की ठौर।।

संत दरिया साहिब जी
द स्वपन्न समान संसार है, तो भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मत्तिहीन, तुम तो हो सरताज हमारा।
साहिब जी : साहिब ही हैं सरताज हमारे।।

म पांव कौस भर गांव, नाम बिन नाहिं ठांव।
संत की नाव खेवेटिया सतगुरू, भवसाग़र तर जाऊं।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हिरख हिरख जस गायो।
साहिब जी : हिरख हिरख जस गाओ।।

1231 नाम बिन कैसे पाऊं, पांव कौस भर गांव।
सतगुरू बिन बात बने ना, सब्द से पास में गांव।
साहिब जी : आओ चलें निज गांव।।

1232 अहंकार विपत्ति का मूल है, जहां संशय तहां सोग।
अहंकार संशय और शोक जहां, हर ओर प्रकटे रोग़।
साहिब जी : अहं हर ओर प्रकटाये रोग़।।

1233 जहां काम तहां सार नाम नाहिं, जहां नाम तहां नाहिं काम।
दोनों का संगम होता ना, मोक्ष प्रेम भक्ति का धाम।
साहिब जी : प्रेम भक्ति सूं मोक्ष धाम।।

1234 प्रेम प्रीत सूं जो मिले, दोड़ कर मिलने जायें।
अंतर करि जो मिले, अपने आप को दूर कर जाये।
साहिब जी : प्रेम भक्ति भव पार कराये।।

1235 परमात्म दूर की कणि जान प्यारे, निकट से देखा ना जाये।
उससे निकट तुझ संग और है नाहिं, पूर्ण सतगुरू ही भेद बताये।
साहिब जी : विश्वास सब काम कर जाये।।

1236 नर प्रेम भक्ति में नाहिं प्यारो, स्वपन्नों में हर पल रहता जान।
मन स्वपन्नों का जगत निर्माण करता, जिसका होना कहीं मत जान।
साहिब जी : जग में हर कोई सपनों में खोया जान।।

1237 स्वपन्नों का पागलपन प्यारो, स्वयं को दिख पड़ता मत जान।
ये पागलपन की सीढ़ी, पहली पहचान ले जान।
साहिब जी : सपनों की विक्षप्ता जान।।

1238 तीन लोक केवल स्वपन्नों की रचना, बिन स्वपन्न कुछ और मत जान।
मन तन भाव सब सपने, आत्म भी सपना ही जान।
साहिब जी : भगवान ईश्वर भी सपना ले जान।।

1239 सार सब्द आत्म की शुद्धि करे, आत्म चेतन से हंसा रूप ले जान।
मन माया विजाति का संग गया, शुद्ध हंसा रूप पाया ले जान।
साहिब जी : सार सब्द से सपनों से पार ले जान।।

1240 भाव विजाति मन ही जान, सपनों ने निर्मित किया जान।
ये जग बिन मूल सब्द सपना, सपनों ने निर्मित किया ले जान।
साहिब जी : सपनें लेना सपने देना मन का काम ले जान।।

1241 ना की सतगुरू भक्ति, ना साधु की सेवा।
ना किया शुभ कर्म कोई, कैसे पावे मेवा।
साहिब जी : सतगुरू सेवा सूं ही मिले मेवा।।

1242 'वे नाम' आया अमरलोक से, काटन सब की जन्म मरन की फांस।
सार नाम सुरति धरो, पल में कटेगी आवागमन की फांस।
साहिब जी : चेतन सुरति पल में काटे जन्मों जन्मों की फांस।।

1243 स्वांस स्वांस सिमर ले ''वे नाम'' सब्द को, मन माया का छूटे संग।
कल और कल के सपनों का संग गया, पाया चेतन सुरति का संग।
साहिब जी : चेतन सुरति बहे सतगुरू सत्संग।।

1244 'वे नाम' सुमिर ले मन बांवरे, तन माटी का पुतला रे।
सुश्मिन पार करता प्यारो, पुतला माटी का नीर संग सना रे।
साहिब जी : पुतला माटी का पानी संग सना रे।।

1245 ये जग हंसों का घर नाहिं, मन मान का ठिकाना रे।
रात कटती नहीं प्यारो, दीपक कब जलाना रे।
साहिब जी : प्रेम दीप कब जलाना रे।।

1246 चेतन सब्द सतगुरू प्यारो, सुरति निरति सतपुरूष अंश रे।
साहिब सतगुरू एक सुरति धारा, दोनों एक ही रे।
साहिब जी : साहिब जानें संत सुजान रे।।

1247 जब तक सतगुरू की कृपा नाहिं प्यारो, मै कहां से आये का भेद मिलता मत जान।
मैं कोन हूं जग में आया हुआ, क्युं आया का भेद मिलता मत जान।
साहिब जी : सार सब्द सूं मिलता भेद ले जान।।

1248 सच्चे घर का पता सतगुरू सूं, जहां रहे वासा रे।
वह सतपुरूष का घर प्यारो, हम हंसों का देसा रे।
साहिब जी : हम हंसों का अमरलोक वासा रे।।

क जे तूं चाहे मुझको, राखो और ना आस।
मुझहि सरीखा होई रे, सब कुछ तेरे पास।
साहिब जी : जिसका ध्यान उसी के गुण पास।।

क कबीरा सोया क्या करे, जागि के जपो मुरार।
ईक दिन है सोवना, लम्बे पांव पसार।
साहिब जी : सारा जग सोया लम्बे पांव पसार।।

1249 संसार का कुछ भी प्यारो, अजर अमर मत ले जान।
अभिमान करना व्यर्थ प्यारो, मृत्यु का संग छूटा मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द मृत्यु छूड़ावे ले जान।।

1250 बुढ़ापा भया ना भय मुआ, अमर कहां से होये।
खाली हाथ सब गये, पैंदे बिन भरा ना कोये।
साहिब जी : बिन पैंदे ना भरा कोये।।

क केता कहो कहा नहीं जाई, नाम गहे सो पुरूष मिल जाई।
सार सब्द परवाना देहे, जीव जुड़ाये काल सो लेहे।
साहिब जी : सार सब्द जा पुरूष मिलाई।।

न जीव के संग मन काल रहाई।
अज्ञानी नर जानत नाईं।
नानक हौं मैं रहा अड़ाई।।

1251 सुरति संग गया पिंझर रहा, तकन लगे भाग।
साहिब अजहु ना पाया, याद करते भाग।
साहिब जी : मत कौसो अपने भाग।।

क गांठ दाम ना बांधई, नाहिं नारी सूं नेह।
कह कबीर ता साध के, हम चरणन की खेह।
साहिब जी : सतगुरू चरणन की पाओ खेह।।

1252 पहला दाता शिष्य भया, जिन तन मन अर्पण कियो शीष।
पीछे दाता सतगुरू भया, जिन नाम दियो बख़्शीष।
साहिब जी : शीष दियो पाओ नाम आशीष।।

1253 ''वे नाम'' सब्द काटे कर्म काण्ड जंज़ीर, मन मान से करे दूर।
कौटि जन्म का पंथ प्यारो, सार सब्द दे करायो पार।
साहिब जी : सार सब्द मिटायो जन्म मरन की पीर।।

1254 बृंहगा दात बिन कोई सतगुरू नाहिं, जो काल जाल सूं करावे पार।
सार सब्द सहारा है देत, जब काल का खाता तीर।
साहिब जी : बिन सार सुरति दात कटे ना काल की पीर।।

1255 काल का नाम जगत सब है लेत, भेद 'वे नाम' कोई ना लेई।
जब 'वे नाम' की युक्ति मिले, दात देई निजघर ले जाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात ही निजघर ले जाई।।

1256 'वे नाम' विदेह जो कोई पावे, पल में मिटे संदेह।
सुरति चेतन सुरति सूं चेतन भई, जब पावे सब्द विदेह।
साहिब जी : सुरति जागी जब पाया सब्द विदेह।।

1257 साधक बनो सुमत्ति आवे, निगुरा रहे ना एक।
बिन सत्संग विवेक ना होई, प्रेम भक्ति डौर से संग एक।
साहिब जी : पापी मिलें अनेक।।

गुरू अष्टावक्र जनक से कहें :–
1258 बंध विषयों में रस, सब बंधन के कारण जान।
मुक्ति रस में है नाहिं, विरस में उसे ले जान।
साहिब जी : विरस में साहिबन ले जान।।

1259 सबै जागे एक मत, सतगुरू सूं जान भेद।
जो पहुंचे तिस दी पहचान, प्रेम भक्ति में कैसा भेद।
साहिब जी : प्रेम भक्ति में नाहिं कोई भेद।।

1260 वैराग़ आ जाये प्यारो, तो भक्ति आ जाती है।
भक्ति आने से प्यारो, दर्स आनंद मिल जाता है।
साहिब जी : सतगुरू शरण में साहिब दर्स मिल जाता है।।

1261 विरह वैराग़ से प्रेम, भक्ति फल मिटा प्यारो।
मुक्ति होते ही प्यारो, वैराग़ हो जाता प्यारो।
साहिब जी : तृष्णा जाते ही वैराग़ी होता प्यारो।।

1262 महल माड़ियां हाथी घोड़े, सभी धूल समान रे।
मन मान की दौलत झूठी, निज का भेद ना जाना रे।
साहिब जी : काल का देस बैग़ाना रे।।

1263 'वे नाम' का ना कभी जन्म हुआ प्यारो, ना कभी मृत्यु हुई जान रे।
संदेसा अमरपुर का लेते, सच्ची राह दिखा निजघर ले जाते रे।
साहिब जी : जग को जन्म मरन से आन छूड़ाते रे।।

1264 जीवन नाव की तरंह प्यारो, 'वे नाम' जग नाविक जान रे।
सत्त की नाव पर चढ़ो प्यारो, नाविक स्वांस स्वांस देत पुकार रे।
साहिब जी : सुश्मिन सम होते ही पार रे।।

1265 नाव नाविक भेद जान लो, कहत संत सुजान रे।
नाव मिली केवट नाहिं, कैसे उतरोगे पार रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू ना उतरोगे पार रे।।

1266 अब ना जग में सुरतिवान प्यारो, नाहिं कोई जागनहारा रे।
अब ना चेतन सुरति पाने वाले, नाहिं सुरति जानने वाले रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू कोई ना सुरति जाननहारा रे।।

1267 सतगुरू 'वे नाम' करत प्यारो, पुकार पर पुकार रे।
स्वांस स्वांस घटे पूंझी तेरी, पा ले सुरत सब्द की धार रे।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं पार रे।।

1268 आकुल व्याकुल करत मूर्ति, सात सुरति में जाती समा।
सार सुरति वश किया निरती को, सार सब्द में जात समा।
साहिब जी : सार सब्द सुरति सूं निजधाम समा।।

म लागी सोहि जानिये, कंठन लगन दी पीर।
विपत्ति पड़यो कोई निकट ना आवे, सुख में सब की सीर।
साहिब जी : जग में सुख में सब्बन की सीर।।

1269 साधु के भेस में भगवान जानिये, चरणों में सिर दो झुका रे।
बाबा हो या बुतखाना, मन मान का टूटे ना बाण रे।
साहिब जी : जग में छूटे नाहिं मन मान बाण रे।।

1270 जागे की सुनते नाहिं, सुनते हैं तो समझते नाहिं।
वासनाओं तृष्णाओं में सब हैं पड़े, बेहोशी में मेरे प्रवचन सुनते नाहिं।
साहिब जी : प्रति दिन प्रवचन देत हूं कोई सुने नाहिं।।

1271 साध जन चलो अग़म पथ भारी, अब की बार 'वे नाम' सम्भारी।
हर बार सब कुछ छोड़ चले, मनुष्य जन्म फिर कब प्यारी।
साहिब जी : मनुष्य जन्म मिले ना बारम्बारी।।

1272 अवसर खोना दुख का कारण प्यारो, है बड़ा भाग्य मनुष्य होना।
भारत में मनुष्य जन्म पाना, बड़े भाग से ऐसा होना।
साहिब जी : भारत में मनुष्य जन्म दुर्लभ है होना।।

1273 आज का अवसर मिला प्यारो, मत खोना पाना 'वे नाम' दान।
सार सब्द में सतपुरूष आप प्यारो, 'वे नाम' द्वार पर आया देने दान।
साहिब जी : जग सोया पड़ा लेवे ना ''वे नाम'' सब्द दान।।

1274 असली के संग नकली चलता, विदेशों में असली नकली दोनों नाहिं।
कीचड़ में ही कमल खिलता प्यारो, साफ़ जल में कमल खिलता नाहिं।
साहिब जी : दोनों करते अपना अपना काम रे।।

1275 वहां नानक के गीत कबीर संदेसे नाहिं, मीरां के घुंघरू 'वे नाम' भजन नाहीं रे।
गंग की डुबकी नाहिं, कबीर नानक 'वे नाम' में डूबना होता नाहिं रे।
साहिब जी : 'वे नाम' का पूर्ण ज्ञान कहां रे।।

1276 भारत में संत साधक दोनों प्यारो, संतों की भूमि हमरा देस रे।
परम जीवन पाठ सीख लो, पूर्ण मुक्ति का पा लो भेद रे।
साहिब जी : पूर्ण संत सू पा लो मुक्ति भेद रे।।

1277 हंसा आया सतगुरू चरणन में, मुक्ति भरी जहां वाणी।
मुक्ति संतन की दासी प्यारो, संत चरणों में मुक्ति केवल पानी।
साहिब जी : पूर्ण मुक्ति उदेष्य नाहिं फिर भी है ये पानी।।

1278 'वे नाम' सतगुरू सुरत कमल में, मुक्ति के पूर्ण द्वार रे।
तां से डारी लागे, पहुंचे मानसरोवर द्वार रे।
साहिब जी : मन मा पूर्णतः छूटे साथ रे।।

1279 मनुष्य मन माया का गुलाम प्यारो, अकेला होने से भयभीत रे।
सप्प्रदायः भीड़ की चाह उसे, इसी आधार से भय रे।
साहिब जी : खुद की पहचान से भय रे।।

1280 प्रेम भक्ति को कैसे पायें, ता के लिये अभय होना आवश्यक रे।
धर्म सम्प्रदायः समाज से नाहिं प्यारो, होता कोई पार रे।
साहिब जी : अकेले हो निज की करो पहचान रे।।

1281 सतगुरू सुरति चेतन अभय बनाती, जग से कराती पार रे।
सतगुरू चेतन सब्द को पा लो, चेतन अकेला हो तो पार रे।
साहिब जी : निज की पहचान हो तो पार रे।।

1282 ''वे नाम'' सब्द से प्रकाशित सुरति, तन मंदिर झूठा ले जान।
मन सत्य की नाव नहीं, तन से पार होना काम महान जान।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' के खेल महान।।

1283 ''वे नाम'' सब्द सतगुरू प्यारो, सुरति सब्द का चेला रे।
सतगुरू में वासा साहिबन का, पल में पार करता चेला रे।
साहिब जी : जब मिटता सच्चा चेला रे।।

1284 ''वे नाम'' सब्द जहाज है, जो मिटे चढ़े सो पार।
श्रद्धा विश्वास जब जागे, फिर कैसे ना हो पार।
साहिब जी : सतगुरू पार उतारनहार।।

1285 सतगुरू साहिब ऐको प्यारो, कामिल मुर्शिद हो जाये।
सब्द सतपुरूष रूप प्यारो, सुरति में आन समाये।
साहिब जी : सब्द सतगुरू सब्द ही चेला कहाये।।

1286 सब्द सुरति से निरंतर सिमरन, बंसुरी सब्द बना ले रे।
सुरति चेतन धारा बने, तीन लोक से पार कर दे रे।
साहिब जी : वासनाओं से पार निज को जान रे।।

1287 स्वांस स्वांस में ताड़ि लागी, ईक पल भी ना टूटे रे।
यही सहज समाधि प्यारो, इसी में रहना सीखो रे।
साहिब जी : इसी में रहना सीखो रे।।

1288 नाम खुमारी सब्द की, स्वांस स्वांस संग साथ।
जो पा लो पूर्ण सतगुरू, मिले हर पल सच्चा साथ।
साहिब जी : सतगुरू ही ईक सांचा साथ।।

1289 सब्द साहिबन से सुरति लागी, मलीन वासना त्यागी जाये।
स्वांस स्वांस डौर ना टूटे, ऐसी तारी लागी जाये।
साहिब जी : तो ही नर जागा कहलाये।।

1290 असली सतगुरू भीतर बैठा, सतगुरू दे बतलाये।
ऐसा भेद पूर्ण सतगुरू देता, पल में पार लगाये।
साहिब जी : साहिबन पल में अंग संग पायें।।

1291 हर युग में जगावनहारे आते, नूतन खेल रचाते।
श्रद्धा विश्वास लिये जो खड़े मिलें, उन्हें संग निजघर ले जाते।
साहिब जी : बस वे ही जागे जीव कहलाते।।

1292 निजघर से हो आया नाविक, जम्मू प्रांत किया ठिकाना है।
तैयार खड़े जो निजघर जाने, संग उन्हें लिवाने आया है।
साहिब जी : साध संग ले जाने आया है।।

1293 स्वांस में सब्द डालो प्यारो, सुरति रहे संग साथ।
स्वांस भीतर सुरति साथ, स्वांस बाहर सुरति संग साथ।
साहिब जी : सब्द सुरति स्वांस ईक साथ।।

1294 सुरति स्वांस संग चले तेरी प्यारो, सब्द का ना टूटे साथ।
सुरति नाव का काम करे, स्वांसा सब्द की डौरी संग साथ।
साहिब जी : मन मान का छूटे साथ।।

1295 सिमरन स्थिर धारा बनी प्यारो, चित्त सुरति का शांत होना ले जान।
विचारों का संग छूटा प्यारो, सुरति निरति ईक साथ ले जान।
साहिब जी : आत्म हंसा रूप महान।।

1296 विचारों से लेन ना देन प्यारो, ये सब मन माया का खेल ले जान।
सुरति चेतन ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, मन भाव की तार टूटी ले जान।
साहिब जी : ये काम सतगुरू चेतन सुरति करे महान।।

1297 माया माया सब कहें, चीन्हें संत प्यारा कोये।
जो जन 'वे नाम' सब्द बिन, माया में रत्ता होये।
साहिब जी : मन छूटे सब्द संग होये।।

1298 सोया ही नर रह गया, स्वांसा सब्द बिन खाली जात।
'वे नाम' जगावे सब्द दात, बिन नामे काल के हाथ।
साहिब जी : बिन नामे काल संग साथ।।

1299 मन के संकल्प विकल्प छुड़ावे प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की दात।
चेतन सुरति सतगुरू 'वे नाम' सूं पाओ, पल में छूटे झूठी दात।
साहिब जी : पल में पार करावे ''वे नाम'' दात।।

1300 सुख का साग़र 'वे नाम' सतगुरू सूं पायो, अमि महां रस सार सब्द में पाया।
सुरति में महां साग़र लहराता, सुरत कमल में जा समाया।
साहिब जी : तन अपना मृतक हुआ पाया।।

1301 सतगुरू कृपा से अमृत फल पायो, खाते ही पुकार पे पुकार सुनी।
तूं ही मेरा अंश प्यारा, पुकार पे पुकार सुनी।
साहिब जी : सतगुरू की गुहार सुनी।।

1302 नानक कर दो मिटा दो प्यारो, जगा दो आपकी महिमां महान।
बड़ी अभिप्सा से कहत हैं, साध बन आया जग जान।
साहिब जी : करि कृपा महान।।

1303 साहिब सब्द से राख़ किया, उसी से जीवित किया जान।
सर पर हाथ सुरति कानों में, राख़ बन हुआ जीवित महान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां ले जान।।

1304 पहले मन शांत करना जान प्यारे, साहिबन सुरति सब्द किया काम रे।
भीतर विचारों का ताना टूटा, सब्द से सुरति चेतन जान रे।
साहिब जी : प्रलयः की स्थिति से साधक जागा जान रे।।

1305 'वे नाम' संगत सतगुरू, हरे कौटि कौटि अपराध।
संगत बुरी सोये की, करावे और अपराध।
साहिब जी : सुरति चेतन सूं छूटे अपराध।।

क कबीरा संगत साध की, ज्युं गंधी की बास।
जो कुछ गंधी दे नाहिं, तो भी बास सुबास।
साहिब जी : सुरति को चेतन सुरति की बास।।

क साधु ऐसा चाहिये, जैसे सूप सुभाये।
सार सार को गाहि रहे, थोथा दे उड़ाये।
साहिब जी : कंकर आदि ले उड़ाये।।

1306 सतगुरू अवगुण छोड़ कर, गुणों की चून उपझावे ज्ञान।
मधु के समान स्वस्थ करे, परम तत्व का दे ज्ञान।
साहिब जी : समर्पण ही करावे पूर्ण पहचान।।

1307 सतगुरू कूट भाषी भावे नाहिं, ये भी हिंसा का अंग तूं जान।
सुरति धारा से बोलता, सच्चे भेद की कराता पहचान।
साहिब जी : तरवर मधु की कर पहचान।।

1308 तेरे अंदर सांच प्रेम भक्ति की धारा जो, सुरति को चेतन सुरति ले बना।
जाननहारा जानी ले, हर एक को अपना ले बना।
साहिब जी : फूल सा निज को ले बना।।

1309 'वे नाम' दृष्टि् से प्यारे, अंदर के शत्रु देख।
विकार पल पल दिख रहे, सोया नर देख देख भी ना सके देख।
साहिब जी : पूर्ण सुरक्षा को संग देख।।

1310 ''वे नाम'' सब्द आत्मिक सुरति जगाता प्यारो, हर पल सुरक्षा संग जान।
आत्म निष्चित हो गई, हर पल अनुभव होता ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

1311 सतगुरू सब्द पल पल सुरक्षा दे रहा, निज को जागा हर पल ले जान।
मन माया पर नियंत्रण पा लिया, सुरति महां चेतन ले जान।
साहिब जी : सब्द सूं महां सुरति ले जान।।

क बांसुरी सुख ना रैनी सुख, ना सुपने माहिं।
कबीर बिछड़ा साहिबन सूं, ना सुख धूप ना छाहिं।
साहिब जी : ना सुख धूप ना छाहिं।।

क चकवी बिछड़ी रैन की, आन मिले प्रभात।
अब के बिछड़े फिर ना मिले, दूर पड़े है जात।
साहिब जी : आत्म तो जन्म मरन से रहत।।

1312 चकवी बिछड़ी रैन की, आई मिली प्रभाती।
जो जन बिछड़े साहिबन सूं, दिन मिलें ना राती।
साहिब जी : मृत्यु बिछोड़े निजघर कभी ना जाती।।

1313 अदभुत ज्योति परमपुरूष प्यारो, 'वे नाम' दास को दर्स करायो।
चेतना भरी शांत ज्योति, महां चेतन सुरति दरसायो।
साहिब जी : महां चेतन सुरति रूप दरसायो।।

क पिण्ड ब्रह्मण्ड और वेद क्तेव, नाहिं पंच तत्व से पार।
सत्यलोक जहां पुरूष विदेहि, वे ही साहिब करतार।
साहिब जी : अमरपुर देस हमार।।

क अक्हा नाम कैसे कोई जानी, लिखी नहीं जाये पढ़ो नहीं वाणी।
कलयुग साधु कहे हम जाना, झूठ सब्द मुख करहि ब्ख़ानी।
साहिब जी : झूठ सब्द मुख करहि ब्ख़ानी।।

1314 जो कुछ है सो सुरति सब्द प्यारो, ता में रहो समाई।
अंधी सुरति नाम बिन प्यारो, सुरति सूं काम बन जाई।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं मोक्ष पा जाई।।

1315 मन तरंग में जगत उलझाना, सुश्मिना का जान सब खेला रे।
सुश्मिना तन में स्विच प्यारो, आन होने से होता काम रे।
साहिब जी : एक हज़ार गुणा चेतन जान रे।।

1316 स्वांसा नाभि में पहुंच कर प्यारो, दस पवनों में बदलती जान रे।
अपान उदान प्राण समान प्यारो, सर्वतनव्यम नाग धनण्जय किरकिल जान रे।
साहिब जी : देवदत जम्हाई भी जान रे।।

क सुश्मिना मध्य बसे निरंझन, मूंदा दसवां द्वारा रे।
उसके उपर मकर तार है, चढ़ो सम्हर सम्हारा रे।
साहिब जी : उपर चढ़ो संभल संभल के रे।।

1317 अपान गुदा स्थान पर प्यारो, मल को बाहर करना काम जान रे।
उदान हमारे कलेजे में प्यारो, अपान को उपर आने से रोकती जान रे।
साहिब जी : उदान वायु का काम जान रे।।

1318 जन्म अकारथ ''वे नाम'' सब्द बिन, मिटे ना मन मान की तान।
पल पल सुमिरो सुरति स्वांसा सूं प्यारो, छोड़ो मन मान की झूठी तान।
साहिब जी : आओ चलें निजधाम।।

1319 सभी सहारे छूटें तो ही प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' का सहारा मिलता जान।
सतगुरू बेसहारों का सहारा प्यारो, उसके बिन कोई और सहारा मत जान।
साहिब जी : सतगुरू बिन कोई और सहारा मत जान।।

1320 सतगुरू पाना हो तो गुरूओं से बचें, और प्रेम भक्ति की राह पर चलें रे।
वे ही तो देता चेतन सुरति धारा प्यारो, उसी से होता उस पार रे।
साहिब जी : महां चेतन सुरति सूं उस पार रे।।

1321 जे साहिब को पाना प्यारो, गुरूओं से बचना काम ले जान।
भावों से शुन्य सुरति चेतन महान, ''वे नाम'' सब्द से उस पार ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द करावे भवसाग़र पार ले जान।।

1322 सुरति को चेतन सुरति से पूर्ण होना प्यारो, जो भरे वो खाली ले जान।
जो खाली विचारों से, उसे ही उस पार ले जान।
साहिब जी : उसे ही उस पार ले जान।।

1323 ना जप से ना तप से प्यारो, सुरति चेतन होने से बनती बात रे।
वो तो तेरे अंदर रहता प्यारो, बस जागने की बात रे।
साहिब जी : सुश्मिना सम करने से बनती बात रे।।

1324 खोया हुआ खोजा जाता प्यारो, जो दूर होता दौड़ कर पकड़ा जाता प्यारो।
ना दूर वह ना खोया वह, वह तो पास से भी पास रे।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं सुरति चेतन करने की बात रे।।

1325 कर्ज़दार राज़ कामुक स्त्री भिक्षुक प्यारो, धमकी प्रार्थना सुनते नहीं चे चार।
विनती से भी झुकते नहीं प्यारो, धमकाने डराने में भी नहीं आते ये चार।
साहिब जी : मन मान में रहते ये सदा ये चार।।

1326 साधु अनुचित वचन नहीं मानता, राजा हो या रंक रे।
अपने सतगुरू की सुरति में वास करे, चेतन सुरति में विश्राम रे।
साहिब जी : चेतन सुरति में पाओ विश्राम रे।।

1327 साधु पंडित में चार बातों का भेद, काम क्रौध मद्य लोभ जान रे।
पंडित चारों के संग में रहता, साध चारों से लेन ना देन रे।
साहिब जी : मूर्ख पंडित दोनों ईक समान रे।।

क दसों दिसा से क्रौध की, उठी अपरबल अग्नि।
सीतल संगति साध की, तहां उभारिये भागि।
साहिब जी : साध संगत ही उभारे भाग।।

1328 समय पर उचित कार्य करना प्यारो, बुद्धिमानी ले जान।
अच्छा बुरा समय प्यारो, दोनों को ईक सम ले जान।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा ईक करना ले जान।।

1329 धीरज धर्म विवेक सहास प्यारो, विपत्ति के संगी साथी ले जान।
सत्य प्रेम ही सच्चे मित्र प्यारो, धैर्य रखना काम महान।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति में धरो ध्यान।।

1330 सतगुरू पर भरौसा पल पल करो, मन मान का टूटे बाण।
ईक भरौसा ईक आस विश्वास प्यारो, तोड़े काल कमान।
साहिब जी : विश्वास ही तोड़े काल कमान।।

1331 महान काम के संग साथ चलिये प्यारो, संयम बतावे थाह और राह।
थाह पाये बिन प्रवेशा नाहिं, सतगुरू सूं पा ले भेद थाह और राह।
साहिब जी : सतगुरू सूं पाओ भेद थाह और राह।।

1332 होनी को भी टाला है जात, सतगुरू चेतन सुरति सूं पा ले राह।
विपत्ति भी टलती प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति ही सच्ची राह।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति सूं पाओ राह।।

1333 मैत्री वैद और सतगुरू सूं, निर्भय हो सत्य कहिये ईक साथ।
जो ये बात माने नाहिं, उसका मत करो तुम साथ।
साहिब जी : उस संग कैसा साथ।।

1334 सतगुरू जैसा वैद ना कोई, पड़ो सुनो वेद पुराणा।
'वे नाम' सतगुरू अमरलोक हो आये, अमरलोक ठिकाना।
साहिब जी : सतगुरू संग अमरलोक ठिकाना।।

1335 प्रेम मन का मंतर नहीं प्यारो, सुरति सूं उपझी भावना ले जान।
प्रेमी सर्वस्व प्रेमी पर अर्पण करे, जैसे मृग कस्तूरी पर ले जान।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम महिमां महान।।

1336 'वे नाम' की प्रीति साहिबन सूं लागी, सतगुरू चरणन सुरति रे।
दीपक से प्रीति पतंगा की, वार फेर संग रे।
साहिब जी : सतगुरू की करो संगत रे।।

1337 मछली ने जल से प्रीति करी, ईक पल ना छूटे संग।
साधक को प्रीति सतगुरू सूं, सुरति का चेतन सुरति से ना टूटे संग।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति से ना टूटे संग।।

1338 दर्शन प्रीति का फल प्यारो, नाता अति पक्का ले जान।
अब भक्ति का बीज अंकुर हुआ, दर्शन पल पल होत महान।
साहिब जी : विहंगम चाल पाना ले जान।।

1339 भक्ति मछली जल से बाहर समान प्यारो, मिले दर्शन पल पल महान।
मछली समान तड़पती सुरति, चित्त भी देता साथ ले जान।
साहिब जी : भक्ति की छलांग महान।।

1340 मन पर अंकुश चेतन सुरति का प्यारो, भक्ति दर्शन दौ को ईक करते जान।
प्रेमी गया प्रेसी गई, भक्ति आत्म का परमात्म से मिलन ले जान।
साहिब जी : भक्ति का फल मिलाप ले जान।।

1341 खुल गया बंध बन्द सुरति का, जब चेतन सुरति का पाया साथ।
सुरति सैल करे सुरत कमल में, बंकनाल से सुरति ईक साथ।
साहिब जी : बंकनाल से सुरति ईक साथ।।

1342 पाया दरस रूप अरूप का, जिसकी महिमां का आर ना पार।
'वे नाम' सुरति चेतन जब, उतरे भवजल पार।
साहिब जी : 'वे नाम' सुरति उतारे भवलज पार।।

1343 मुल्ला काजी पंडित भेद ना जानें, कोई प्यारा जाने भेद।
सत्यप्रेम की ज्योत जगा ले, मिले सच्ची भक्ति का भेद।
साहिब जी : मिले सच्ची भक्ति का भेद।।

1344 सार नाम ध्याया नहीं प्यारो, जन्म गंवाया अनमोल।
सार नाम सूं जोड़ी प्रीति नहीं, ना जाना सुरति का मोल।
साहिब जी : जानो चेतन सुरति का मोल।।

1345 दुख सुख में रहते जीवन काटा, चौरासी का ना छूटा साथ।
नाम ना पाया ना जाना, पशुआ वृत्ति संग साथ।।
साहिब जी : जग जीवों में पशुआ वृत्ति संग साथ।।

1346 साहिब मेरे साहिबन प्यारे, मैं हंसा उनकी दासी रे।
जो दिया सो पा लिया, मिला ज्ञान अविनासी रे।
साहिब जी : पा लो सच्चा ज्ञान अविनासी रे।।

1347 तीन लोक ईक्कीस भवन, करें सहज प्रकासा।
जिन पाया संग धनी का, छे तन पार हुआ दासा।
साहिब जी : साहिबन संग छे तन पार 'वे नाम' दासा।।

क सतगुरू शरणागत छोड़ी के, करे भरौसा और।
सुख सम्पत्ति को कह चली, नहीं नर्क में ठौर।
साहिब जी : बिन सतगुरू मिले ना ठौर।।

1348 सुरत कमल की सीढ़ी सांकरी, पीछे जान चकनाचूर।
जे सतगुरू में सुरति रम गई, ले चलें संग भव पार।
साहिब जी : सतगुरू संग निजघर द्वार।।

1349 तीन लोक अटका रहा, प्रेम की डौर जे मन साथ।
साधु साहिबन जाने बिना, पड़ा काल के हाथ।
साहिब जी : बिन सतगुरू जग पड़ा काल के हाथ।।

1350 या मन चंचल या मन भाव, या मन डोबनहार।
मन मान में रहते प्यारो, सतगुरू सूं जोड़ी ना तार।
साहिब जी : जीते जी जोड़ो सतगुरू सूं तार।।

1351 विरह वैराग़ तन डसे, मंत्र ना माने एक।
नाम वियोगी मरि मरि जाये, सतगुरू की माने ना एक।
साहिब जी : जग ना माने सतगुरू की एक।।

1352 जे तूं सांचा सतगुरू पाया, सब्द सूं जोड़ी तार।
अंदर झाडू देई के, कूड़े से मत कर प्यार।
साहिब जी : मन माया कूड़े से ना कर प्यार।।

1353 सागर की सतह पर लहरें प्यारो, पर गहराई में ऐसा मत जान।
साग़र की सतह ही साग़र नाहिं, नीचे सब शांत ले जान।
साहिब जी : सतगुरू महां साग़र सम शांत ले जान।।

1354 मत्तवादि जानें नाहिं, तत्व वादि की बात।
मन तरंग में दोनों फसें, ना जाने सुरति की बात।
साहिब जी : सतगुरू बिन बने ना बात।।

1355 दुनियां भ्रम भूली बौराई, सतगुरू सूं दात ना पाई।
आत्म राम सकल घट भीतर, ताकि सुद्धि ना पाई।
साहिब जी : सतगुरू सुरति सूं जीव सुद्धि पाई।।

1356 मथुरा काशी जाये द्वारिका, अठसठ तीर्थ नहाये।
सतगुरू बिन पार नहीं कोई, फिर फिर गोता खाये।
साहिब जी : सतगुरू सब्द पार लगाये।।

1357 ''वे नाम'' सब्द सूं करि ना प्रीति, ये तो केवल पशुओं की रीती।
'वे नाम' से नाम पा लिया तो, नर से हंसा की रीती।
साहिब जी : ता से जागे सतपुरूष सूं प्रीति।।

1358 गुरू से नाम पा लिया तो, रटने का किया काम।
सब्द पाया जाना नाहिं, राम राम रटने से बने ना काम।
साहिब जी : जानो ''वे नाम'' सब्द पाना सच्चा काम।।

1359 बिन जाने काम बने नाहिं, जन्म मरन का ना छूटे साथ।
स्वांस स्वांस में नाम जब, पूर्ण मोक्ष ही संग साथ।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द स्वांस स्वांस संग साथ।।

1360 बिन गये प्रेम भक्ति कैसे जागे, आने का क्या हुआ लाभ।
बेहोशी में सांसों का साथ रे, तन मन पाने का क्या लाभ।
साहिब जी : जग में आने का क्या लाभ।।

1361 संतों के लिखे पद्य् गीत मधुर, तुम आये उन्हें गाने को।
ये सब व्यर्थ जान प्यारे, खोये जन्म अनमोल को।
साहिब जी : पाओ ''वे नाम'' सब्द बेमोल को।।

1362 आत्म भेद बिन सब झूठा प्यारो, परा भक्ति का भेद ले जान।
सहज बनो बृहंगा मत्त पाओ, ''वे नाम'' दात सूं बनो महान।
साहिब जी : बिन 'वे नाम' सतगुरू ईक भी पार मत जान।।

1363 दुख सुख में ''वे नाम'' सब्द सुरति में, हर पल सुरति सब्द में रहयो समाई।
उठत बैठत तार ना टूटे, सुरति सब्द में ईक धार बन जाई।
साहिब जी : हंसा बन निजघर जाई।।

1364 हर कार्य सतगुरू कृपा से प्यारो, आनंद ही आनंद देता ले जान।
प्रेम सुरति सूं सुनना बोलना प्यारो, अपने में सतगुरू वासा ले जान।
साहिब जी : तीन से ईक होना ले जान।।

1365 सुन्न में वासा हो या महांसुन्न में, सत्यपुरूष दात बिन नाहिं उस पार रे।
''वे नाम'' सब्द पंच शब्द सूं पार प्यारो, जो पावे निजघर जावे रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही पार करावे रे।।

1366 सुन्न महांसुन्न से भिन्न पसारा, अमर लोक सब हंसों का देस प्यारा।
प्रेम भक्ति सत्त आनंद से भरी प्यारो, बिन ''वे नाम'' सब्द कोई नहीं पारा।
साहिब जी : सब जीवों का हंसा रूप न्यारा।।

1367 दिल का हुजरा साफ होता प्यारो, जब चेतन सुरति धार संग साथ रे।
ध्यान गैरों का हटे प्यारो, सो ''वे नाम' सब्द की दात रे।
साहिब जी : सब होता पूर्ण सतगुरू सुरति दात सूं रे।।

1368 सहज योग ही विहंगम चाल देत प्यारो, जब सुरत कमल सुरति वासा रे।
सब्द सुरति निरति का संग प्यारो, ले चले साहिबन दरबार रे।
साहिब जी : परमहंसा देस उस पार रे।।

1369 अमृतवाणी साहिबन की प्यारो, सो सुनी परमगति दास की रे।
मन बुद्धि चित का संग गयो, दोनों की सुरति हुई ईक धार रे।
साहिब जी : दोनों की सुरति अब हुई ईक धार रे।।

1370 जहां तक चित्त बुद्धि विस्तार प्यारो, तहां तक माया ले जान रे।
बुद्धि पार ध्यान प्यारो, तुरिया अवस्था पाई ले जान रे।
साहिब जी : भक्ति की पहली अवस्था जान रे।।

1371 अमृतवाणी सुरति धार में प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति जान रे।
अमृतवाणी सतगुरू दर्शन, पहला कदम सहज कर्ता ले जान रे।
साहिब जी : उत्तेजना शून्य होती ले जान रे।।

1372 जो निस दिन सुरति से बजे, साहिबन रूप उसे जान लो।
सुमिरन ध्यान एकाग्र करे प्यारो, मन मान का संग छूटा जान लो।
साहिब जी : सुरति की महिमां महान जान लो।।

1373 जल तीर सारे तीर्थ अनंत, महांसमुंद भव साग़र में जा समाते।
गंगा यमुना सरस्वति गौदावरी नर्मदा, अंततः समुंद में जा समाते।
साहिब जी : मन भक्तियां निराकार समुंद में जा समाती।।

1374 गंगा यमुना सरस्वति, सबै तीर्थ बसें जल तीर।
सारा जग दुख साग़र डूबा, सतगुरू सब्द ही हरे पीर।
साहिब जी : बिन सतगुरू कोई ना हरे पीड़।।

1375 मन हंसे मन रोवे प्यारो, मन के खेल महान रे।
सुरति प्राण की वश किया प्यारो, ''वे नाम'' सब्द छुड़ावे मन मान रे।
साहिब जी : सच्चा साधक दुनियां से जानो पार रे।।

1376 एक बार साहिबन जो दर्शन पाता, विहंगम चाल पा निजघर को जाता।
परम हंसों से मेल है होता, जग में आ जीवों को जगाता।
साहिब जी : जग में साहिबन महिमां भेद दे जाता।।

1377 सतगुरू कृपा बरसाते प्यारो, काम क्रौध तृष्णा संग छूटा जान रे।
लोभ मोह मान अपमान प्यारो, यम का टूटे मान रे।
साहिब जी : साधक बने सुरतिवान रे।।

1378 सार नाम सुरत नाम सत्यपुरूष से पाया, क्षर अक्षर से न्यारा रे।
सत्यपुरूष सच्चा रूप बनाया, अब किया मन माया से पारा रे।
साहिब जी : सतगुरू साहिबन रूप प्यारा रे।।

1379 सुरत सब्द निःअक्षर दात बिन प्यारो, तीन लोक से पार किसे मत जानो रे।
बंक नाल में जा कर सुनते प्यारो, कल में ही वासा जानो रे।
साहिब जी : निअक्षर दात तीन लोक से पार रे।।

1380 पल्टु साहिब जी यूं कहते प्यारो, उल्टा कुआं गगन में तिस में झरे चिराग़ रे।
निकसे ईक आवाज़ ज्योति माहिं, ज्ञान समाधि सुने और कोई सुनवे नाहिं रे।
साहिब जी : जो कोई सुनवे ताके पूर्ण भाग रे।।

1381 रात बीती दिन उग आया प्यारो, सोया बालक रो रो कर पुकार करे रे।
सुन्न पुकार माता भागी भागी आई, उठा बालक लोरी देती रे।
साहिब जी : जिस का बीज वोहि लोरी देत रे।।

1382 जग में बीज निराशा का प्यारो, अंत क्या कबु किसी ने पाया रे।
दिवस का अंत हर रोज़ प्यारो, डगर का अंत किस ने पाया रे।
साहिब जी : जन्म जन्म से यही खेला चला आया रे।।

1383 डगर का अंत आता है प्यारो, जब मन मान का संग खो जाता रे।
मन को डगर मत जानो प्यारो, जब मन खो जाता डगर का संग पाता रे।
साहिब जी : सतगुरू सूं चेतन सुरति पा जाता रे।।

1384 सुरति की डगर से जिनसे मिलते प्यारो, वे ही चंद सच्चे यात्री ले जान रे।
मन मान में जो मिलते प्यारो, भविष्य कल्पनाऐं अतीत स्मृतियों में जान रें।
साहिब जी : चंचल मन का काम कभी ना रूकता जान रे।।

1385 संसार से कुछ अर्थ ना प्यारो, चलें तो भटकें जान रे।
अर्थ तो सुरति चेतन से प्यारो, जो भीतर से भीतर चलती जान रे।
साहिब जी : ये संसार बस धोखा ही जान रे।।

1386 कांचे कुम्भ ना ठहरे पानी, मत कर हेसा रे।
पक्का कुम्भ ही जब मिले, पानी संग पा ले रे।
साहिब जी : चेतन सुरति संग कर लो रे।।

1387 तन धर सुखिया कोई ना प्यारो, जो देखा सो दुखिया रे।
जोगी देखा जंगम देखा, तप्सी का दुख भारी रे।
साहिब जी : मन मान का दुख अति भारी रे।।

1388 साहिब सच्चा शूरमा प्यारो, ''वे नाम'' सब्द का मारा बाण।
मन को छेद दिया प्यारो, सुरति निरति की जोड़ी तान।
साहिब जी : सत्यपुरूष का बाण 'वे नाम' का दान।।

1389 भौग से पार योग दिखावे प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू सूं ले लो बाण।
सतगुरू चार लोक का प्यारो, सच्चा शूरमा ले जान रे।
सब्द दात को पावे प्यारो, ता से मिलता पूर्ण निर्वाण रे।
साहिब जी : जो पावे निजघर जावे रे।।

न ज्युं सपना वेखना, जग रचना तिम जान।
इस में कुछ सांचा नाहिं, नानक सांची मान।
साहिब जी : निज को जान पहचान।।

1390 परमपुरूष जोत का भेद मिला, ध्रुवों से लेन ना देन रे।
दो आंखों से दिखे नहीं, अनंत आंखों से उन्हें देख रे।
साहिब जी : चेतन सुरति में आंखें अनेक रे।।

1391 मन मान मिटने से प्यारो, संसार छूटा जान रे।
संसार पाप का द्वार प्यारो, जे ना पाई ''वे नाम'' सब्द की दात रे।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू सूं बनें सब काम रे।।

1392 जीवन में उपद्रव हिंसा वैमनस्व प्यारो, करूणा खो गई जान रे।
करूणा तुम्हारे दूसरे की प्यारो, पूर्ण हित में जान रे।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू करें सब काम रे।।

1393 जो तुम जग में बोवोगे प्यारो, वैसा ही तुम पाओगे।
मौत के बीज बोने से प्यारो, मौत को ही तो पाओगे।
साहिब जी : सुरति चेतन से महांचेतन सुरति में समाओगे।।

1394 मन चलता फिरता रहता प्यारो, दिवस दिवस का अंत होता रहता जान।
डगर का अंत ''वे नाम'' सब्द दात से प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू का जब मिलता साथ रे।
साहिब जी : महांचेतन सुरति करे सब काम रे।।

1395 कबीर जी मीरां जी रविदास जी को मिला प्यारा, वो ही जानो 'वे नाम' दासा रे।
बाहर के पट बंद कर प्यारे, अंदर के पट खोल दे रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू पूर्ण पाया मत जान रे।।

1396 ये संसार मृत्यु का देसा, गुब्बारा फटने के समान जान रे।
पूरा जीवन संग पृथ्वी के, मिटने में तीस पल का समय जान रे।
साहिब जी : निज की कर ले तूं पहचान रे।।

1397 पाखंडी जग में आदर पाता प्यारो, सांचा खाता लात दौ चार रे।
अज्ञानी परम विवेकी कहावे प्यारो, पूर्ण संत को कहते मूढ़ गंवार रे।
साहिब जी : ये मन माया खेल बस दिन चार रे।।

18 हंसलोक की महिमां

1398 वह घर जहां से सभी हंसा आये प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू बताने आया रे।
आत्म ज्ञान को पा लो प्यारो, पूर्ण भेद मिली जाये रे।
साहिब जी : बाहर मत खोजन जाओ रे।

1399 सुरति मस्तानी सब्द पहचाने, सतगुरू संग निजघर जावे रे।
कौटिन ज्ञान से जान ना पावे, सब्द ''वे नाम'' पकड़ घर जावे रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द घर ले जावे रे।।

1400 हंसों के कल्याण करने को प्यारो, भेजा मुझे सतपुरूष प्यारे ने।
पल पल में हंसों को सींचो, कैसे करूं उस पारा रे।
साहिब जी : कैसे ले चलुं उस पारा रे।।

1401 जो जन कामी और कामी जनों से प्यारो, रहे हर पल दूर रे।
प्रेम भक्ति से जो जन चले, उस से साहिब नहीं दूर रे।
साहिब जी : साध संग साहिबन हुजूर रे।।

1402 जहां जाये परम हंसा कहलाये, सत्यपुरूष का देस प्यारा रे।
अमरपुर सच्चा देस हंसों का, जहां बहती महां चेतन सुरति की धारा रे।
साहिब जी : अमरलोक सच्चा देस हमारा रे।।

1403 आंतरिक सैल गगन हर एक में, सतगुरू सब्द से बने बात।
सब की गठरी लाल है, सुरति डौर से होती आसमानी चाल की बात।
साहिब जी : मीन पपील चाल की बात।।

1404 तीन लोक से भिन्न पसारा, अमरलोक हंसों का सच्चा देस।
हर कोई रूहानी यात्रा कर सके, भेद भी मिलता इसी देस।
साहिब जी : सतगुरू सूं मिलता भेद इस देस।।

1405 खेल ब्रह्मण्ड का छेः तन में, अंदर की चादर तन का खेल महान।
उन्हीं से सैल आसमानी, आत्म को चेतन करना जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात करे काम महान।।

1406 गिनती बाहिरा सैल करि प्यारो, लोक लुकांतरों को देखा कई बार रे।
निजघर की भी सैल करि प्यारो, औंकार लोकों की सैल कई बार रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही बस करावे भव पार रे।।

'वे नाम' कहें :

साहिब मिलन का सफ़र

यह सफ़र नहीं है आसान – सहज मार्ग से जाना है ।
लां हथां ये सागर है – इसमें डूब के जाना है ।।
हृद्य को सत्त करके – मन को सत्य बनाना है ।
फ़िर सार सब्द की सुरति से – साहिब ही को पाना है ।।
साहिब का अमरलौक अति है प्यारा – सुरति से ही पाना है ।
बिन पग़ से सफ़र है करना – बिन अखियां दिस्सी जाना है ।।
बिन पवन के है यह राह – बिन सांसा वहां जाना है ।
बिन हथां सब कुछ है करना – बिन कन्ना सुनी जाना है ।।
यह अमरलौक है प्यारा – वही हंसों का ढेरा है ।
वहां प्यार से सब हैं रहते – ना कोई वहां बखेड़ा है ।।
बिन बादल जहां वर्षा होती – बिन सूरज उजियाला है ।
बिन डर के वहां – सभी जन आनंदित हैं रहते ।।
जो परमपुरूष कभी देते हैं – वही सब प्यार से खाते हैं ।
जहां जाना है मिल के जाते – संतों से प्रेम बड़ाते हैं ।।
प्रेम भाव से सब कुछ बोलें – सब समझ में आता है ।
मैने भी यह सब है जाना – मूल सुरति से आता है ।।
साहिब अति प्यार हैं करते – मैने सब जाना है ।
कंई बार मुझे समझायो – अमृत की वर्षा है की ।।
मत कहना बुरा किसी को – जग में कोई बुरा नहीं ।
पांच दिन मेरे साहिब ने की – चर्चा जग विचार की ।।

—0—

'वे नाम' कहें :

मैं आया (वेनाम) सत्तलौक से, पाये सतनाम की दात।
जो कोई पावे सार नाम को, पहुंचे साहिबन घाट ।। साहिब जी

आत्म में परमात्म दरशयो, परमात्म में जाई ।
हंसा में अब आप दरशे, आप में आप समाई ।। साहिब जी

साहिब मिलयो आपा खोयो, मान अपमान खो जाई ।
कहे 'वे नाम' संग होयो, तां भक्ति हो पाई ।। साहिब जी

कौटिन जन्म का पंथ था, सतगुरू पल में दियो मुकाए ।
सार–नाम रस पान से, साहिबन सूं दियो मिलाए ।। साहिब जी

साधो अमरपुर हमार वास है, जग की करते सेव ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड के पार वह, जाने आने में कैसी देर ।। साहिब जी

जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, 'वे हूं' ही साहिबन जान।। साहिब जी

कहे 'वे नाम', पूरे से मिल पूरा पायो।
भेद ये सारा, साहिबन सूं मिल पायो।। साहिब जी

गुरू तीन लोक में ही राखे, सतगुरू चौथे लोक ले जाता।
चौथा लोक अमर लोक है, हंसों का सच्चा घर कहलाता।। साहिब जी

बार–बार साहिब जी देखे, सत्तगुरू रूप में दिखे अति प्यारे ।
बलिहारी जाऊँ सत्तगुरू पे, जिनमें रहते परमपुरूष प्यारे ।। साहिब जी

'वे नाम' जा के देख लिया, तीन लौक से आगे ।
सत्तलौक ही सत्तलौक है, तीन लौक के आगे ।। साहिब जी

'वे–नाम कहे' आदि–अंत का, सृजनहारा परमपुरूष प्यारा ।
वो ही शुरू वो ही मध्य, वो ही अंत उन्हीं से सब परिवारा।। साहिब जी

'वे नाम कहे' सब यत्न करूं, जग जीव ना छोड़ें माया द्वारा ।
चिंता करूं सब जीवों की, कैसे जगाऊं कैसे करूं भव पारा ।। साहिब जी

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी प्यारे, शरणागत को तारन हारे ।
खुद को सब जीवों में देखें, सभी जीव हैं साहिबन प्यारे ।। साहिब जी

आस लिए सब तारण की, साहिब महिमां सदा हूं गाता।
हर प्रयास करूं जग ना माने, तो भी प्रयत्नशील हूं रहता।
'वे नाम' कहो या 'गुलाम' कहो, 'गधा भाई' हूं कहलाता।। साहिब जी

चोथे राम (सतपुरूष जी)

प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना।।

सार नाम सूं बड़, तारे लाखों जीव।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले भव सागर तीर।
सतगुरू पास दात है आती, तारे तीन लोक सूं जीव।
आवागमन चक्र छूटे, पल में पावे पीव।।

सार नाम (सब्द) स्वाति बूंद सूं, जानों अति महान।
सीप स्वाति बूंद को, मोती करती।
सार नाम सूं सतपुरूष, करें आप समान।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम।।

साहिब (चौथे राम) व्यापक, हर वस्तु समाना।
बिन प्रेम, ना मिले प्रमाणा।
जब ही प्रेम, सुरति में जागे।
हर स्थान हर जीव में, इक वह ही लागे।।

सतगुरू सतनाम सत साहिब जी सत साहिब जी सत साहिब जी